

3

समामेलन से पूर्व के लाभ या हानि [PROFIT OR LOSS PRIOR TO INCORPORATION]

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप सक्षम होंगे—

- समामेलन से पूर्व के लाभों के लेखे करने में।
- समामेलन से पूर्व के लाभ या हानि की गणना करने की विभिन्न विधियों को सीखने में।
- विक्रेता के देनदारों ओर लेनदारों की अवधारणा को समझने में तथा उन्हें उपचारित करने में।

1. परिचय

(INTRODUCTION)

जब किसी कम्पनी के प्रवर्तक एक चालू व्यवसाय को उसके पंजीयन की तिथि से पूर्व अधिगृहीत करते हैं एवं उस व्यवसाय का स्वामित्व एवं प्रबन्धन करते हैं तो ऐसे व्यवसाय को कम्पनी के रूप में अस्तित्व में आने से पूर्व की अवधि तक के इस लाभ या हानि की राशि को समामेलन से पूर्व के लाभ या हानि के रूप में जाना जाता है। ऐसे लाभ या हानियाँ जो कम्पनी से सम्बन्धित होते हैं या इसके द्वारा देय होते हैं, पूँजीगत प्रवृत्ति के होते हैं। यह आवश्यक है कि इस प्रकार के लाभ या हानि को व्यावसायिक लाभ या हानि से पृथक् अभिव्यक्त किया जाये।

इस सम्बन्ध में सामान्य व्यवहार यह है कि—

- (i) यदि हानि हो तो,
 - (a) इसको लाभ-हानि डेबिट करके अपलिखित किया जा सकता है या इसे एक विशिष्ट खाते "समामेलन से पूर्व की हानि" में डेबिट करके चिट्ठे में सम्पत्ति के रूप में दिखाया जाता है।
 - (b) वैकल्पिक रूप में इसे ख्याति खाते में डेबिट किया जाता है।
- (ii) दूसरी ओर यदि, अधिग्रहण से पूर्व की अवधि में लाभ कमाया जाता है और इसे उस अवधि के लिए देय ब्याज से पूर्णतः शोषित (Absorbed) नहीं किया जाता है तो इसे

पूँजी संचय खाते या ख्याति खाते में क्रेडिट कर दिया जाता है, यदि कोई ख्याति सम्पत्ति के रूप में समायोजित की गई हो, तो यह लाभ कम्पनी के सदस्यों में लाभांश के रूप में वितरण योग्य उपलब्ध नहीं होगा।

2. समामेलन से पूर्व के लाभ या हानि की गणना करने की विधियाँ

(METHODS OF COMPUTING PROFIT OR LOSS PRIOR TO INCORPORATION)

ऐसे लाभ या हानि का निर्धारण करना बहुत सरल बात होगी यदि कम्पनी के अस्तित्व में आने से पूर्व लेख पुस्तकों को बन्द करना व व्यवसाय द्वारा रखे गये स्टॉक (रहतिये) को ज्ञात करना संभव हो। ऐसी स्थिति में पुस्तकों से संक्षिप्त (Abstracted) तलपट तैयार किया जायेगा और लाभ या हानि को ज्ञात किया जायेगा। तत्पश्चात् या तो पुस्तकें बन्द कर दी जायेंगी या बिना वितरण के शेष जारी रखे जायेंगे। केवल इस प्रकार ज्ञात की गई लाभ या हानि की राशि को उपर्युक्त वर्णित रीति से समायोजित किया जाएगा। जब यह सम्भव न हो तब निम्न में से कोई विधि इस उद्देश्य हेतु अपनायी जायेगी :

- (1) सबसे सरल परन्तु सबसे उचित विधि यही है कि पुरानी पुस्तकों को बन्द कर दिया जाये और समामेलन की तिथि पर विद्यमान सम्पत्तियों व दायित्वों के साथ नई पुस्तकें खोली जाएं। इस प्रकार उस विधि तक के परिणाम स्वतः समायोजित हो जायेंगे तथा अधिगृहीत सम्पत्तियों व दायित्वों के मूल्य व क्रय मूल्य के मध्य अन्तर को या तो ख्याति या संचय के रूप में समायोजित कर दिया जाता है।

अतः खाते केवल समामेलन की अवधि से सम्बन्धित होंगे तथा समामेलन से पूर्व की अवधि के लाभ या हानि के लिये किसी प्रकार के समायोजन की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

- (2) चूंकि व्यवसाय के अधिग्रहण का निर्णय सामान्यतः उस तिथि से बहुत बाद में लिया जाता है जिस तिथि से इसे अधिगृहीत करने की सहमति बनती है, अतः साधारणतः यह सम्भव नहीं होता कि उपर्युक्त वर्णित विधियों में से किसी विधि को अपनाया जाये। ऐसी परिस्थिति में केवल यही विकल्प बचता है कि वर्ष के लाभों को समामेलन से पूर्व तथा पश्चात् की अवधि के लिए दो भागों में बाँटकर हस्तांतरित कर दिया जाये। ऐसा समय के आधार पर या विक्रय के आधार पर या ऐसी विधि जो दोनों का मिश्रण हो के आधार पर किया जाये।

3. बटवारे का आधार

(BASIS OF APPORTIONMENT)

मद	समामेलन पूर्व तथा उपरान्त की अवधि के लिए बटवारे का आधार
सकल लाभ या सकल हानि	सम्बन्धित अवधि में पूर्ण बिक्री के आधार पर या पूर्ण बिक्री की जानकारी न होने पर सम्बन्धित

	अवधि में बेचे माल का लागत मूल्य या यदि बिके हुए माल की लागत तथा पूर्ण बिक्री की जानकारी न हो तो समय के आधार पर।
परिवर्तनीय व्यय जो कि पूर्ण बिक्री से सम्बन्धित है जैसे भाड़ा/मजदूरी भेजने पर, बिक्री तथा विवरण व्यय बिक्री तथा यात्री एजेंट को दी गयी कमीशन, विज्ञापन पर व्यय खराब कर्ज यदि वास्तव में खराब कर्ज उस अवधि के लिए नहीं है तो, दलाली विक्रय प्रोत्साहन।	समामेलन से पूर्व तथा उसके उपरान्त पूर्ण बिक्री के आधार पर।
स्थायी आम प्रभार जैसे कि वेतन, कार्यालय तथा प्रशासनिक व्यय, किराया, कर तथा दरें मुद्रण एवं स्टेशनरी, टेलीफोन, टेलीग्राम, डाक व्यय ह्रास तथा विविध व्यय।	समामेलन से पूर्व के प्रभार चाहे भूमि के चाहे भूमि के लिए प्रतिफल हो व्यवहार को अधिग्रहीत करने पर नहीं दिये जाते हैं। इसके उपरान्त का ब्याज समामेलन के बाद को अवधि में गिना जाता है।
समामेलन के उपरान्त के व्यय जैसे समामेलन कार्यों पर व्यय ऋणपत्रों पर ब्याज, निर्देशकों की फीस, निर्देशक का वेतन आरंभिक व्यय, अंश निर्गम व्यय अधोलेखन कमीशन प्रतिभूतियों पर दिया गया बट्टा।	समामेलन के उपरान्त अवधि का प्रभार
अंकेक्षण शुल्क (i) कम्पनी के अंकेक्षण के लिए कम्पनी अधिनियम 1956 के अन्तर्गत (ii) कर अंकेक्षण आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 44AB के अधीन	समामेलन के उपरान्त की अवधि पर लिखा जायेगा पूर्ण बिक्री के आधार सम्बन्धित अवधि के आधार पर
विक्रेता को क्रय प्रतिफल पर ब्याज (i) अधिग्रहण का तिथि से समामेलन की अवधि तक (ii) समामेलन की तिथि से	समामेलन से पूर्व की लगायें समामेलन के उपरान्त की तिथि पर लगायें

समय अनुपात तथा विक्रय अनुपात के आधार पर होने वाले बटवारे को आप निम्नलिखित उदाहरण से भली-भांति समझ सकते हैं।

उदाहरण (Example)

लायन लि. का समामेलन 1-8-2012 को किया गया ताकि यह मैसर्स हैप्पी के चलते हुए व्यापार का अधिग्रहण इसकी सम्पत्तियों सहित 1-4-2012 से कर लेते। कम्पनी के लेखों को 31-3-13 के पहले चार माह में औसत विक्रय बकाया आठ महीनों के औसत विक्रय से दुगना था।

3.4 दि इन्स्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स ऑफ इण्डिया

समामेलन से पूर्व तथा सामामेलन के उपरान्त अवधि के लिए समय औसत तथा विक्रय औसत की गणना करो।

हल (Solution)

समय अनुपात

समामेलन से पूर्व की अवधि (1-4-2012 to 1-8-2012)	= 4 months
समामेलन से उपरान्त की अवधि (1-8-2013 to 31-3-2013)	= 8 months
समय औसत	= 4 : 8 या 1 : 2
विक्रय औसत	

समामेलन से पूर्व औसत मासिक विक्रय से दोगुना थी। सामामेलन के उपरान्त की अवधि के मुकाबले में

$$\begin{aligned} \text{यदि सामामेलन से पूर्व प्रत्येक माह का भार } x \text{ है तो} &= 4 \times 2x : 8 \times 1x \\ &= 8x : 8x \text{ या } 1 : 1 \end{aligned}$$

4. सामामेलन के पूर्व लाभ या हानि

(PRE-INCORPORATION PROFITS & LOSSES)

क्र.	समामेलन से पूर्व लाभ	समामेलन से पूर्व हानि
1.	इसका पूँजीगत संचय खाते में हस्तांतरण (पूँजीवृत्त)	इसका व्यवसाय अधिगृहीत करने के लागत के रूप में उपचारित करके (ख्याति)
2.	इसका प्रयोग किया जा सकता है— <ul style="list-style-type: none"> अधिग्रहण पर ख्याति को अपलिखित करने प्रारम्भिक व्यय को अपलिखित, सम्पत्तियों के अधिमूल्य को (Writing down) बोनस अंशों को निर्गमित अंशों का अंशतः भुगतान (Partly paid share) 	इसका प्रयोग किया जा सकता है— <ul style="list-style-type: none"> समामेलन के पश्चात् के लाभों से अधिग्रहण पर ख्याति को जोड़ना पूँजीगत लाभों को अपलिखित करना।

उदाहरण (Illustration) 1

विद्युत लिमिटेड का 1 जुलाई, 2012 को बिजली लिमिटेड का 1 जनवरी से अधिग्रहण करने के लिए सामामेलन हुआ। बिजली का व्यवसाय चालू रखा जायेगा। स्थायी सम्पत्ति व ख्याति का क्रय मूल्य उन वर्षों के लाभों के 80% के बराबर देय होगा।

निम्न तलपट 31 दिसम्बर, 2012 को दिया गया है, जिससे आप चिट्ठा तैयार कर सकें तथा लाभ-हानि बंटबारा खाते में से 1/3 प्रारम्भिक व्यय को अपलिखित करना है :

	Dr. ₹	Cr. ₹
अंश पूँजी 1,500 समता अंशों की ₹ 100 प्रत्येक ₹ 80 चुकता विविध देनदार		1,20,000
31 दिसम्बर, 2012 पर रहतिया	82,000	
अधिकोष में तथा हाथ में रोकड़	67,000	
निर्देशक शुल्क	24,000	
प्रारम्भिक व्यय	3,000	
विविध लेनदार	24,000	32,000
बिजली के साथ प्रवेश ठहराव के अन्तर्गत सभी व्ययों के प्रावधान के पश्चात् वर्ष का लाभ		48,000
	2,00,000	2,00,000

समाधान (Solution)

31 दिसम्बर, 2012 को मैसर्स विद्युत लिमिटेड का चिह्न
(Balance Sheet of M/s Bidyut Ltd. as on 31st Dec., 2012)

	विवरण	टिप्पणी	₹
1.	समता एवं दायित्व (Equity and Liability)		
	अंशधारियों की निधि (Shareholders' Fund)		
(a)	अंश पूँजी	1	1,20,000
(b)	आरक्षित तथा आधिक्य	2	37,000
2.	चालू दायित्व (Current Liabilities)		
(a)	व्यापार देयतायें		32,000
(b)	अन्य चालू दायित्व		38,400
	कुल		2,11,400
	सम्पत्ति (Assets)		
1.	अप्रचलित सम्पत्तियाँ (Non-current assets)		
(a)	स्थायी सम्पत्तियाँ	3	38,400
2.	चालू सम्पत्तियाँ (Current Assets)		
(a)	रहतिया		67,000
(b)	व्यापार प्राप्तियाँ		82,000
(c)	रोकड़ तथा रोकड़ तुल्य		24,000
	कुल		2,11,400

लेखों के टिप्पणी (Notes to Accounts)

		(₹)
1.	अंशपूँजी समता अंश पूँजी निर्गमित तथा माँगी गई पूँजी प्रत्येक ₹ 100 के 1,500 समता अंश, ₹ 80 भुगतान किये	1,20,000
2.	संचिति तथा आधिक्य पूँजी आरक्षिति लाभ तथा हानि खाता घटाओ : डायरेक्टर' शुल्क प्रारम्भिक खर्च*	24,000 24,000 3,000 <u>24,000</u> (<u>27,000</u>)
	Total	<u>21,000</u>
3.	स्थायी सम्पत्तियाँ ख्याति तथा स्थायी सम्पत्तियाँ	38,400

कार्यात्मक टिप्पणी (Working Note)

		₹
	बिजली को देय राशि वर्ष के लिये लाभ	48,000
	ख्याति की लागत, सम्पत्ति, आदि के रूप में 80% देय	38,000

उदाहरण (Illustration) 2

इन्दर और विष्णु एक साझेदारी संयुक्त स्कंध फर्म में कार्य कर रहे थे, जिसे उन्होंने फ़ैलो ट्रेवलर्स के नाम से पंजीकृत कराया। 31 मार्च, 2012 को अपने विद्यमान व्यवसाय को अधिगृहीत किया। 1 जनवरी, 2012 से साझेदारी फर्म की सभी सम्पत्तियों के ₹3,00,000 में लेने के लिए सहमत हुए और जब तक इस राशि का पूर्ण भुगतान नहीं हो जाता इस पर 6% की दर से ब्याज देय होगा। 30 जून, 2012 को राशि का भुगतान किया। क्रय प्रतिफल का भुगतान (discharge) करने के लिए कम्पनी ने ₹10 प्रति वाले 20,000 समता अंश ₹1 प्रति प्रब्याजि पर निर्गमित किये और 7% वाले ऋणपत्र विक्रेता को सम मूल्य पर जिनका अंकित मूल्य ₹1,50,000 है बाँटे।

31 दिसम्बर, 2012 को समाप्त होने वाले वर्ष के अन्त में "फ़ैलो ट्रेवलर्स लिमिटेड" का लाभ तथा हानि खाता अग्र रूप में है—

* As per para 56 of AS 26, "Intangible Assets" preliminary expenses should be charged fully to the statement of profit and loss of the year in which it is incurred. However this standard will be discussed in detail in Paper -5:Advanced Accounting.

	₹		₹
क्रय, स्टॉक को मिलाकर	1,40,000	विक्रय :	
भाड़ा तथा ठेका	5,000	1 जनवरी से 31 मई, 2012	60,000
सकल लाभ नीचे ले गया	60,000	1 जून से 31 दिसम्बर, 2012	1,20,000
		हस्तस्थ रोकड़	<u>25,000</u>
	<u>2,05,000</u>		<u>2,05,000</u>
वेतन तथा मजदूरी	10,000	सकल लाभ नीचे लाया गया	60,000
ऋणपत्र ब्याज	5,250		
ह्रास	1,000		
क्रय पर ब्याज (30-6-2012 तक)	9,000		
बिक्री कमीशन	9,000		
निर्देशक शुल्क	600		
प्राथमिक व्यय	900		
कर के लिये प्रावधान	6,000		
समता अंशों पर लाभांश @ 5%	5,000		
शेष आगे ले जाना	<u>13,250</u>		
	<u>60,000</u>		<u>60,000</u>

समामेलन से पूर्व के लाभ या हानि के बटवारे का विवरण व उन राशियों को भी दर्शाइये जो चिट्ठे में शामिल की जानी चाहिये।

समाधान (Solution)

फेलो ट्रेवलर्स लिमिटेड

पूर्व अवधि से समामेलन तक के मध्य लाभ को प्रदर्शित करने वाला विवरण

Fellow Travellers Ltd.

(Statement showing apportionment of profit between periods prior to and since incorporation)

	Ratio	अनुपात समामेलन	पूर्व समामेलन पश्चात
विक्रय के आधार पर आबंटित सकल लाभ	1:2	<u>20,000</u>	<u>40,000</u>
समय आधार पर आबंटित प्रशासनिक व्यय :			

(i) वेतन तथा मजदूरी	10,000			
(ii) ह्रास	<u>1,000</u>			
	<u>11,000</u>	5 : 7	4,583	6,417
विक्रय के आधार पर बिक्री कमीशन		1:2	3,000	6,000
क्रय पर ब्याज (समय आधार पर)		5:1	7,500	1,500
समामेलन पश्चात् अवधि पर पूर्ण रूप से लागू व्यय :				
ऋणपत्र ब्याज	5,250			
निर्देशक शुल्क	<u>600</u>			5,850
प्रारम्भिक व्यय अपलिखित				<u>900</u>
कर के लिये प्रावधान			<u>4,917</u>	<u>19,333</u>

31 दिसम्बर, 2012 को चिह्ने से फेलो ट्रेवलर्स लिमिटेड

Fellow Travellers Ltd.

(Extract from the Balance Sheet as on 31st Dec., 2012)

	विवरण	टिप्पण	₹
1.	समता तथा दायित्व अंशधारियों की निधि		
(a)	अंशपूँजी	1	2,00,000
(b)	आरक्षित तथा आधिक्य	2	33,250
2.	अप्रचलित दायित्व		
(a)	दीर्घ अवधि ऋण	3	1,50,000
3.	चालू दायित्व—		
(a)	अल्प अवधि प्रावधान	4	<u>6,000</u>
	कुल		<u>3,89,250</u>

लेखों में टिप्पण (Notes to accounts)

	₹
1. अंश पूँजी (Share Capital) प्रत्येक ₹ 10 के 20,000 समता अंश पूर्ण भुगतान	2,00,000

2.	आरक्षित तथा आधिक्य	
	समामेलन पूर्व लाभ	4,917
	प्रतिभूति प्रीमियम खाते	20,000
	लाभ तथा हानि खाता	19,333
	कम : कर का प्रावधान*	(6,000)
	समता शेयर पर लाभांश**	(5,000)
	कुल	8,333
3.	दीर्घ अवधि ऋण	
	जमानती	
	7 % Debentures	1,50,000
4.	अन्य मौजूद देनदारियाँ	
	Provision for Taxes	6,000

उदाहरण (Illustration) 3

मंत्री एजेन्सी के साझेदारों ने 1 जनवरी, 2012 पर अपना साझेदारी व्यवसाय MA(P) Ltd. नाम की एक निजी सीमित कम्पनी में बदलने का निर्णय लिया। 31 दिसम्बर, 2011 पर फर्म के आर्थिक चिट्ठे के आधार पर क्रय प्रतिफल ₹ 1 करोड़ 17 लाख पर निर्धारित हुआ। इसके बाद कुछ प्रक्रियागत कठिनाइयों के बाद कम्पनी का समामेलन 1 अप्रैल, 2010 पर हुआ। इस बीच कम्पनी के नाम के संदर्भ में व्यवसाय चालू रखा तथा उक्त तिथि को क्रय प्रतिफल का भुगतान 12 प्रतिशत प्रतिवर्ष पर ब्याज के साथ किया गया। कम्पनी द्वारा लेखांकन की उन्हीं पुस्तकों को निरन्तर रखते हुए अपने प्रथम बार खातों का समापन 31 मार्च, 2013 पर किया तथा निम्नलिखित सारांशीकृत लाभ एवं हानि खाता तैयार किया।

		₹
बिक्री		2,34,00,000
विक्रय हुए माल की लागत	1,63,80,000	
वेतन	11,70,000	
ह्रास	1,80,000	
विज्ञापन	7,02,000	
बट्टा	11,70,000	
प्रबन्धकीय संचालक पारिश्रमिक	90,000	
विविध कार्यालय व्यय	1,20,000	

* The entire amount of provision for tax has been considered to be related with company

** It is assumed that dividend has already been paid.

शोरूम सहित कार्यालय किराया	7,20,000	
ब्याज	<u>9,51,000</u>	<u>2,14,83,000</u>
लाभ		<u>19,17,000</u>

कम्पनी ने क्रय प्रतिफल को चुकाने एवं कार्यशील पूँजी की आवश्यकता हेतु ₹ 50 लाख का ऋण 12% प्रतिवर्ष की दर से लिया।

कम्पनी 1 अप्रैल, 2012 से फर्म की औसत मासिक बिक्री को दुगना करने में सक्षम थी, परन्तु उक्त तिथि से वेतन तिगुना हो गया। 1 जुलाई, 2012 से एक अतिरिक्त स्थान ₹ 30,000 प्रतिमाह किराये पर लिया गया।

समामेलन से पूर्व व पश्चात् की अवधि में विभिन्न व्ययों एवं आयों को बाँटते हुए स्तरीय प्रारूप में लाभ एवं हानि खाता तैयार करें। साथ ही सामामेलन पूर्व के लाभ को कैसे व्यवहारित किया जाएगा इस पर सलाह दें।

समाधान (Solution)

MA (P.) लिमिटेड

Statement showing calculation of profit/losses for pre and post incorporation periods

	Pre-inc. ₹	Post-inc. ₹
Sales	26,00,000	2,08,00,000
<i>Less:</i> Cost of goods sold	18,20,000	1,45,60,000
Salaries	90,000	10,80,000
Depreciation	36,000	1,44,000
Advertisement	78,000	6,24,000
Discounts	1,30,000	10,40,000
M.D.'s remuneration	—	90,000
Misc. Office Expenses	24,000	96,000
Rent	90,000	6,30,000
Interest	<u>3,51,000</u>	<u>6,00,000</u>
Net Profit/(Loss)	<u>(19,000)</u>	<u>19,36,000</u>

क्रियात्मक टिप्पणियाँ (Working Notes)—

- (1) बिक्री के अनुपात की गणना

माना कि समामेलन से पूर्व अवधि में प्रतिमाह औसत बिक्री 'x' है तो समामेलन के पश्चात् अवधि में औसत बिक्री '2x' होगी अर्थात् कुल बिक्री $(3 \times x) + (12 \times 2x)$ या $27x$ होगी। बिक्री का अनुपात $3x : 24x$ या 1:8 होगा।

समय अनुपात 3 माह : 12 माह या 1:4 है।

(2) बिक्री के आधार पर बाँटे गये व्यय बिके माल की लागत, विज्ञापन, बट्टा है।

(3) समय के आधार पर बाँटे गये व्यय द्वास तथा विविध कार्यालय व्यय हैं।

(4) वेतन के बँटवारे हेतु अनुपात—

यदि समामेलन से पूर्व मासिक औसत x है, 3 माह हेतु $3x$ है।

शेष 12 माह हेतु $3x$ से या $36x$ होगा।

यानि विभाजन का अनुपात 1 : 12 है।

(5) किराये का बँटवारा—

	₹	
कुल किराया		7,20,000
माह हेतु अतिरिक्त किराया (1 जुलाई, 2012 से 31 मार्च, 2013 तक)		<u>(2,70,000)</u>
पुराने परिसर हेतु 15 माह के लिये किराया		<u>4,50,000</u>
	समामेलन पूर्व	समामेलन पश्चात्
पुराने परिसर	90,000	3,60,000
जोड़े : नया परिसर	—	<u>2,70,000</u>
	<u>90,000</u>	<u>6,30,000</u>

उपचार पर टिप्पणी (Note on treatment)—

चूँकि समामेलन से पूर्व का लाभ ऋणात्मक है या होगा।

(a) व्यवहारों के सम्बन्ध में अर्जित किसी पूँजी संचय पूर्णतः घटाने हेतु विचारणीय

(b) ख्याति के रूप में उपचारित।

उदाहरण (Illustration) 4

1 मई, 2012 पर ABC लिमिटेड का समामेलन, DEF एण्ड कम्पनी के व्यवसाय को 1 जनवरी, 2012 से लेने हेतु हुआ। 31.12.2012 पर समाप्त होने वाले वर्ष हेतु ABC Ltd. द्वारा निम्नांकित लाभ एवं हानि खाता प्रस्तुत किया गया।

लाभ-हानि खाता

	₹		₹
विक्रय एवं करों से	90,000	सकल लाभ द्वारा	10,64,000
वेतन ₹ 85,000 प्रबन्धक को वेतन		निवेश पर ब्याज	36,000

मिलाकर से	3,31,000		
बाह्य भाड़ा से	14,000		
प्रिंटिंग तथा स्टेशनरी से	18,000		
ऋणपत्रों पर ब्याज से	25,000		
विक्रय कमीशन से	30,800		
डूबत ऋण (विक्रय से सम्बन्धित)	91,000		
कमीशन से	26,000		
प्रारम्भिक व्यय से	28,000		
अंकेक्षक शुल्क	45,000		
निवेश के विक्रय पर हानि	11,200		
शुद्ध लाभ से	3,90,000		
	<u>11,00,000</u>		<u>11,00,000</u>

निम्नलिखित सूचनाओं पर विचार करने के पश्चात् समामेलन से पूर्व तथा समामेलन के पश्चात् के बँटवारे को दर्शाते हुए एक विवरण तैयार करें :

- (1) सकल लाभ अनुपात वर्ष भर स्थिर रहा।
- (2) जनवरी तथा अक्टूबर हेतु बिक्री औसत मासिक बिक्री का 1.5 गुना था तथा दिसम्बर हेतु बिक्री औसत मासिक बिक्री की दुगुनी थी।
- (3) जुलाई 2009 में हुई बिक्री हेतु ₹ 7,000 के अशोध्य ऋण की वापसी को समायोजित करने के पश्चात् अशोध्य ऋण दर्शाये गये हैं।
- (4) प्रबन्धक का वेतन 1 मई, 2010 से ₹ 2,000 प्रतिमाह बढ़ा दिया गया था।
- (5) सभी विनियोगों को 1 अप्रैल, 2010 पर बेच दिया गया।
- (6) The entire audit fees relates to company.

समाधान (Solution)

समामेलन पूर्व अवधि 4 माह (1 जनवरी, 2012 से 30 अप्रैल, 2012 तक) है तथा समामेलन पश्चात् अवधि 8 माह (1 मई, 2012 से 31 दिसम्बर, 2012 है)।

Statement showing calculation of profit/losses for pre and post incorporation periods

	Pre-Inc ₹	Post inc ₹
Gross Profit	3,42,000	7,22,000
Interest on Investments	36,000	—

Bad debts Recovery	7,000	—
	3,85,000	7,22,000
<i>Less</i> : Rent and Taxes	30,000	60,000
Salaries		
Manager's salary	23,000	62,000
Other salaries	82,000	1,64,000
Printing and stationery	6,000	12,000
Audit fees	-	45,000
Carriage outwards	4,500	9,500
Sales commission	9,900	20,900
Bad Debts (91,000 + 7,000)	31,500	66,500
Interest on Debentures	—	25,000
Underwriting Commission	—	26,000
Preliminary expenses	—	28,000
Loss on sale of investments	11,200	—
Net Profit	1,86,900*	2,03,100

* समामेलन पूर्व लाभ एक पूँजी लाभ है तथा पूँजी आरक्षिति को हस्तान्तरित किया जायेगा।

कार्यशील टिप्पणियाँ (Working Notes)—

- (1) बिक्री के अनुपात की गणना :
माना औसत मासिक बिक्री 'x' है, तो
जनवरी से अप्रैल तक की बिक्री $4\frac{1}{2}x$ तथा मई से दिसम्बर तक की बिक्री $9\frac{1}{2}x$ होगी।
बिक्री का अनुपातया $9/2x : 19/2x$ और 9 : 19 होगा।
- (2) सकल लाभ, बाहरी गाड़ी भाड़ा, बिक्री कमीशन, तथा अपलिखित अशोध्य ऋणों को समामेलन से पूर्व तथा पश्चात् की अवधि में बिक्री के अनुपात में यानि 9:19 में बाँटा जायेगा।
- (3) किराया, वेतन, छपाई एवं लेखन सामग्री तथा अंकेक्षण शुल्क समय आधार पर बाँटा जायेगा।
- (4) ऋणपत्रों पर ब्याज, अभिगोपन कमीशन तथा प्रारम्भिक व्ययों को समामेलन पश्चात् अवधि में बाँटना है।
- (5) विनियोग पर ब्याज, विनियोगों की बिक्री पर हानि तथा अशोध्य ऋणों की वसूली समामेलन पूर्व अवधि में बाँटना है।

उदाहरण (Illustration) 5

एक कम्पनी मिस्टर M के व्यवसाय को 1 अप्रैल, 2011 से अधिग्रहण करने के लिए 1 जुलाई, 2011 को समामेलित हुई। उक्त विधि को मिस्टर M का चिट्ठा निम्नानुसार है :

दायित्व	₹	सम्पत्तियाँ	₹
व्यापार लेनदार	36,000	भवन	80,000
पूँजी	1,94,000	उपस्कर तथा फिटिंग	10,000
		देनदार	90,000
		स्टॉक	30,000
		बैंक	20,000
	<u>2,30,000</u>		<u>2,30,000</u>

विक्रेता द्वारा देनदार व अधिकोष शेषों को रोककर रखा गया और लेनदारों को उनके द्वारा चुका दिया गया। कम्पनी द्वारा देनदारों की वसूली की राशि पर 5% कमीशन दिया जायेगा। कम्पनी द्वारा मिस्टर M को ₹ 10 प्रति वाले 10,000 समता अंश निर्गमित किये गये प्रति अंश ₹ 8 चुकता और ₹ 56,000 नकद।

कम्पनी ने ₹ 10 प्रति अंश, 20,000 समता अंश नकद के लिए जनता को निर्गमित किये जो कि 31 मार्च, 2012 को ₹ 8 प्रति अंश याचित एवं चुकता है, परन्तु 1,000 अंशों को छोड़कर जिन पर तीसरी माँग ₹ 2 प्रति अंश प्राप्त नहीं हुई है तथा 2,000 अंशों की स्थिति में पूर्ण अंकित मूल्य प्राप्त हो गया है। अंशों को 2% कमीशन पर अभिगोपक द्वारा निर्गमित किया गया जो पूर्णतः चुकता अंशों पर देय है।

इसके अतिरिक्त ऊपर से उत्पन्न शेष राशि के अतिरिक्त, निम्न को कम्पनी की पुस्तकों के खाते में 31 मार्च, 2012 को दिखाया गया है।

विवरण	₹
बट्टा (विक्रेता के देनदार को दिया गया ₹ 1,000 शामिल है)	6,000
प्रारम्भिक व्यय	10,000
निर्देशक फीस	12,000
वेतन	48,000
देनदार (विक्रेता देनदार शामिल)	1,60,000
लेनदार	48,000
क्रय	3,20,000
विक्रय	4,60,000

31 मार्च, 2012 को रहतिया ₹ 52,000 था। उपस्कर एवं वस्तुएँ पर 10% ह्रास और परिसर पर 5% ह्रास उपलब्ध कराया जायेगा। अवधि में विक्रेता से सम्बन्धित देनदारों से ₹ 60,000 संगृहीत हुए।

31 मार्च, 2012 पर समाप्त होने वाली अवधि के लिए सीमित कम्पनी का व्यापारिक लाभ एवं हानि खाता तथा उसी तिथि के लिए उसका आर्थिक चिट्ठा तैयार करें।

समाधान (Solution)

Calculation of Gross Profit

	₹
Sales	4,60,000
Closing stock	<u>52,000</u>
	5,12,000
Less: Opening Stock	30,000
Purchases	<u>3,20,000</u>
Gross Profit	<u>1,62,000</u>

Statement showing Calculation of profit/losses of pre and post incorporation periods

	समामेलन पूर्व ₹	समामेलन पश्चात् ₹
Gross Profit	40,500	1,21,500
Commission	<u>-</u>	<u>3,000</u>
	40,500	1,24,500
Less: Salaries	12,000	36,000
Directors' fee	-	12,000
Discount	1,250	3,750
Depreciation:		
Building	1,000	3,000
Furniture	250	750
Preliminary expenses*	<u>-</u>	<u>10,000</u>
Pre-incorporation Profit transferred to Capital Reserve Account	26,000	-
Net Profit	<u>-</u>	<u>59,000</u>

* As per para 56 of AS 26, preliminary expenses do not appear in the balance sheet.

टिप्पणी (Note)—लाभ एवं हानि खाते में समामेलन पूर्व एवं समामेलन पश्चात् अवधि के बटवारे निम्नलिखित आधार का प्रयोग कर लिये गये—

मद	आधार	अनुपात
सकल लाभ	समय	1 : 3
वेतन	समय	1 : 3
बट्टा	समय	1 : 3
निर्देशक शुल्क		100% समामेलन पश्चात् अवधि का
कमीशन		100% समामेलन पश्चात् अवधि का

31.3.2012 को चिह्न

(Balance Sheet as on 31.03.2012)

	विवरण	टिप्पण	₹
	समता तथा दायित्व (Equity and Liabilities)		
1.	अंशधारियों की निधि (Shareholders' funds)		
(a)	अंश पूँजी	1	2,42,000
(b)	आरक्षित तथा आधिक्य	2	69,000
2.	चालू दायित्व (Current liabilities)		
(a)	व्यापार देयतायें	3	<u>52,000</u>
	कुल		<u>3,63,000</u>
	सम्पत्तियाँ (Assets)		
1.	अप्रचलित सम्पत्तियाँ (Non-current assets)		
(a)	स्थायी सम्पत्तियाँ		
	मूर्त सम्पत्तियाँ	4	85,000
2.	चालू सम्पत्तियाँ (Current assets)		
(a)	रहतिया		52,000
(b)	व्यापार प्राप्तियाँ		1,31,000
(c)	रोकड़ तथा रोकड़ तुल्य		91,000
(d)	अन्य चालू सम्पत्तियाँ	5	4,000
	कुल		<u>3,63,000</u>

लेखों के टिप्पण (Notes to accounts)

			₹
1.	अंश पूँजी (Share Capital)		
	समता अंश पूँजी		
	प्रत्येक ₹ 10 के 30,000 समता अंश ₹ 8 बुलाये गये	2,40,000	
	घटाया : बकाया राशि (बिना रोकड़ में प्राप्त भुगतान के एक अनुबन्ध को उपर्युक्त में से 10,000 अंश आबंटित किये गये)	(2,000)	2,38,000
	अंश उचंत खाता (निर्गमन अंश के पूर्व होने पर अन्तर्निहित कमीशन के मामले में अभिगोपक को 400 अंश निर्गमित किये गये)		<u>4,000</u>
	कुल		<u>2,42,000</u>
2.	आरक्षित एवं आधिक्य (Reserves and Surplus)		
	पूँजी संचिति	26,000	
	घटाया : ख्याति अपलेखन	(16,000)	10,000
	लाभ-हानि खाता		<u>59,000</u>
	कुल		<u>69,000</u>
3.	व्यापार देयतायें (Trade payables)		
	विविध लेनदार	48,000	
	अग्रिम बुलाये गये	<u>4,000</u>	52,000
4.	स्थायी सम्पत्तियाँ (Fixed assets)		
	भवन	80,000	
	घटाया : ह्रास	(4,000)	76,000
	उपस्कर तथा फिटिंग	10,000	
	घटाया : ह्रास	(1,000)	<u>9,000</u>
	कुल		<u>85,000</u>
5.	अन्य चालू सम्पत्तियाँ (Other current assets)		
	अभिगोपन कमीशन		<u>4,000</u>

क्रियात्मक टिप्पणियाँ (Working Notes)—

(1) अधिग्रहण पर ख्याति	₹	₹
क्रय प्रतिफल		
₹ 10 प्रति, ₹ 8 चुकता के 10,000 समता अंश		80,000
रोकड़		<u>56,000</u>
		1,36,000
घटायें : ली गयी सम्पत्तियाँ		
भवन	80,000	
उपस्कर तथा वस्तुएँ	10,000	
रहतिया	<u>30,000</u>	<u>(1,20,000)</u>
ख्याति		16,000
(2) समता अंशों के सार्वजनिक निर्गमन से रोकड़ अन्तः प्रवाह		
₹10 प्रति, ₹8 याचित के 20,000 समता अंश		1,60,000
घटायें : 1,000 अंशों पर ₹ @ 2 प्रति अंश की दर से अप्राप्त याचनाएँ		(2,000)
		1,58,000
जोड़ें : ₹ 2,000 अंशों पर ₹ @ 2 की दर से अग्रिम याचनाएँ		4,000
		1,62,000
(3) ₹ 2,00,000 अंकित मूल्य पर 2% अभिगोपक कमीशन		4,000
4,000 अभिगोपक कमीशन अंशों के अभिगोपक से सम्बन्धित कार्य की पूर्णतः पर देय होता है। 31 मार्च, 2012 तक सार्वजनिक निर्गमन से सम्बन्धित कार्य समाप्त नहीं हुआ है। इसलिये अभिगोपकों को उनके दावे हेतु कमीशन के भुगतान में निर्गमित अंशों की रकम अंश उच्चन्त खाते को बनाकर की जानी चाहिये।		

(4) कम्पनी के देनदारों से रोकड़ संग्रह (Cash collection from company's debtors)

कुल देनदार खाता

(Total Debtors Account)

	विक्रेता के देनदार	कम्पनी के देनदार		विक्रेता के देनदार	कम्पनी के देनदार
	₹	₹		₹	₹
शेष नीचे ले गये	90,000	—	बट्टे द्वारा	1,000	5,000

विक्रय से	-	4,60,000 ¹	रोकड़ द्वारा	60,000	3,24,000 ²
			नीचे लाया	29,000	1,31,000 ³
			शेष		
	90,000	4,60,000		90,000	4,60,000

(5) क्रय के लिये रोकड़ भुगतान (Cash Payment for Purchases)

कुल लेनदार खाता			
	₹		₹
रोकड़ (सन्तुलन आँकड़े से	2,72,000	क्रय द्वारा	3,20,000 ⁴
नीचे ले जाया गया	48,000		
	3,20,000		3,20,000

(6) सारांश रोकड़ पुस्तक (Summary Cash Book)

	₹		₹
अंश पूँजी खाता से	1,62,000	कुल लेनदार खातों द्वारा लेनदार को भुगतान	2,72,000
कुल देनदार खाता :		विक्रेता के खाते द्वारा :	
कम्पनी के देनदार से संग्रह	3,24,000	क्रय हित द्वारा	56,000
विक्रेता के देनदार से संग्रह	60,000	प्राथमिक व्यय द्वारा	10,000
		निर्देशक शुल्क द्वारा	12,000
		वेतन द्वारा	48,000
		विक्रेता का खाता (कमीशन घटाकर संग्रह ₹ 3,000)	57,000
		नीचे लाये गये शेष द्वारा	91,000
	5,46,000		5,46,000

¹ Assumed that all sales were on credit.

² Balancing figure.

³ Total Debtors ₹1,60,000 minus Vendor's Debtors ₹29,000.

⁴ Assumed that all purchases were on credit.

5. देनदार तथा लेनदार उचन्त खाता

(DEBTORS AND CREDITORS SUSPENSE ACCOUNTS)

देनदार तथा लेनदार उचन्त खाते पूर्व में दर्शाये अनुसार, एक कम्पनी चालू व्यवसाय को लेने के साथ ही एक एजेंट के रूप में उसकी देनदारियों के संग्रह तथा विक्रेता के संदर्भ पर लेनदारों के भुगतान हेतु भी सहमत हो सकती है। इस दशा में विक्रेता के देनदार एवं लेनदार कम्पनी के खातों में सामान्य खाता बही में प्रत्यक्ष से नाम या जमा द्वारा व्यवसायी के देनदारों तथा लेनदारों से उनमें अन्तर रखते हुए उचन्त खाते के सम्बन्ध में प्रति प्रविष्टियाँ करते हुए शामिल कर लिये जाते हैं। साथ ही देनदारों तथा लेनदारों के शेषों को पृथक् खातों में रखा जायेगा। इस क्रय में विक्रेता के देनदारों से संग्रह तथा लेनदारों को भुगतान कम्पनी में अपने पक्षकारों के साथ मिश्रित नहीं होने चाहिए। एक ऐच्छिक प्रक्रिया द्वारा रोकड़ पुस्तक में उनके प्रत्यक्ष स्तम्भों को रखते हुए उनमें अन्तर किया जा सकता है। इस दशा में देनदारों हेतु पारित की जाने वाली उक्त पुस्तक की प्रविष्टियों को नीचे दर्शाया है—

1.	डेबिट विविध देनदार खाता (या कुल देनदार खाता) क्रेडिट देनदार उचन्त खाता	प्रारम्भिक शेष के लिये
2.	डेबिट नकद खाता डेबिट देनदार उचन्त खाता क्रेडिट विविध देनदार खाता	देनदारों से प्राप्त राशि के लिये देनदारों आदि हेतु छूट छूट तथा रोकड़ आदि हेतु
3.	डेबिट देनदार उचन्त खाता क्रेडिट विक्रेता खाता	देनदारों से प्राप्त राशि के लिये और विक्रेता को देय

विक्रेता की देय देनदारियों के सम्बन्ध में क्रेता कम्पनी द्वारा प्राप्त रोकड़ हेतु विक्रेता को एक लेनदार के रूप में उपचारित किया जायेगा, इसी तरह यदि वह उनके देनदारों से रोकड़ स्वयं संग्रह करते हैं तो प्राप्ति को क्रेता कम्पनी भेजा जायेगा।

लेनदारों के सम्बन्ध में प्रविष्टियाँ हेतु, उपर्युक्त लेखांकन के विपरीत उपचारित होगा। क्रेता कम्पनी द्वारा विक्रेता कम्पनी को उसके देनदारों को चुकता रोकड़ के सम्बन्ध में एक देनदार के रूप में विचार किया जायेगा। संगृहीत रोकड़ में से चुकता रोकड़ घटाकर शेष रकम विक्रेता पर द्वारा देय रकम को प्रतिनिधित्व करती है जो कि देनदारों तथा लेनदारों के शेषों में से कोई संग्रहण व्ययों को समायोजित करने के बाद अर्जित की जाती है। उचन्त खाते में शेष हमेशा लिये गये लेनदारों व देनदारों पर किसी भी समय असमायोजित शेषों के अतिरिक्त के बराबर होता है।

उदाहरण (Illustration) 6

मैसर्स X, Y & Z ने 1 जनवरी, 2012 को उसी नाम से अपने व्यवसाय को एक लिमिटेड कम्पनी में हस्तांतरित कर लिया है जिसका चिट्ठा नीचे दिया हुआ है। वह सहमत हुए कि कम्पनी सभी सम्पत्तियों को अधिगृहीत करेगी रोकड़ को छोड़कर और पुस्तकीय ऋणों को उनके पुस्तकीय मूल्य पर लेगी। व्यवसाय की ख्याति के लिए ₹ 20,000 देय होंगे और पुस्तकीय ऋणों

को 5% कमीशन पर वसूला जायेगा। जो भी देनदार वसूल किये जायेंगे उनमें से सबसे पहले विविध लेनदारों के दायित्वों को चुकाया जायेगा, जैसे भी राशि उपलब्ध होगी और यदि कोई शेष बचता है तो उसे छः माह बाद विक्रेता को चुकाया जायेगा। साझेदार अधिविकर्ष को चुकाने के लिये तैयार हैं।

आप क्रय प्रतिफल की गणना व विक्रेता वसूली खाता बनाकर तैयार करें। मान लें कि कुल देनदारों में से केवल ₹ 65,000 वसूल हुए हैं; और शेष देनदारों को विक्रेता द्वारा अन्तिम 6 माह में अधिगृहीत किया गया। देनदारों से वसूली इस प्रकार है : जनवरी ₹ 30,000, फरवरी ₹ 15,000, मार्च ₹ 10,000, अप्रैल ₹ 5,000, मई ₹ 5,000, जून-शून्य।

31 दिसम्बर, 2011 को मैसर्स X,Y,Z का संक्षिप्त चिह्न

दायित्व	₹	₹	सम्पत्तियाँ	₹
साझेदारों का पूँजी खाता :			भूमि तथा भवन	25,000
X	75,000		मशीनरी	1,50,000
Y	60,000		स्टॉक	60,000
Z	40,000	1,75,000	पुस्तक ऋण	75,000
सामान्य संचिति		80,000	रोकड़	5,000
विविध लेनदार		56,000		
बैंक अधिविकर्ष		4,000		
		3,15,000		3,15,000

समाधान (Solution)

क्रय हेतु भुगतान :

	₹	₹
कुल सम्पत्तियाँ		3,15,000
जोड़ा : ख्याति की राशि		20,000
घटाया : अधिगृहीत की गई सम्पत्तियाँ :		3,35,000
रोकड़ शेष	5,000	
पुस्तक ऋण	75,000	80,000
		2,55,000

विक्रेता के देनदारों का खाता

2012		₹	2012		₹
1 जनवरी	देनदारों का शेष संग्रह के लिये लिया गया	75,000	31 जनवरी	रोकड़ (संग्रहित राशि)	30,000
			28 फरवरी	रोकड़ (संग्रहित राशि)	15,000
			31 मार्च	रोकड़ (संग्रहित राशि)	10,000

			30 अप्रैल	रोकड़ (संग्रहित राशि)	5,000
			31 मई	रोकड़ (संग्रहित राशि)	5,000
			30 जून	देनदार के उच्चत खाते पर हस्तान्तरित शेष	10,000
		75,000			75,000

देनदार का उच्चत खाता

2012		₹	2012		₹
31 जनवरी	विक्रेता के संग्रह खाते में हस्तान्तरित राशि	28,500	1 जनवरी	विक्रेता के देनदारों का वेतन संग्रह के लिये लिया गया	75,000
	कमीशन खाता	1,500			
28 फरवरी	विक्रेता के संग्रह खाते में हस्तान्तरित राशि	14,250			
	कमीशन खाता	750			
31 मार्च	विक्रेता के संग्रह खाते में हस्तान्तरित राशि	9,500			
	कमीशन खाता	500			
30 अप्रैल	विक्रेता के संग्रह खाते में हस्तान्तरित राशि	4,750			
	कमीशन खाता	250			
31 मई	विक्रेता के संग्रह खाते में हस्तान्तरित राशि	4,750			
	कमीशन खाता	250			
30 जून	विक्रेता के देनदार खाते में हस्तान्तरित राशि	10,000			
		75,000			75,000

लेनदार का उच्चन्त खाता

2012		₹	2012		₹
1 जनवरी	अधिग्रहित दायित्व के सन्दर्भ में विक्रेता से वसूल राशि	56,000	31 जनवरी	विक्रेता का संग्रह खाता	28,500
			28 फरवरी	विक्रेता का संग्रह खाता	14,250
			31 मार्च	विक्रेता का संग्रह खाता	9,500
			30 अप्रैल	विक्रेता का संग्रह खाता	3,750
		56,000			56,000

विक्रेता के लेनदारों का खाता

2012		₹	2012		₹
31 जनवरी	रोकड़	28,500	1 जनवरी	विक्रेता की जगह भुगतान की गई राशि	56,000
28 फरवरी	रोकड़	14,250			
31 मार्च	रोकड़	9,500			
30 अप्रैल	रोकड़	3,750			
		56,000			56,000

विक्रेता का उच्चन्त खाता

2012		₹	2012		₹
31 जनवरी	लेनदारों के उच्चन्त खाते में हस्तान्तरित राशि	28,500	31 जनवरी	देनदारों के उच्चन्त खाते से हस्तान्तरित राशि	28,500
28 फरवरी	लेनदारों के उच्चन्त खाते में हस्तान्तरित राशि				
28 फरवरी	लेनदारों के उच्चन्त खाते में हस्तान्तरित राशि	14,250	28 फरवरी	देनदारों के उच्चन्त खाते से हस्तान्तरित राशि	14,250
31 मार्च	लेनदारों के उच्चन्त खाते में हस्तान्तरित राशि	9,500	31 मार्च	देनदारों के उच्चन्त खाते से हस्तान्तरित राशि	9,500

30 अप्रैल	लेनदारों के उच्चन्त खाते में हस्तान्तरित राशि	3,750	30 अप्रैल	देनदारों के उच्चन्त खाते से हस्तान्तरित राशि	4,750
30 जून	रोकड़ (विक्रेता को भुगतान की गई राशि)	5,750	31 मई	देनदारों के उच्चन्त खाते से हस्तान्तरित राशि	4,750
		61,750			61,750

सारांश

(SUMMARY)

- कम्पनी के अस्तित्व में आने से पूर्व, व्यापार के लाभ या हानि को समामेलन से पूर्व लाभ या हानि कहा जाता है।
- सामान्यतः समामेलन से पूर्व के लाभ या हानि को ज्ञात करने के लिए निम्न दो विधियाँ हैं—
 - (i) पुरानी पुस्तकों को बन्द कर दिया जाये तथा समामेलन की तिथि पर विद्यमान सम्पत्ति व दायित्वों के साथ नई पुस्तकें खोली जाएँ। इस प्रकार उस तिथि तक के परिणाम स्वतः समायोजित हो जाते हैं।
 - (ii) वर्ष के लाभ को समामेलन से पूर्व तथा पश्चात् की अवधि के लिए दो भागों में बाँटकर हस्तांतरित कर दिया जाए। ऐसा या तो समय आधार पर या विक्रय आधार पर या ऐसी विधि जो दोनों का मिश्रण हो के आधार पर किया जाता है।
- एक कम्पनी जो एक चालू व्यवसाय को अधिगृहीत कर रही है वह उस विक्रेता के देनदारों को वसूल करने के लिए एजेन्ट के रूप में सहमत हो सकती है। इस दशा में जो विक्रेता के लेनदार व देनदार हैं, उन्हें भी कम्पनी के खातों में अलग से सामान्य खातों में डेबिट या क्रेडिट करते हुए शामिल किया जाएगा और उन्हें व्यवसाय के लेनदारों व देनदारों से पृथक् रखा जाएगा और उससे सम्बन्धित उच्चन्त खातों में प्रति प्रविष्टि की जायेगी तथा साथ ही देनदारों व लेनदारों की सूचनाओं को पृथक् खातों में रखा जायेगा।
- विक्रेता को क्रेता कम्पनी से प्राप्त होने वाले रोकड़ के सम्बन्ध में लेनदार की तरह उपचारित होगा और विक्रेता पर देय ऋणों के सम्बन्ध में यह समझा जाएगा कि वह स्वयं उसके देनदारों से रोकड़ वसूल करते हुए उसे क्रेता कम्पनी को भेजता है।
- क्रेता कम्पनी द्वारा अपने लेनदारों को देय रोकड़ के सम्बन्ध में विक्रेता को देनदार माना जायेगा। रोकड़ वसूली का शेष, घटाये भुगतान का यह प्रतिनिधित्व करता है देय राशि या विक्रेता द्वारा लेनदारों व देनदारों द्वारा उत्पन्न हुए शेषों जो कि लिये गये हैं, वसूली विषय के रूप में।
- उच्चन्त खाते का शेष हमेशा लिये गये लेनदारों व देनदारों पर किसी भी समय असमायोजित शेषों के अतिरिक्त के बराबर होता है।

4

बोनस निर्गमन हेतु लेखांकन [ACCOUNTING FOR BONUS ISSUE]

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के उपरांत, आप सक्षम हो जायेंगे—

- बोनस अंशों के निर्गमन सम्बन्धी प्रावधानों को समझने में।
- बोनस अंशों हेतु लेखांकन में।

1. परिचय

(INTRODUCTION)

“लाभ का पूँजीकरण, लाभ या संचिति को भुगतान पूँजी में परिवर्तित करने की प्रक्रिया है।” एक कम्पनी इसके लाभ अथवा संचिति का पूँजीकरण कर सकती है, जो निम्न के द्वारा सदस्यों के मध्य लाभांश के रूप में वितरण के लिये अन्यथा उपलब्ध होती है :

- (a) भुगतान की जा रही राशि, विद्यमान आंशिक रूप से भुगतान अंशों पर अदत्त है। जिससे उन्हें पूर्ण भुगतान (देय) बनाया जा सके, अथवा
- (b) सदस्यों को पूर्ण देय बोनस अंश निर्गमित करते हुये।

कम्पनी अधिनियम में लाभों के पूँजीकरण तथा ‘फलस्वरूप बोनस अंशों के निर्गमन’ के सम्बन्ध में कोई विशिष्ट प्रावधान शामिल नहीं है। तथापि, कम्पनी अधिनियम यह अनुमति देता है, कि अंश प्रब्याजि (Premium) की राशि कम्पनी द्वारा कम्पनी के अनिर्गमित अंशों को उसके सदस्यों को पूर्ण दत्त बोनस अंशों के निर्गमन द्वारा चुकाने में प्रयुक्त की जा सकती है।

साथ ही, कम्पनी पूँजी शोधन कोष की राशि का प्रयोग भी कम्पनी के अनिर्गमित अंशों को उसके सदस्यों को पूर्णदत्त बोनस अंशों के निर्गमन द्वारा चुकाने हेतु कर सकती है।

1.1 परिभाषा (Definition)

- **बोनस अंश (Bonus Share)**—बोनस अंश, स्टॉक का वह मुक्त अंश है, जो कम्पनी के मौजूदा अंशधारकों को प्रदान किया जाता है, जो कि उन अंशों की संख्या पर आधारित हैं, जिनके अंशधारक पहले से ही स्वामी हैं। बोनस अंशों के निर्गमन से

निर्गमित एवं स्वामित्व अंशों की कुल संख्या में वृद्धि हो जाती है, जबकि यह कम्पनी की शुद्ध सम्पत्ति में कोई वृद्धि नहीं करता।

हालांकि निर्गमित अंशों की कुल संख्या में वृद्धि हो जाती है, प्रत्येक अंशधारक द्वारा धारित अंशों की संख्या का अनुपात स्थिर रहता है।

बोनस अंशों के निर्गमन को बोनस निर्गमन के रूप में संदर्भित किया जाता है। कम्पनी के संवैधानिक दस्तावेजों के आधार पर केवल कुछ वर्गों के अंशों को ही बोनस निर्गमन के लिए उपयुक्त माना गया है या अन्य वर्गों से बोनस निर्गमन के लिए प्राथमिकता दी गई है।

- **बोनस निर्गमन (Bonus Issue)**—बोनस निर्गमन (या प्रतिभूतिपत्र निर्गमन) एक स्टॉक विभाजन है, जिसमें कम्पनी अपनी निर्गमित पूंजी को विनियोजित पूंजी (लाभ के पश्चात् कम्पनी के पास उपलब्ध बड़ी हुई पूंजी) के समान रखने के लिए नए अंश बिना किसी प्रभार के निर्गमित करती है। सामान्यतः यह कम्पनी द्वारा लाभ उपार्जित करने पर होता है, जो विनियोजित पूंजी में वृद्धि करता है। अतएव बोनस निर्गमन को लाभांश के विकल्प के रूप में देखा जा सकता है। बोनस निर्गमन से कोई नए कोषों का उपार्जन नहीं होता।

1.2 बोनस अंशों का निर्गमन (Issue of Bonus Shares)

बोनस अंशों का निर्गमन कम्पनी के स्वतंत्र संचयों से किया जाता है।

कम्पनी की सम्पत्तियों में नकद संचयों का भी समावेश होता है। एक कम्पनी, पिछले कुछ वर्षों के अपने लाभों के रोके हुए हिस्से (वह हिस्सा, जिससे लाभांश भुगतान नहीं किया है) द्वारा संचयों का निर्माण करती है। एक समय बाद, इन स्वतंत्र संचयों में वृद्धि होती है एवं बोनस अंशों के निर्गमन की इच्छुक कम्पनी, संचयों के हिस्से को पूंजी में परिवर्तित कर देती है।

1.2.1 बोनस निर्गमन हेतु शर्तें (Conditions for Bonus Issue)—बोनस अंशों का निर्गमन, कम्पनी के संचयों को पूंजी में परिवर्तित करके किया जाता है। यह कम्पनी के संचयों के पूंजीकरण के बगैर संभव नहीं है। यहाँ कुछ शर्तें हैं जिनका बोनस अंशों के निर्गमन के पूर्व संतुष्ट होना आवश्यक है—

- (a) बोनस निर्गमन तब तक नहीं किया जा सकता जब तक अंशतः दत्त अंशों (यदि कोई हों) को पूर्ण दत्त नहीं बना दिया जाता।
- (b) कम्पनी ने 'स्थायी निक्षेपों के सम्बन्ध में ब्याज का मूलधन' और 'मौजूदा ऋणपत्रों पर ब्याज या शोधन (विमोचन) पर मूलधन' के भुगतान में कोई चूक न की हो, तथा
- (c) कम्पनी के पास इस विश्वास का पर्याप्त कारण है कि उससे कर्मचारियों के वैधानिक देयों के सम्बन्ध में कोई चूक नहीं हुई है जैसे कि, भविष्य निधि में अंशदान, ग्रेच्युटी, बोनस आदि।
- (d) एक कम्पनी, जो निदेशक मंडल के अनुमोदन के पश्चात् अपना बोनस निर्गमन घोषित करती है, तो इस तरह के अनुमोदन की तिथि से छः माह की अवधि के भीतर प्रस्ताव लागू कर देना चाहिए तथा निर्णय बदलने का विकल्प नहीं होगा।

1.2.2 बोनस निर्गमन पर प्रतिबन्ध (Restriction on Bonus Issue)—

1. कोई भी निर्गमन कर्ता समता अंशों के बोनस निर्गमन तब तक नहीं कर सकता है। जब तक वह उसने उसी श्रेणी के समता अंशों को बकाया देय (विवशतावश) परिवर्तन कर्ज विलेख (यदि कोई है) धारकों के लिए उनके परिवर्तनीय भाग के अनुपात में उन्हें आरक्षित नहीं कर देता है।
2. इस प्रकार से आरक्षित समता अंश उन धारकों के लिए जिनके पास आंशिक या पूर्णतया (विवशतावश) परिवर्तनीय कर्ज विलेख है यह आरक्षित अंश उन्हें ऐसे परिवर्तनीय कर्ज विलेखों के परिवर्तन के समय उन्हीं शर्तों पर या उसी अनुपात में जारी किये जायेंगे जिन शर्तों पर बोनस अंश जारी किये गये थे।

संशोधित सेबी (पूँजी का निर्गमन तथा प्रकटीकरण अपेक्षाएँ (द्वितीय संशोधन) नियम 2012

1.2.3 बोनस अंश केवल संचय कोष से ही जारी किये जा सकते हैं यदि उनका पूँजीकरण नकद में किया जा रहा है (Bonus shares only against reserves, etc. if capitallised in cash)—

1. बोनस अंश निर्गमन केवल मुक्त संचय कोष से होगा। जिसका कोष निर्माण वास्तविक लाभ से या प्रतिभूतियों के अधिमान से किया गया है। जिन्हें नकद में संग्रहित किया गया है और या उस संचय कोष जो कोष स्थिर सम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन से किया गया है तो उस कोष का उपयोग बोनस अंशों के निर्गम से पूँजीकरण करने के लिए नहीं किया जायेगा।
2. सेबी के प्रावधानों का उल्लंघन किये बिना (पूँजी का निर्गमन का प्रकटीकरण अपेक्षाएँ)

1.2.4 बोनस निर्गमन का समापन (Completion of bonus issue)

1. निर्गमन कर्ता जिसने बोनस निर्गमन की घोषणा की है निर्देशक मण्डल की स्वीकृति के बाद और जहां पर लाभ तथा संचय कोष के पूँजीकरण के लिए अंशधारकों की सहमति की आवश्यकता नहीं है तो वह निर्देशक मण्डल से प्राप्त स्वीकृति के पंद्रह दिनों के भीतर ऐसे बोनस निर्गमन को कार्यान्वित कर देगा।

आगे शर्त यह है कि यदि निर्गमन कर्ता को यदि लाभ तथा संचय कोष की पूँजीकरण करने तथा बोनस अंश जारी करने के लिए अंशधारकों की सहमति की आवश्यकता है तो वह इस निर्गमन को निर्देशक मण्डल की मीटिंग जिसमें बोनस अंश निर्गमन को जारी करने का निर्णय लिया गया था। यदि इस निर्गमन को अंशधारकों की सहमति मिल जाती है तो वह ऐसी मीटिंग की तिथि के दो माह के भीतर इस निर्गमन का समापन कर देगा।

2. यदि एक बार यह निर्णय कर लिया जाता है कि बोनस निर्णय की घोषणा कर दी जाये तो इस निर्गम को वापस नहीं लिया जा सकता है।

1.2.5 अधिकृत पूँजी में वृद्धि हेतु प्रस्ताव (Resolution for Increased Authorised Capital)—बोनस अंशों के निर्गमन के फलस्वरूप, जो अदत्त तथा प्रदत्त पूँजी अधिकृत अंशपूँजी से अधिक हो जाती है तो कम्पनी द्वारा अपनी आम सभा की बैठक में अधिकृत पूँजी में वृद्धि का एक प्रस्ताव पारित करना होगा।

1.2.6 बोनस निर्गमन की वापसी (Return of Bonus Issue)—बोनस निर्णय का विवरण जिसके साथ उस प्रस्ताव को प्रतिलिपि भी लगाई जायेगी। जिस प्रस्ताव द्वारा बोनस अंशों के निर्गमन को अधिकृत किया गया था और इसे ऐसे अंशों के जारी होने के तीस दिन के भीतर पंजीकार के पास दाखिल करना होगा।

1.2.7 सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा बोनस अंशों का निर्गमन (Issue of Bonus Shares by Public Sector Undertakings)—सरकार के संज्ञान में आया है की बहुत संख्या में केन्द्रीय सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों के पास बहुत बड़ी मात्रा में उनके तलपट में संचय कोष है, जबकि उनकी प्रदत्त पूँजी का आधार तथा आकार बहुत कम है। यह प्रश्न उठा कि इन उपक्रमों को अपने संचय कोषों का पूँजीकरण करना चाहिए और इसके लिए ऐसे उपक्रमों द्वारा अपने वर्तमान अंशधारकों को बोनस अंश जारी करके अपनी पूँजी का पूँजीकरण करना चाहिए और यह तथ्य सरकार के विचाराधीन है। बोनस अंशों के निर्गमन द्वारा प्रदत्त पूँजी तथा संचित कोष में उचित सामंजस्य होता है और इससे सार्वजनिक संस्थानों के समता अंशों के प्रति जनता का अच्छा रुझान बनता है और इससे उस कम्पनी की छवि में सुधार होता है।

इसलिए सरकार ने यह निर्णय लिया है कि वह सार्वजनिक उपक्रमों में जहां प्रचुर संचय कोष उस उपक्रम की प्रदत्त पूँजी के मुकाबले में अधिक है। तो वह उन कोषों का पंजीकरण करने के लिए बोनस अंशजारी करेगी जिसके लिए उचित मापदण्ड बनाये जाने चाहिए तथा उनका अनुसरण किया जाना चाहिए।

2. पंजी प्रविष्टियाँ

(JOURNAL ENTRIES)

- (A) (1) **बोनस अंशों के किसी निर्गमन के अनुमोदन पर (Upon the sanction of an issue of bonus shares)—**
- (a) नामे-लाभ तथा हानि खाता
 नामे-सामान्य संचिति खाता
 नामे-पूँजी संचिति खाता (केवल नकद में वसूल)
 नामे-प्रतिभूति प्रीमियम खाता
 नामे-पूँजी शोधन संचिति खाता
- (b) जमा-अंशधारियों के खाते को बोनस
- (2) **अंशों के निर्गमन पर (Upon issue of Shares)**
- (a) नामे-अंशधारियों के खातों को बोनस
- (b) जमा-अंशपूँजी खाता
- (B) (1) **आंशिक रूप से देय अंशों को पूर्ण देय अंशों में परिवर्तन द्वारा बोनस के अनुमोदन पर (Upon the sanction of bonus by converting partly paid shares into fully paid shares)**
- (a) नामे-लाभ तथा हानि खाता
 नामे-सामान्य संचिति खाता

- नामे-पूँजी संचिति खाता (केवल नकद में वसूल)
- (b) जमा-अंशधारियों के खाते को बोनस
- (2) अन्तिम देय बुलाये गये अंशों को बोनस पर (On making the final call due)
- (a) नामे-अंश अन्तिम कॉल खाता
- (b) जमा-अंश पूँजी खाता
- (3) अन्तिम बुलाये गये अंशों के समायोजन पर (On adjustment of final call)
- (a) नामे-अंशधारियों के खाते को बोनस
- (b) जमा-अंश अन्तिम कॉल खाता

उदाहरण (Illustration) 1

भारत लि के 31 मार्च, 2012 के परीक्षण बकाया में निम्न मद दिये हुए हैं—

	₹
40,000 समता अंश ₹ 10 प्रति	4,00,000
पूँजी कोष (जिसमें ₹ 30,000 मशीनरी की बिक्री पर लाभ है)	75,000
पूँजी पुनर्निवेश कोष	25,000
प्रतिभूति अधिमान	30,000
सामान्य कोष	1,05,000
बचत-लाभ हानि खाते में जमा	50,000

कम्पनी ने निर्णय किया कि वह समता अंशधारकों की बोनस अंश समता अंश पर 1 बोनस अंश जारी करेगी यह भी निर्णय किया गया की संचय कोष की न्यूनतम कमी करनी चाहिए। आवश्यक पूँजी प्रविष्टियाँ कीजिए।

समाधान (Solution)

भारत लि की लेखा पुस्तक में पूँजी प्रविष्टियाँ

	Dr	Cr
	₹ लाख में	₹ लाख में
पूँजी कोष खाता	Dr 30,000	
पूँजी पुनर्निवेश कोष खाता	Dr 25,000	
प्रतिभूति अधिमान खाता	Dr 30,000	
सामान्य कोष खाता	Dr 15,000	
को अंशधारकों को बोनस खाता (बोनस निर्गमन अंशों के बदले बोर्ड को प्रस्ताव के अनुसार कोषों का उपयोग)		1,00,000
अंशधारकों को बोनस खाता	Dr 1,00,000	
लाभ का पूँजीकरण (समता अंशपूँजी खाता)		1,00,000

टिप्पणी (Note)—पूँजी कोष ₹ 30,000 जो कि नकद से बना है केवल उसको उपयोग ही बोनस निर्गमन के लिए किया जा सकता है।

उदाहरण (Illustration) 2

31 मार्च, 2012 को सॉलिड लिमिटेड के चिट्ठे का सार निम्नलिखित है :

	₹
प्राधिकृत पूँजी (Authorised capital)	
10,000 ₹ 10 प्रति के पूर्वाधिकार (अधिमान) अंश	1,00,000
1,00,000 ₹ 10 प्रति के समता अंश	<u>10,00,000</u>
	<u>11,00,000</u>
निर्गमित एवं अभियाचित पूँजी (Issued and Subscribed capital)—	
8,000 12% ₹ 10 प्रति के पूर्वाधिकार (अधिमान) अंश	80,000
90,000 ₹ 10 प्रति के समता अंश, ₹ 8 दत्त	7,20,000
संचय एवं आधिक्य (Reserves and Surplus)—	
सामान्य संचय	1,20,000
पूँजी संचय	75,000
प्रतिभूति प्रब्याजि (Securities Premium)	25,000
लाभ एवं हानि खाता	2,00,000
रक्षित ऋण (Secured Loan)—	
12% अंशतः परिवर्तनशील ऋणपत्र दर ₹ 100 प्रति	5,00,000

1 अप्रैल, 2012 पर कम्पनी ने 90,000 समता अंशों पर ₹ 2 प्रति अंश की अंतिम याचना की। याचना राशि कम्पनी ने 20 अप्रैल, 2012 को प्राप्त की। इसके पश्चात् कम्पनी ने निर्णय लिया कि प्रत्येक चार धारित अंशों हेतु एक अंश की दर पर बोनस के माध्यम द्वारा अपने संचयों का पूँजीकरण किया जाये। ₹ 25,000 की प्रतिभूति प्रब्याजि में, एकीकरण की योजना के तहत विक्रेताओं को निर्गमित अंशों के लिए ₹ 5,000 का एक प्रब्याजि शामिल है। संयंत्र एवं मशीनरी की बिक्री पर अर्जित ₹ 40,000 का लाभ पूँजी संचय में शामिल है। 12% ऋणपत्रों के 20% का परिवर्तन 1 जुलाई, 2012 पर, ₹ 10 प्रति वाले पूर्णदत्त समता अंशों में होना है।

कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक प्रविष्टियाँ दर्शाएं तथा बोनस निर्गमन के तुरन्त पश्चात् लेकिन ऋणपत्रों के परिवर्तन के पूर्व चिट्ठे का सार प्रस्तुत कीजिए। क्या परिवर्तनीय ऋणपत्रधारी बोनस अंशों के अधिकारी हैं?

समाधान (Solution)

सॉलिड लिमिटेड की पंजी प्रविष्टियाँ
(Solid Ltd. Journal Entries)

		Dr.	Cr.
2012		₹	₹
1 अप्रैल	समता अंश अन्तिम कॉल खाता समता अंश पूँजी खाते से (तिथि पर बोर्ड के प्रस्ताव के अनुसार देय 90,000 समता अंशों पर ₹ 2 प्रति अंश के अन्तिम कॉल)	Dr. 1,80,000	1,80,000
20 अप्रैल	बैंक खाता समता अंश अन्तिम कॉल खाते से (प्राप्त 90,000 समता अंशों पर अन्तिम कॉल मुद्रा)	Dr. 1,80,000	1,80,000
	पूँजी संचिति खाता	Dr. 40,000	
	प्रतिभूति प्रीमियम खाता	Dr. 20,000	
	सामान्य संचिति खाता	Dr. 1,20,000	
	लाभ तथा हानि खाता	Dr. 45,000	
	अंशधारियों के खातों के बोनस से (तिथि पर बोर्ड के प्रस्ताव के अनुसार विभिन्न संचितियों का योग द्वारा धारित प्रत्येक चार अंशों के लिये एक अंश पर बोनस निर्गमन)		2,25,000
20 अप्रैल	अंशधारियों के खाते को बोनस समता अंश पूँजी खाते से (लाभ का पूँजीकरण)	Dr. 2,25,000	2,25,000

30 अप्रैल, 2012 को चिह्न (सार) (बोनस निर्गमन पश्चात्)

[Balance Sheet (Extract) as on 30th April, 2012 (after bonus issue)]

	विवरण	टिप्पण	राशि (₹)
1.	समता तथा दायित्व (Equity and liabilities)		
	अंशधारियों की निधि (Shareholders' funds)		
(a)	अंश पूँजी	1	12,05,000
(b)	आरक्षित तथा आधिक्य	2	1,95,000
2.	अप्रचलित दायित्व (Non-current liabilities)		
(a)	अल्प-अवधि ऋण	3	5,00,000
	कुल		19,00,000

लेखों के टिप्पण (Notes to Accounts)

1.	अंश पूँजी	
	समता अंश पूँजी	
	अधिकृत अंश पूँजी	
	प्रत्येक ₹ 10 के 1,25,000 समता अंश	<u>12,50,000</u>
	निर्गमित, माँगे तथा पूर्ण देय अंश पूँजी प्रत्येक ₹ 10 के 1,12,500 समता अंश, पूर्ण देय (उपरोक्त में से, प्रत्येक ₹ 10 के 22,500 समता अंश बोनस के द्वारा निर्गमित किये गये)	
	(A)	11,25,000
	पूर्वाधिकार अंश पूँजी	
	अधिकृत अंश पूँजी	
	प्रत्येक ₹ 10 के 10,000 12% पूर्वाधिकार अंश	<u>1,00,000</u>
	निर्गमित माँगे गये तथा पूर्व देय अंश पूँजी प्रत्येक ₹ 10 के 8,000, 12% पूर्वाधिकार अंश	<u>80,000</u>
	(B)	
	कुल (A + B)	<u>12,05,000</u>
2	संचिति तथा आधिक्य (Reserves and Surplus)	
	पूँजी संचिति	75,000
	प्रतिभूति प्रीमियम आरक्षिति	<u>(40,000)</u>
	आधिक्य (लाभ तथा हानि खाता)	25,000
	Less: Utilised for bonus issue	<u>(20,000)</u>
	General reserve	1,20,000
	Less: Utilised for bonus issue	<u>(1,20,000)</u>
	Profit & Loss Account	2,00,000
	Less: Utilised for bonus issue	<u>(45,000)</u>
	कुल	<u>1,95,000</u>
3	दीर्घ अवधि ऋण (Long-term borrowings)	
	रक्षित	
	प्रत्येक ₹ 100 की दर पर रक्षित 12% परिवर्तनीय ऋणपत्र (उपरोक्त में से, प्रत्येक ₹ 100 की दर पर 1,000 ऋणपत्र, 1 जुलाई, 2011 को प्रत्येक ₹ 10 की दर पर 10,000 समता अंशों में परिवर्तित किये)	<u>5,00,000</u>
	कुल	<u>5,00,000</u>

कार्यात्मक टिप्पणी (Notes)—

1. नकद में वसूल पूँजी संचय, पूर्ण दत्त बोनस अंशों के निर्गमन हेतु उपयोग किया जा सकता है।
2. सेबी मार्गनिर्देशों के अनुसार, सिर्फ नकद में संगृहीत प्रतिभूति प्रब्याजि का ही उपयोग बोनस निर्गमन हेतु किया जा सकता है।
3. यह माना गया है, कि कम्पनी ने अपनी सामान्य सभा में अधिकृत पूँजी को बढ़ाने हेतु आवश्यक प्रस्ताव पारित कर लिया है। पूर्वानुमान में, अधिकृत पूँजी में अपेक्षित वृद्धि अग्रनुसार की गयी है—

अधिकृत रूप में समता अंशों की मौजूदा संख्या	1,00,000*
जोड़ें—समता अंशधारियों को निर्गमित बोनस अंशों का निर्गमन	22,500
जोड़ें—ऋणधारियों को परिवर्तन के बाद निर्गमित बोनस अंशों की संख्या	<u>2,500</u>

1,25,000

* इस आंकड़े में ऋणपत्रों के परिवर्तन हेतु आवश्यक अंशों की संख्या शामिल है।

4. सेबी मार्गदर्शिका के पैरा (ii) के अनुसार, कोई भी कम्पनी परिवर्तनशील ऋणपत्रधारियों को समान लाभ दिए बिना अपने अंशधारकों को बोनस अंशों का निर्गमन नहीं कर सकती है। यदि ऐसा परिवर्तन विचाराधीन है, अंशों की आवश्यक संख्या परिवर्तनीय ऋणपत्रधारियों के लिए निर्धारित (निश्चित) कर दिए जाने चाहिए। इसलिए, परिवर्तनीय ऋणपत्रधारियों को भी समता अंशधारियों के समरूप उसी अनुपात में बोनस अंशों को प्राप्त करने का अधिकार है।

सारांश

(SUMMARY)

- बोनस निर्गमन का अर्थ है मौजूदा अंशधारकों को मुक्त अतिरिक्त अंशों का एक प्रस्ताव। एक कम्पनी लाभांश भुगतान में वृद्धि के एक विकल्प के रूप में अतिरिक्त अंशों के वितरण का निर्णय ले सकती है।
- बोनस निर्गमन को “प्रतिभूतिपत्र निर्गमन” या “पूँजीकरण निर्गमन” के रूप में भी जाना जाता है।
- बोनस निर्गमन के प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित हैं—
 - ◆ बोनस निर्गमन अनुपात के अनुसार अंश पूँजी में वृद्धि होती है।
 - ◆ स्टॉक वृद्धि में तरलता।
 - ◆ प्रभावी प्रति अंश आय, पुस्तक मूल्य एवं अन्य प्रति अंश मूल्यों में स्थिर कमी।
 - ◆ बाजार द्वारा सामान्यतः अनुकूल प्रदर्शन के रूप में कार्यवाही।
 - ◆ बोनस अंशों के निर्गमन पर बाजार मूल्य में समायोजन होना।
 - ◆ एकत्रित लाभों में कमी आना।

- बोनस अंशों का निर्गमन निम्न में से किया जा सकता है—
 - ♦ सामान्य संचय
 - ♦ नकद में संगृहीत पूँजी संचय
 - ♦ नकद में संगृहीत प्रतिभूति प्रब्याजि
 - ♦ Capital Redemption Reserve
 - ♦ लाभ-हानि खाता

5

आंतरिक पुनर्निर्माण

[INTERNAL RECONSTRUCTION]

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के उपरांत, आप सक्षम हो जायेंगे—

- “पुनर्निर्माण” शब्द का अर्थ समझने में।
- अंशों के उप-विभाजन (Sub-divide) एवं समेकन (Consolidate) में।
- अंशों के स्टॉक में एवं स्टॉक के अंशों में बदलने में।
- आंतरिक पुनर्निर्माण के समय पर समायोजनों के लेखे करने में।

1. पुनर्निर्माण का अर्थ

(MEANING OF RECONSTRUCTION)

जब एक कम्पनी में लगातार कई वर्षों से हानि कि स्थिति बनी हुई हो, कम्पनी के स्थिति विवरण, वित्तीय स्थिति के सत्य एवं सही दृश्य नहीं दर्शाते हों। ऐसी कम्पनी में सम्पत्तियों का अधिमूल्य रहता है, चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में काल्पनिक (अवास्तविक) सम्पत्तियाँ, अनुपयोगी अमूर्त सम्पत्तियाँ तथा लाभ और हानि खाते का विकलन (Debit) शेष होता है। ऐसी स्थिति में वित्तीय विवरण सही चित्रण प्रस्तुत नहीं करते हैं तथा वास्तविक शुद्ध सम्पत्ति (जो उचित होनी चाहिए) से अधिक शुद्ध सम्पत्ति दर्शाते हैं। संक्षेप में कम्पनी अति-पूँजीकृत हो जाती है। ऐसी स्थिति में पुनर्निर्माण की आवश्यकता होती है।

पुनर्निर्माण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा सम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन, दायित्वों के पुनःनिर्धारण द्वारा तथा अंशों के चुकता मूल्य को कम करके या/और अंशों के विभिन्न वर्गों से जुड़े अधिकारों में परिवर्तन द्वारा पूर्व में उठाई गयी हानियों को अपलिखित करके एक कम्पनी के मामलों को पुनर्गठित किया जाता है। पुनर्निर्माण का उद्देश्य आमतौर पर पूँजी का पुनर्गठन करना या लेनदारों के साथ समझौते करना या अर्थव्यवस्था को प्रभावित करना रहता है। इस तरह की प्रक्रिया आंतरिक पुनर्निर्माण कहलाती है, जिसको कम्पनी के समापन किये बिना एक नई कम्पनी बनाकर किया जाता है। तथापि, बाह्य पुनर्निर्माण भी किया जा सकता है। जब किसी संस्थान को किसी कम्पनी द्वारा लिया जा रहा हो तथा उसका हस्तान्तरण हो रहा हो,

किसी बाहरी पक्षकार को नहीं वरन् एक अन्य कम्पनी को जिसमें पर्याप्त वे ही अंशधारक हों ताकि हस्तान्तरी कम्पनी द्वारा उसको चलाया जा सके तो वह बाह्य हस्तान्तरण कहलाता है। ऐसा बाह्य हस्तान्तरण अनिवार्यतः AS-14 में 'विलयन की प्रकृति के एकीकरण' शीर्षक के अन्तर्गत समझाये गए हैं।

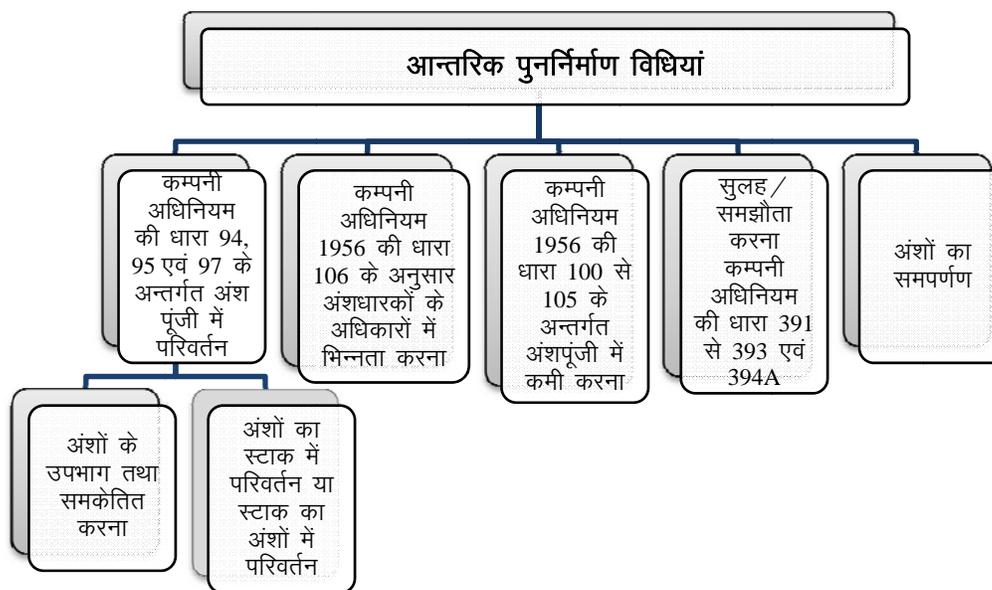
1.1 आंतरिक एवं बाह्य पुनर्निर्माण में अन्तर (Difference between Internal and External Reconstruction)

आधार (Basis)	आंतरिक पुनर्निर्माण (Internal Reconstruction)	बाह्य पुनर्निर्माण (External Reconstruction)
परिशोधन	मौजूदा कम्पनी परिशोधित नहीं होती।	मौजूदा कम्पनी परिशोधित हो जाती है।
गठन	किसी नई कम्पनी का गठन नहीं होता सिर्फ अंशधारकों एवं ऋण दाताओं के अधिकारों में परिवर्तन किया जाता है।	परिशोधित कम्पनी को संभालने हेतु नई कम्पनी का गठन किया जाता है।
पूँजी का पराभव	पूँजी का पराभव होता है तथा कई बार बाहरी देनदारों को अपने दावों में कमी करनी पड़ती है।	पूँजी का कोई पराभव नहीं होता, दरअसल यहाँ कम्पनी की नई अंश पूँजी होती है।
वैधानिक स्थिति	आंतरिक पुनर्निर्माण कम्पनी अधिनियम, 1956 के प्रावधान की धारा 100 के अंतर्गत किया जाता है।	बाह्य पुनर्निर्माण कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 494 के अंतर्गत किया जाता है।

2. आंतरिक पुनर्निर्माण की विधियाँ

(METHODS OF INTERNAL RECONSTRUCTION)

आंतरिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को परिनियोजित करने के लिए सामान्यतः निम्नलिखित विधियाँ कार्यरत हैं या एक साथ प्रयुक्त हैं—



2.1 अंश पूँजी में परिवर्तन (Alteration of Share Capital)

अंशों का उपविभाजन एवं समेकन (Sub-division and Consolidation of Shares)—यदि कम्पनी के अन्तर्नियम अनुमति प्रदान करें तो कम्पनी सामान्य सभा में निर्णय करके कम अंक के मूल्य के अंशों को अधिक मूल्य के अंशों में समेकित कर सकती है या अधिक अंकित मूल्य के अंशों में उपविभाजित कर सकती है। यदि अंश पूर्णदत्त नहीं हैं तो विभाजित अंशों में अंकित मूल्य और चुकता मूल्य का अनुपात वही होना चाहिए, जो उप-विभाजन से पहले था।

उदाहरण के लिए, ₹ 10,00,000 की पूँजी ₹ 75 पर चुकता ₹ 100 वाले 10,000 समता अंशों के साथ एक कम्पनी अपनी पूँजी को प्रत्येक ₹ 100 के समता अंश को ₹ 10 प्रति वाले 10 अंशों में विखंडन द्वारा मान्यता देने का निर्णय करती है। ऐसी स्थिति में परिणामी प्रविष्टि पारित की जायेगी—

		Dr. ₹	Cr. ₹
समता अंश पूँजी खाता (₹ 100)	Dr.	7,50,000	
सामान्य अंश पूँजी खाता से (₹ 10)			7,50,000
(तिथि पर धारित सामान्य बैंक में पारित संकल्प के अनुसार ₹ 7.50 के साथ प्रत्येक ₹ 10 के 1,00,000 अंशों में ₹ 75 के भुगतान के साथ प्रत्येक ₹ 100 के 10,000 अंशों का उप-विभाजन होने पर)			

कम मूल्य के अंशों को अधिक मूल्य के अंशों में समेकित करने एवं पूर्णदत्त अंशों को स्टॉक में परिवर्तन करने पर समान प्रविष्टि की जाएगी।

उदाहरण (Illustration) 1

31.12.2009 पर, बी लिमिटेड के पास ₹10 वाले 20,000 समता अंश अधिकृत पूँजी के रूप में थे तथा सभी अंशों का निर्गमन ₹ 8 चुकता पर हुआ था। जून 2010 में कम्पनी की सामान्य सभा में प्रत्येक अंश का उपविभाजन ₹5 वाले ₹4 चुकता के साथ करने का निर्णय लिया गया। जून 2011 में कम्पनी की सामान्य सभा में ₹5 वाले ₹4 प्रति अंश चुकता के 20 अंशों का मिश्रण ₹100 प्रत्येक ₹80 चुकता के अंशों में करने का प्रस्ताव पारित हुआ।

पंजी प्रविष्टियाँ पारित कीजिए तथा 31.12.2009, 31.12.2010 और 31.12.2011 पर आर्थिक चिट्ठे में अंश पूँजी को कैसे दर्शायेंगे।

समाधान (Solution)**Journal Entries**

			₹	₹
जून, 2010	समता अंश पूँजी (₹ 10) खाता समता अंश पूँजी (₹ 5) खाते से (तिथि की सामान्य बैठक में प्रस्ताव द्वारा ₹ 4 के देय के साथ प्रत्येक ₹ 5 के 40,000 अंशों में ₹ 8 के भुगतान के साथ ₹ 10 के 20,000 अंशों का उपखण्डन होते हुए)	Dr.	1,60,000	1,60,000
जून, 2011	समता अंश पूँजी (₹ 5) खाता समता अंश पूँजी (₹ 100) खाते से (तिथि की सामान्य बैठक में प्रस्ताव द्वारा ₹ 80 के देय के साथ प्रत्येक ₹ 100 के 2,000 अंशों में ₹ 4 के भुगतान के साथ ₹ 5 के 40,000 अंशों का उपखण्डन होते हुए)	Dr	1,60,000	1,60,000

आर्थिक चिट्ठा (शामिल)

दायित्व :	₹
31.12.2009 पर	
1. अंश पूँजी अधिकृत 20,000 समता अंश प्रत्येक ₹ 10 का जारी की गई सदस्यता :	<u>2,00,000</u>
20,000 समता अंश प्रत्येक ₹ 10 प्रत्येक अंश ₹ 8 पर बुलाया गया 31.12.10 पर	1,60,000

1. अंश पूँजी	
अधिकृत :	
40,000 समता अंश प्रत्येक ₹ 5 का जारी की गई सदस्यता	<u>2,00,000</u>
40,000 समता अंश प्रत्येक ₹ 5 का ₹ 4 अंश पर बुलाया 31.12.2011 पर	1,60,000
अंशधारियों की निधि	
अंश पूँजी	
अधिकृत :	
2,000 समता अंश प्रत्येक ₹ 100 का जारी की गई सदस्यता :	<u>2,00,000</u>
20,000 समता अंश प्रत्येक ₹ 100 का ₹ 80 प्रत्येक अंश बुलाये गये	1,60,000

टिप्पणी (Notes)—कुछ लेखाकार रकम के समान रहने पर कोई प्रविष्टि न करना पसंद करते हैं। यहाँ तक कि ये याचित हिस्से हेतु एक प्रविष्टि करते हैं, तथा अंश पूँजी के आयाचित या अनिर्गमित हिस्से के लिए नहीं करते हैं।

पूर्णदत्त अंशों का स्टॉक में एवं स्टॉक का अंशों में परिवर्तन (Conversion of fully paid up Shares into stock and Stock into Shares)—स्टॉक का अर्थ है अंश पूँजी का एक इकाई में समेकन करना जो विभाज्य भागों में बटी हो। यद्यपि अंशपूँजी का एक अंश में बदलना असंभव है, स्टॉक की किसी भी राशि को अंतरित किया जा सकता है। व्यवहार में कम्पनियों स्टॉक के अंतरण को गुणकों (जैसे-₹100 के गुणकों) तक सीमित रखती है। एक कम्पनी अपने पूर्णदत्त अंशों को स्टॉक में परिवर्तित कर सकती है [धारा 94 (c)]। कम्पनी द्वारा अंशों को स्टॉक में परिवर्तन करने के पश्चात् पुस्तपालन प्रविष्टियों में केवल अंश पूँजी का स्टॉक में अंतरण रिकार्ड किया जाता है। परन्तु एक अलग से स्टॉक लेखा रखा जाता है जिसमें सदस्यों की धारकता का विवरण रखा जाता है और इसके अन्तर्गत वार्षिक रिटर्न को संशोधित किया जाता है।

उदाहरण (Illustration) 2

31.12.2009 पर, सी लिमिटेड की अधिकृत अंश पूँजी ₹50,000, ₹100 प्रति के अंशों में विभाजित थी, जिसमें से ₹ 4,000 समता अंश निर्गमित हुए और पूर्ण चुकता हुए। जून 2010 में कम्पनी ने निर्गमित अंशों को स्टॉक में परिवर्तित करने का निर्णय लिया। परन्तु जून 2011 में कम्पनी ने स्टॉक को ₹10 प्रति पूर्ण चुकता अंशों में पुनःपरिवर्तित कर दिया। कम्पनी की सामान्य सभा में ₹5 वाले ₹4 प्रति अंश चुकता के 20 अंशों का मिश्रण ₹100 प्रत्येक ₹80 चुकता के अंशों में करने का प्रस्ताव पारित हुआ।

पंजी प्रविष्टियाँ पारित कीजिए तथा 31.12.2009, 31.12.2010 और 31.12.2011 पर आर्थिक चिट्ठे में अंश पूँजी को कैसे दर्शायेंगे।

समाधान (Solution)

सामान्य प्रविष्टियाँ

			₹	₹
जून, 2010	समता अंश पूँजी खाता समता स्कंद खाते से (तिथि की सामान्य बैठक में प्रस्ताव के अनुसार 4,00,000 समता स्टॉक में ₹ 100 के 4,000 पूर्व देय समता अंश के परिवर्तन पर)	Dr.	4,00,000	4,00,000
जून, 2011	समता भण्डार खाता समता अंश पूँजी खाते से (तिथि की सामान्य बैठक में प्रस्ताव के अनुसार ₹ 10 पूर्व देय समता अंशों के 40,000 अंशों में ₹ 4,00,000 समता अंशों का पुनः परिवर्तन होने पर)	Dr.	4,00,000	4,00,000

आर्थिक चिह्न (शामिल)

दायित्व :	₹
31.12.2009 पर	
1. अंश पूँजी अधिकृत 5,000 समता अंश प्रत्येक ₹ 100 का जारी की गई सदस्यता 4,000 समता अंश पूरी तरह से प्रत्येक ₹ 100 का	5,00,000 4,00,000
31.12.2010 पर	₹
1. अंश पूँजी अधिकृत : 5,000 समता अंश प्रत्येक 100 का जारी की गई सदस्यता : समता स्कन्ध के 4,000 समता अंश को ₹ 100 के स्कन्ध में परिवर्तन	5,00,000 4,00,000
31.12.2011 पर	₹
अंशधारियों की निधि अंश पूँजी	

अधिकृत :	
50,000 समता अंश प्रत्येक ₹ 10 का जारी की गई सदस्यता :	5,00,000
40,000 समता अंश पूरी तरह प्रत्येक ₹ 10 पर बुलाये गये	4,00,000

2.2 अंशधारियों के अधिकारों में तबदीली (Variation of Shareholders Rights)

जब किसी कम्पनी ने विभिन्न श्रेणी के अंश, जिनके साथ विभिन्न प्रकार के अधिकार या विशेषाधिकार संलग्न हों, निर्गमित किए हों, जैसे कि, लाभांश के लिए अधिकार, मतदान का अधिकार इत्यादि। ऐसे किसी भी अधिकार को, किसी भी प्रकार से परिवर्तित किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप कम्पनी वरीयता अंशों पर लाभांश की दर में परिवर्तन कर सकती है, संचयी वरीयता अंशों को अंश पूँजी की राशि बदले बिना, गैर संचयी वरीयता अंशों में परिवर्तित कर सकती है।

- (a) Debit (Old)% Cum. Pref. Share Capital Account
Credit (New)% Cum. Pref. Share Capital Account
- (b) Debit% Cum. Pref. Share Capital Account
Credit.....% Non-cum. Pref. Share Capital Account

2.3 अंश पूँजी में कमी (Reduction of Share Capital)

कम्पनी अधिनियम की धारा 100 अंश पूँजी में पराभव की प्रक्रिया को निर्धारित करती है। यह करने का एक तरीका है प्रदत्त पूँजी को कम करना। वास्तविकता में, कम्पनी की सम्पत्ति, उस अंश पूँजी को नहीं दर्शाती जो दीर्घ समय से हानि उठा रही हो। ऐसी अवस्था में पूँजी पराभव की किसी भी योजना द्वारा लॉस्ट पूँजी का अपलेखन करना चाहिए।

यह पराभव अंशधारियों को भुगतना होगा तथा पराभव की राशि को Capital reduction account अथवा Reconstruction account में क्रेडिट कर दिया जाता है।

- (a) सिर्फ चुकता मूल्य में कमी—यहाँ अंश का अंकित मूल्य एकसमान ही रहता है और सिर्फ चुकता मूल्य ही कम होता है। उदाहरण हेतु ₹100 प्रति अंश की चुकता पूँजी को ₹10 प्रति अंश चुकता मूल्य तक घटाने पर अंशधारी सहमत हो सकते हैं। ₹90 का त्याग है तथा प्रविष्टि होगी—
- | | |
|---------------------|------------------------------|
| अंश पूँजी खाता | Dr. (₹ 90 × अंशों की संख्या) |
| पूँजी ह्रास खाते से | (₹ 90 × अंशों की संख्या) |
- (b) चुकता तथा अंकित दोनों मूल्यों में कमी—इस दशा में, चुकता पूँजी एवं अंशों का अंकित मूल्य दोनों ही कम हो रहे हैं। उपर्युक्त उदाहरण को जारी रखते हुए, प्रविष्टि होगी—
- | | |
|----------------------------|-------------------------------|
| अंश पूँजी खाता (₹ 100 अंश) | Dr. (₹ 100 × अंशों की संख्या) |
| अंश पूँजी से (₹ 10 अंश) | (₹ 10 × अंशों की संख्या) |
| पूँजी ह्रास खाता से | (₹ 90 × अंशों की संख्या) |

इस प्रकार इस तरह के उपचार में वास्तविक अंश पूँजी खाते को बंद करने के रूप में नाम (डेबिट) करेंगे। चुकता के रूप में उपचारित राशि के साथ नए अंश पूँजी खाते को जमा (क्रेडिट) करेंगे; तथा अन्तर कि राशि से पूँजी कम खाता जमा (क्रेडिट) करेंगे।

2.4 समझौता/व्यवस्था (Compromise/Arrangement)

समझौता तथा व्यवस्था की योजना एक कम्पनी और उसके सदस्यों एवं उसके बाहरी दायित्वों के बीच अनुबंध बताती है, जब कम्पनी का वित्तीय समस्याओं से सामना होता है। इस प्रक्रिया में अंशधारकों, देनदारों, ऋणपत्र धारकों अथवा सभी के द्वारा हानि सहना शामिल है। कुछ दशाओं हेतु, लेखांकन उपचार निम्नलिखित हैं—

- (1) जब इक्विटी अंश धारक अपने संचय एवं संचित लाभ के अधिकार को त्यागते हैं।

प्रविष्टि—संचय खाता

Dr. संचय राशि के साथ

पुनर्निर्माण खाते से

- (2) बाहरी दायित्वों का कम राशि पर समाधान दायित्वों जैसे कि विविध लेनदार, अंतिम भुगतान के रूप में कम राशि स्वीकार करने को सहमत हो सकते हैं इसका उपचार निम्नानुसार किया जायेगा—

प्रविष्टि—बाहरी दायित्व खाता

Dr. त्याग की गई राशि के साथ

प्रावधान खाते में यदि हो

Dr. लेनदारों द्वारा बनाई गई

पुनर्निर्माण खाते से

2.5 अंशों का समर्पण (Surrender of Shares)

अंशधारकों द्वारा अंशों को समर्पण किया जाता है। इन अंशों को फिर ऋणपत्र धारकों एवं देनदारों को आबंटित कर दिये जाते हैं, जिससे उनके दायित्व कम किए जा सकें। बचे हुए समर्पित अंशों को रद्द कर दिया जाता है।

3. आंतरिक पुनर्निर्माण की दशा में प्रविष्टियाँ

(ENTRIES IN CASE OF INTERNAL RECONSTRUCTION)

पुनर्निर्माण की योजना के लागू हो जाने पर न्यायालय द्वारा विशेष प्रस्ताव की सम्पुष्टि के माध्यम से निम्न लेखे बनाए जायेंगे—

- (1) किसी संपत्ति के मूल्य में कोई वृद्धि या किसी दायित्व की राशि में कमी को सम्बद्ध खाते में डेबिट करें तथा पूँजी कटौती खाते को क्रेडिट करें।
- (2) सभी नाम मात्र की संपत्तियों के खाते अपलिखित करें (ख्याति तथा पेटेन्टों सहित) तथा सम्बद्ध खातों को क्रेडिट करके सम्पत्तियों के अधिमूल्यन को दूर करें और पूँजी कटौती खाता या (पुनर्निर्माण खाता) डेबिट करें। इस उद्देश्य के लिए कम्पनी की पुस्तकों में किसी भी संचय को काम में लाया जा सकता है।

यदि पूंजी कटौती खाते में कोई शेष बचता है तो उसे पूंजी खाते में अन्तरित कर दिया जाना चाहिए। पुनर्निर्मित कम्पनी का चिट्ठा तैयार करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए—

- (a) कम्पनी के नाम के पश्चात् शब्द “and reduced” जोड़ा जाना चाहिए, यदि न्यायालय ऐसा आदेश दे तो।
- (b) स्थायी सम्पत्तियों की दशा में, पुनर्निर्माण योजना के अन्तर्गत अपलिखित राशि को पाँच तक दिखाया जाना चाहिए।

उदाहरण (Illustration) 3

निम्न ABC लि. का वर्ष अन्त 31 मार्च, 2012 का प्रारूप तलपट है।

देयताएं	₹	सम्पत्तियां	₹
अंश पूंजी		संयन्त्र तथा मशीनरी	9,00,000
2,00,000 समता अंश ₹ 10		फिक्सचर एवं फर्नीचर	2,50,000
प्रति पूर्णतया प्रदत्त	20,00,000	पेटेन्ट एवं कॉपीराइट्स	70,000
6,000 9% प्राथमिक		निवेश (लागत पर)	68,000
अंश ₹ 100 प्रति	6,00,000	(बाजार भाव मूल्य ₹ 55,000	
9% ऋणपत्र	12,00,000	स्कन्ध	14,00,000
बैंक से अधिक विकास	1,50,000	व्यापारिक प्राप्य	14,39,000
व्यापारिक देयताएं	5,92,000	नकद तथा बैंक बकाया	10,000
		लाभ-हानि खाता	4,05,000
	45,42,000		45,42,000

पुनर्निर्माण की निम्न योजना की अन्तिम रूप दिया गया।

1. प्राथमिकता अंशधारक अपनी पूंजी का 31% को छोड़ देंगे और उसके बदले उन्हें 11% के ऋणपत्र आबंटित किए जाएंगे।
2. ऋणपत्र धारक जिनका संयन्त्र एवं मशीनरी पर दावा है वह संयन्त्र और मशीनरी को अपने दावों के पूर्ण निपटारे के रूप में स्वीकार करेंगे।
3. ₹ 5,00,000 के सम के माल को व्यापारिक लेनदार अपने दावों के निपटारे के रूप में स्वीकार कर लेंगे।
4. निवेश की मूल्य को घटाकर बाजार भाव कर दिया जाएगा।
5. कम्पनी ₹ 3,00,000 के 11% के ऋणपत्र जारी करेगी जब वह बैंक का ऊपरी निकास निपटा लेगी।

उपरोक्त को दर्शाने के लिए पूंजी प्रविष्टियां कीजिए जिसमें कम्पनी की पुनर्निर्माण योजना ABC कं. लि. के लेखा पुस्तकों में दिखाया जा सके।

समाधान (Solution)

ABC Ltd. की लेखा पुस्तक पूंजी प्रविष्टियां

विवरण		₹	₹
8% प्राथमिकता अंश पूंजी खाता प्राथमिकता अंशधारकों का खाता पूंजी में कमी खाता (30% कमी देयता में प्राथमिकता अंश पूंजी में)	Dr.	6,00,000	4,20,000 1,80,000
प्राथमिकता अंशधारकों का खाता 11% ऋणपत्र खाता (प्राथमिकता अंशधारकों को ऋणपत्र जारी किए)	Dr.	4,20,000	4,20,000
9% ऋणपत्र खाता ऋणपत्र धारकों का खाता (9% ऋणपत्रों को ऋणपत्र धारकों के खाते में हस्तान्तरण)	Dr.	12,00,000	12,00,000
ऋणपत्र धारकों का खाता संयन्त्र मशीनरी खाता पूंजी में कमी खाता (ऋणपत्र धारकों की निपटारा संयन्त्र एवं मशीनरी के आबंटन द्वारा)	Dr.	12,00,000	9,00,000 3,00,000
व्यापारिक देनदारी खाता स्कन्ध खाता पूंजी में कमी खाता (लेनदारी का निपटारा माल द्वारा)	Dr.	5,92,000	5,00,000 92,000
Bank A/c To 11% Debentures A/c (Being fresh issue of debentures)	Dr.	3,00,000	3,00,000
बैंक उपरी निकास खाता बैंक खाता बैंक उपरी निकास का निपटारा	Dr.	1,50,000	1,50,000
पूंजी में कमी खाता निवेश खाता लाभ-हानि खाता पूंजी कोष खाता (निवेश तथा लाभ-हानि खाते में कमी और पूंजी में कमी खाते के बकाया को पूंजी संचय कोष में हस्तांतरित किया।)	Dr.	5,72,000	13,000 4,05,000 1,54,000

उदाहरण (Illustration) 4

A एण्ड कं. लि. का चिह्न 31.12.2011 के निम्न है।

सम्पत्तियां	₹	₹
स्थिर सम्पत्तियां	4,25,000	
संयन्त्र	50,000	
पेटेन्ट	37,500	
साख	<u>1,30,000</u>	6,42,000
व्यापारिक निवेश (लागत मूल्य पर)		55,000
चालू सम्पत्तियां		
देनदार	4,85,000	
माल	4,25,000	
रोके हुए विज्ञापन	<u>1,00,000</u>	10,10,000
लाभ-हानि खाता		<u>4,35,000</u>
जोड़		<u>21,42,000</u>
देयताएं		
अंशपूंजी		
4,000, 6% संचयी प्राथमिकता अंश ₹ 10 प्रति	4,00,000	
75,000 समता अंश ₹ 10 प्रति	<u>7,50,000</u>	11,50,000
6% ऋणपत्र (स्वामित्व वाली सम्पत्ति संरक्षित)	3,75,000	
अर्जित ब्याज	<u>22,500</u>	3,97,500
चालू देयताएं		
बैंक उपरी निकास	1,95,000	
लेनदार	3,00,000	
निदेशकों का कर्ज	<u>1,00,000</u>	<u>5,95,000</u>
जोड़		<u>21,42,000</u>

न्यायलाय ने पुनर्गठन की एक योजना की सहमति प्रदान जो कि 01.01.2012 से प्रभावी होगी और उसके फलस्वरूप :

- प्राथमिकता अंशों का मूल्य ₹ से कम कर ₹ 75 कर दिया जाएगा तथा समता अंशों का मूल्य ₹ 10 से कम कर ₹ 2 प्रति अंश कर दिया जाएगा।
- प्राथमिकता अंशों पर जो पिछले चार साल का अंश लाभ बकाया है उसका $\frac{3}{4}$ हिस्सा समाप्त कर दिया जाएगा तथा बकाया $\frac{1}{4}$ भाग का भुगतान ₹ 2 के समता अंशों द्वारा किया जाएगा।

- (iii) ऋणपत्रों पर अर्जित ब्याज का भुगतान नकद में होगा।
- (iv) ऋणपत्र धारक पुनर्स्वामित्व वाली सम्पत्ति जिसका लेखा पुस्तक मूल्य ₹ 1,00,000 को ₹ 1,20,000 में अपने हिस्से के भुगतान के रूप लेने को सहमत हो गए और वह ₹ 1,30,000 की नकद रोकड़ देने के लिए सहमत हुए जिसके लिए प्रवाही प्रभार कम्पनी की सम्पत्तियों पर सुरक्षा के लिए जिस पर 8% का वार्षिक ब्याज देय होगा।
- (v) पेटेन्ट्स, साख, तथा रोककर रखी विज्ञापन राशि को समाप्त किया जाएगा।
- (vi) माल का मूल्य ₹ 65,000 से कम कर दिया जाएगा।
- (vii) खराब कर्ज के लिए ₹ 68,500 का प्रावधान किया जाएगा।
- (viii) बाकी बची हुई पूर्ण स्वामित्व वाली सम्पत्ति का ₹ 3,87,500 पर पुनः मूल्यांकन किया जाएगा।
- (ix) व्यापारिक निवेश को ₹ 1,40,000 पर बेचा जाएगा।
- (x) निदेशक अपने कर्जों के 90% का निपटारा ₹ 2 प्रति के अंश अस्वीकार करने होंगे तथा 5% नकद रूप में तथा बकाया 5% को समाप्त कर दिया जाएगा।
- (xi) ₹ 2,50,000 की पूंजी की वचनबद्धता थी। यह अनुबन्ध उसके मूल्य का 5% का जुर्माना देकर निरस्त कर दिए जाएंगे।
- (xii) योजना पर लागत तथा करों का ध्यान न करें।

आप उपरोक्त व्यवहारों को दर्शाने हेतु जिसमें नकद व्यवहार भी समाहित है के लिए पूंजी प्रविष्टियां करने की प्रार्थना की जाती है तथा योजना पूरी हो जाने पर कम्पनी का तलपट बनाओ।

समाधान (Solution)

पंजी A & Co. Ltd.

		Dr. ₹	Cr. ₹
2011 31 दिसम्बर	समता अंश पूंजी खाता (₹ 10) पूंजी में कमी खाता समता अंश पूंजी खाते (₹ 2) (पुनर्निर्माण योजना के अधीन (₹10 वाले समता अंश ₹ 2 को हो गये)	Dr. 7,50,000	6,00,000 1,50,000
	6% संचित प्राथमिकता अंश पूंजी खाता (₹ 100) पूंजी कमी खाता पूर्वाधिकार अंश खाते से (₹ 75) (पुनर्निर्माण योजना के अधीन ₹ 100 वाले प्राथमिकता ₹ 75 प्रति अंश हो जाएंगे)	Dr. 4,00,000	1,00,000 3,00,000

2011 31 दिसम्बर	पूर्ण स्वामित्व वाली सम्पत्तियां खाता	Dr.	82,500	
	पूँजी कमी खाता			82,500
	सम्पत्ति के मूल्य में वृद्धि			
	अंकित मूल्य			
	पुनर्मूल्यांकन आंकड़े			
	₹ 1,00,000		₹ 1,20,000	
	₹ 3,25,000		₹ 3,87,500	
योग		₹ 4,25,000	₹ 5,07,500	
पुनर्मूल्यांकन पर लाभ ₹ 82,500)				
	6% ऋणपत्र खाता	Dr.	1,20,000	
	पूर्ण स्वामी तब सम्पत्ति खाता			1,20,000
	ऋणपत्र धारकों के दावे आंशिक रूप में मुक्त सम्पत्ति के हस्तान्तरण पुनर्निर्माण योजना के अधीन			
	अर्जित ब्याज खाता	Dr.	22,500	
	बैंक खाता			22,500
	ऋणपत्रों का ब्याज दिया			
	बैंक खाता	Dr.	1,30,000	
	8% ऋणपत्र खाता			1,30,000
	(8% ऋणपत्र नकद पर जारी किए)			
	बैंक खाता	Dr.	1,40,000	
	व्यापारिक विनियोग खाता			55,000
	पूँजी कमी खाता			85,000
	(व्यापारिक निवेश की बिक्री ₹ 1,40,000 पर जिसकी लागत ₹ 55,000 लाभ की पूँजी कमी खाते में जमा किया)			
	निर्देशकों का कर्ज खाता	Dr.	1,00,000	
	समता अंश पूँजी खाता			90,000
	बैंक खाता			5,000
	पूँजी कमी खाता			5,000
	(निर्देशक के कर्ज का निपटारा समता अंश ₹ 90,000, के देकर तथा ₹ 5,000, नकद और ₹ 5,000 के समर्पण द्वारा पुनर्निर्माण योजना के अधीन)			

पूँजी में कमी खाता	Dr.	8,48,500	
पेटेन्ट्स			37,500
साख			1,30,000
रोके गए विज्ञापन			1,00,000
माल			65,000
खराब कर्जों का प्रावधान			68,500
बैंक			12,500
लाभ-हानि खाता			4,35,000
(पेटेन्ट्स, साख, रोके गए विज्ञापन, लाभ-हानि खाता और माल के मूल्य की कमी खराब कर्ज के लिए प्रावधान तथा पूँजीगत वचनबद्धता का निरस्त खाता)			

A एण्ड कम्पनी का चिह्न (और कमी) 1 जनवरी, 2012 पर

विवरण		टिप्पणी	₹
समता और दायित्व			
1	अंशधारियों की निधि		
(a)	अंश पूँजी	1	5,64,000
2.	अचल दायित्व		
(a)	दीर्घ अवधि ऋण	2	3,85,000
3.	चालू दायित्व		
(a)	व्यापार देयता		<u>3,00,000</u>
			योग
			12,49,000
सम्पत्ति			
1.	अप्रचलित सम्पत्ति		
(a)	स्थायी सम्पत्ति		
	वास्तविक सम्पत्ति	3	4,37,500
	अप्रत्यक्ष सम्पत्ति	4	—
2.	चालू सम्पत्ति		
(a)	स्कन्ध		3,60,000
(b)	व्यापार प्राप्तियाँ	5	4,16,500
(c)	नकद और नकदी समकक्ष		35,000
			योग
			<u>12,49,000</u>

लेखों की टिप्पणी

1.	अंश पूंजी			
	समता अंश पूंजी ₹ 1,32,000 समता अंश प्रत्येक ₹ 2 का (इसमें से 45,000 अंश प्रतिफल जो कि नकद के अलावा है जारी किए हैं) पूर्वाधिकार अंश पूंजी 4,000 का 6% पूर्वाधिकार अंश ₹ 75 प्रत्येक			2,64,000
				<u>3,00,000</u>
		योग		<u>5,64,000</u>
2.	दीर्घ अवधि ऋण सुरक्षित 6% ऋणपत्र 8% ऋणपत्र			2,55,000
				<u>1,30,000</u>
		योग		<u>3,85,000</u>
3.	मूर्त सम्पत्तियां अप्रचलित सम्पत्तियां मूर्त सम्पत्ति—पूर्ण स्वामित्व सम्पत्ति जमा पुनर्निर्माण योजना के अधीन वृद्धि घटा—निस्तारण संयन्त्र पेटेन्ट्स घटा, पुनर्निर्माण योजना के अधीन समाप्त किया आगे ले जाने का शुद्ध ढुलाई मूल्य		4,25,000 82,500 <u>(1,20,000)</u> 37,500	3,87,500 50,000
			<u>(37,500)</u>	<u>4,37,500</u>
4.	अमूर्त सम्पत्ति साख घटा—पुनर्निर्माण योजना के अधीन समाप्त किया आगे ले जाने का शुद्ध ढुलाई मूल्य		1,30,000 <u>(1,30,000)</u> —	—
5.	व्यापार प्राप्य व्यापार प्राप्य घटा खराब कर्ज के लिए प्रावधान		4,85,000 <u>(68,500)</u>	<u>4,16,500</u>

उदाहरण (Illustration) 5

नीचे रिबिल्ट लिमिटेड का संक्षिप्त तलपट 31-3-2012 का है।

रिबिल्ट लिमिटेड तलपट 31 मार्च, 2012

देयताएं	राशि (₹)	सम्पत्तियां	राशि (₹)
अधिकृत एवं जारी पूंजी		भवन लागत पर घटा ह्रास	4,00,000
12,000 7% प्राथमिकता अंश ₹ 50 (प्राथमिकता अंश लाभ पिछले प्राप्य साल का बकाया है)	6,00,000	संयन्त्र लागत पर घटा ह्रास	2,68,000
15,000 समता अंश ₹ 50 प्रति	7,50,000	ट्रेडमार्क तथा साख लागत पर	3,18,000
	13,50,000	माल	4,00,000
कर्ज	5,73,000	देनदार	3,28,000
लेनदार	2,07,000	लाभ-हानि खाता	4,51,000
अन्य देयताएं	35,000		
	<u>21,65,000</u>		<u>21,65,000</u>

अब कम्पनी अपनी कार्यशील पूंजी का आवश्यकता से कम लाभ कमा रही है तथा दोनों श्रेणियों के अंशधारकों ने एक पुनर्निर्माण योजना की स्वीकृति प्रदान की है। इस स्कीम को संक्षेप में नीचे दिया जा रहा है।

- अंशधारक इस बात के लिए तत्पर और सहमत है कि ₹ 50 वाले अंश का मूल्य अब ₹ 2.50 कर दिया जाए तथा उसके बकाया ₹ 47.50 की निरस्त कर दिया जाना चाहिए। वह इसके लिए सहमत हो गए हैं कि अपने प्रत्येक समता अंश के लिए उनके समता अंश ₹ 2.50 प्रति ले लेंगे।
- प्राथमिकता अंशधारक इस बात पर सहमत हो गये हैं कि वह अपने पुराने अंश लाभ की जमा को निरस्त कर देंगे तथा अपने ₹ 50 वाले प्रत्येक अंश के बदले में 4 नये 5% प्राथमिकता अंश ₹ 10 प्रति वाले स्वीकार कर लेंगे तथा इसके अतिरिक्त 6 नए समता अंश प्रति 2.50 भी उनके खाते में पूर्णतया प्रदत्त रूप में जमा किए जाएंगे।
- कम्पनी को कर्ज देने वाले देनदार इस बात पर सहमत हो गए हैं कि वह अपने ₹ 1,50,000 की कर्ज राशि के बदले 12,000 नए प्राथमिकता अंश ₹ 10 प्रति तथा 12,000 नए समता अंश ₹ 2.50 प्रति स्वीकार कर लेंगे।
- कम्पनी के निर्देशक इस बात के लिए सहमत हो गये हैं कि वह नकद में ₹ 40,000 नए समता अंश ₹ 2.50 प्रति को अदत्त करेंगे तथा इसके अतिरिक्त वह उपरोक्त (a) में दिए गए अन्य अंशों को भी अदत्त करेंगे।
- नये अंशों के निर्गम से प्राप्त रोकड़ में से ₹ 2,00,000 का उपयोग कम्पनी द्वारा अपने कर्ज को कम करने के लिए किया जाएगा।

(f) समता अंश पूँजी जिस को निरस्त किया गया है इस निम्न के लिए उपयोग किया जाएगा।

- (i) लाभ-हानि खाते में जो देनदारी बकाया है उस समाप्त करने के लिए
- (ii) संयन्त्र के मूल्य में से ₹ 35,000 के समापन के लिए

यदि इसके बाद कोई राशि बाकी रहती है तो उसका उपयोग ट्रेडमार्क तथा साख के मूल्य को कम करने के लिए किया जाएगा पूँजी प्रविष्टियां कर को दिखाओ कि कम्पनी की वित्तीय पुस्तकों पर पुनर्निर्माण का क्या प्रभाव पड़ेगा तथा पुनर्निर्माण के उपरान्त कम्पनी का तलपट बनाओ। मूल पूँजी जिसे घटा दिया गया है उसे बढ़ा कर प्राथमिकता अंश पूँजी ₹ 6,50,000 तथा समता अंश पूँजी के ₹ 7,50,000 कर दिया जाए।

समाधान (Solution)

रिबिल्ट लि. की लेखा पुस्तक पूँजी प्रविष्टियां

	विवरण	Dr. (₹)	Cr. (₹)
1.	समता अंश पूँजी खाता (₹ 50) Dr. समता अंश पूँजी खाता (₹ 2.50) पुनर्निर्माण खाता (अंश पूँजी की कम किया मूल मूल्य ₹ 2.50 प्रति)	7,50,000	37,500 7,12,500
2.	बैंक खाता Dr. समता अंश पूँजी (3 अधिकार अंश प्रत्येक अंश के बदले जारी किए तथा अदत्त हुए)	1,12,500	1,12,500
3.	7% प्राथमिकता अंश पूँजी खाता (₹ 50) Dr. पुनर्निर्माण खाता Dr. 5% प्राथमिकता अंश (₹ 10) समता अंश पूँजी (₹ 50) (7% प्राथमिकता अंश ₹ 50 में बदला गया और प्रत्येक अंश के बदले में 6 समता अंश दिए गए)	6,00,000 60,000	4,80,000 1,80,000
4.	कर्ज खाता Dr. 5% प्राथमिकता अंश पूँजी खाता समता अंश पूँजी खाता (₹ 1,50,000 तक के कर्ज को अंश पूँजी में बदला)	1,50,000	1,20,000 30,000
5.	बैंक खाता Dr. समता अंश पूँजी खाता (निर्देशकों द्वारा अदत्त अंश)	1,00,000	1,00,000

5.18

दि इन्स्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स ऑफ इण्डिया

6.	समता अंश आवेदन राशि खाता समता अंश पूँजी खाता (आवेदन राशि पूँजी खाते को हस्तान्तरित)	Dr.	1,00,000	1,00,000
7.	कर्ज खाता बैंक खाता (कर्ज का भुगतान किया)	Dr.	2,00,000	2,00,000
8.	पुनर्निर्माण खाता लाभ-हानि खाता संयन्त्र खाता (हानि तथा सम्पत्तियां समाप्त कि गयी)	Dr.	6,52,500	4,51,000 35,000 1,66,500

रिबिल्ट लि. का चिह्न (और कम) के रूप में 31-12-2012 पर

	विवरण	टिप्पणी	₹
1.	अंश पूँजी तथा देयताएं		
	अंश धारकों का कोष		
a.	अंश पूँजी	1	10,60,000
2.	गैर चालू देयताएं		
a.	दीर्घकालीन कर्ज		2,23,000
3.	चालू देयताएं		
a.	व्यापारिक देयताएं		2,07,000
b.	अन्य चालू देयताएं		35,000
	योग		15,25,000
	सम्पत्तियां		
1.	गैर चालू सम्पत्तियां		
a.	स्थायी सम्पत्तियां		
	मूर्त सम्पत्तियां	2	6,33,000
	अमूर्त सम्पत्तियां	3	1,51,500
2.	चालू सम्पत्तियां		
a.	स्कन्ध		4,00,000
b.	व्यापारिक प्राप्त		3,28,000
c.	नकद और नकद सम	4	12,500
	योग		15,25,000

लेखा टिप्पणी

			₹
1.	अंश पूंजी – अधिकृत पूंजी		
	65,000 प्राथमिकता अंश ₹ 10 प्रति	6,50,000	
	3,00,000 समता अंश ₹ 2.50 प्रति	7,50,000	<u>14,00,000</u>
	जारी, अदत्त एवं प्रदत्त		
	1,80,000 समता अंश ₹ 2.50 प्रति	4,60,000	
	60,000, 5% प्राथमिकता अंश ₹ 10 प्रति	<u>6,00,000</u>	10,60,000
2.	मूर्त सम्पत्तियां		
	भवन लागत पर घटा ह्रास	4,00,000	
	संयन्त्र लागत पर घटा ह्रास	<u>2,33,000</u>	6,33,000
3.	अमूर्त सम्पत्तियां		
	ट्रेडमार्क एवं साख		1,51,500
4.	नकद तथा नकद सम		
	बैंक (1,12,500 + 1,00,000 – 2,00,000)		12,500

उदाहरण (Illustration) 6

रिपेयर लि. जो कि ऋणपत्र धारकों जिनका कम्पनी की सारी सम्पत्तियों पर सिवाय अन बुलायी गई अंश राशि को छोड़कर प्रभाव है उनके लिए एक प्रापक नियुक्त किया गया है। निम्न दिया गया विवरण लेनदारों की स्थिति 30 जून 2012 को दर्शाता है।

दायित्व	₹	सम्पत्ति	₹
6,000 अंश ₹ 60 प्रति ₹ 30 प्रदत्त		सम्पत्तियां, मशीन और संयन्त्र आदि (लागत ₹ 3,90,000)	
प्रथम ऋणपत्र	3,00,000	अनुमानित मूल्य	1,50,000
द्वितीय ऋणपत्र	6,00,000	प्रापक के हाथ में रोकड़	2,70,000
अवरक्षित लेनदार	4,50,000	ऋणपत्रों के अन्तर्गत प्रभार	4,20,000
		अन बुलायी गई पूंजी	1,80,000
			6,00,000
		कमी	7,50,000
	<u>13,50,000</u>		<u>13,50,000</u>

ए के पास प्रथम ऋणपत्र ₹ 3,00,000 तथा द्वितीय ऋणपत्र ₹ 3,00,000 के हैं। वह ₹ 90,000 का अन अरक्षित लेनदार है। बी के पास द्वितीय ऋणपत्र ₹ 3,00,000 के और वह ₹ 60,000 का अन अरक्षित लेनदार है।

पुनर्निर्माण की निम्न योजना प्रस्तावित है :

1. ए अपने सारी लेनदारी में से ₹ 2,10,000 का कर्ज निरस्त कर देगा और वह ₹ 30,000 नकद में लाएगा और उसके पास पहले से प्रथम ऋणपत्र निरस्त कर दिए जाएंगे और वह ₹ 5,10,000 के नए प्रथम ऋणपत्र ले लेगा और उसके दावे खत्म हो जाएंगे।
2. बी अपने सारे दावा के निपटारे के लिए नकद ₹ 90,000 स्वीकार कर लेगा।
3. अपने दावों के 75% निपटारे के लिए अन अरक्षित लेनदार (ए और बी को छोड़कर) इस बात पर सहमत हो गए कि वह अपने ₹ 60 वाले प्रत्येक अंश के बदले में चार अंश ₹ 7.50 पूर्णतया प्रदत्त स्वीकार कर लेंगे तथा बकाया 25% लेनदारी को आने वाले तीन वर्ष तक टाल दी जाएगी यह अवधि उस दिन से गिनी जाएगी जिस तिथि को न्यायालय से इस योजना को स्वीकृति मिल जाती है। मूल अंश पूंजी को इसके अनुसार बढ़ाया जाएगा।
4. अन बुलायी गयी पूंजी में पूर्ण मूल्य पर बुलाया जाए और प्रति अंश ₹ 52.50 को निरस्त कर दिया गया है और अब प्रत्येक अंश का मूल्य ₹ 7.50 है।

इस अवधारणा को मानते हुए पुनर्निर्माण योजना सभी हित धारकों तथा न्यायालय की स्वीकृति मिल जाएगी इसके लिए आवश्यक पंजी प्रविष्टियाँ कीजिए।

समाधान (Solution)

पंजी प्रविष्टियाँ

विवरण	देनदारी (₹)	लेनदारी (₹)
प्रथम ऋणपत्र खाता द्वितीय ऋणपत्र खाता अन अरक्षित लेनदार खाता ए का खाता (ए की ज्ञातव्य देयता)	Dr. Dr. Dr.	3,00,000 3,00,000 90,000
ए का खाता पुनर्निर्माण खाता (₹ 2,10,000 का कर्ज निरस्त किया)	Dr.	2,10,000 2,10,000
बैंक खाता ए का खाता (निपटारे के लिए नकद प्राप्ति)	Dr.	30,000 30,000
		6,90,000

ए का खाता प्रथम ऋणपत्र खाता (ए का देयता का निपटारा प्रथम ऋणपत्रों के बदले)	Dr.	5,10,000	5,10,000
द्वितीय ऋणपत्र खाता अन आरक्षित लेनदारों का खाता बी का खाता (बी क ज्ञातव्य देयता)	Dr. Dr.	3,00,000 60,000	3,60,000
बी का खाता बैंक खाता पुनर्निर्माण खाता (बी की देयता का निपटारा)	Dr.	3,60,000	90,000 2,70,000
अन आरक्षित लेनदार खाता समता अंश पूंजी खाता कर्ज (अन आरक्षित) खाता पुनर्निर्माण खाता (अन आरक्षित लेनदारों का निपटारा)	Dr.	3,00,000	1,12,500 75,000 1,12,500
अंश बुलावा खाता अंश पूंजी खाता (अन्तिम बुलायी गयी देय राशि)	Dr.	1,80,000	1,80,000
बैंक खाता अंश बुलावा खाता (बुलाई गई पूंजी प्राप्त हुई)	Dr.	1,80,000	1,80,000
अंश पूंजी खाता (अंकित मूल्य ₹ 60) अंश पूंजी खाता (अंकित मूल्य ₹ 7.50) पुनर्निर्माण खाता (अंश पूंजी की कम किया अब अंश ₹ 7.50 प्रति)	Dr.	3,60,000	45,000 3,15,000
पुनर्निर्माण खाता लाभ-हानि खाता (पुनर्निर्माण अधिशेष होने वाले नुकसान लिखने के लिए इस्तेमाल)	Dr.	8,70,000	8,70,000

कार्य टिप्पणी

1.	शेष गैर-जिम्मेदार लेनदारों के दावे का निपटान	₹
	₹ 3,00,000 का 75%	2,25,000
	₹ 60 प्रत्येक के अंश के लिए उनके दावे पर विचार	
	$2,25,000 \div 60 = 3,750$ अंश	
	घटाया : अंशों की संख्या जारी	
	$3,750 \times 4 = 15,000$ अंश ₹ 7.50 प्रत्येक	
	कुल मूल्य = $15,000 \times 7.50$	<u>1,12,500</u>
	पुनर्निर्माण के लिए स्थानान्तरित खाता	<u>1,12,500</u>

2. पुनर्निर्माण के समय लाभ और हानि खाता के डेबिट शेष की प्राप्ति।

	₹	₹
सम्पत्तियां		
स्थिर सम्पत्तियां	3,90,000	
रोकड़	2,70,000	6,60,000
घटा अंश पूंजी तथा देयता		
अंश पूंजी	1,80,000	
प्रथम ऋणपत्र	3,00,000	
द्वितीय ऋणपत्र	6,00,000	
अन आरक्षित लेनदार	<u>4,50,000</u>	<u>15,30,000</u>
लाभ-हानि खाता (देनदारी बकाया)		<u>(8,70,000)</u>

सारांश

(SUMMARY)

1. पुनर्निर्माण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी कम्पनी के कामकाज को सम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन, दायित्वों के पुनः निर्धारण तथा पहले से उठाई गई हानियों के अपलेखन द्वारा अंशों का प्रदय मूल्य घटाकर तथा/अथवा विभिन्न प्रकार के अंशों के साथ लगे अधिकारों में परिवर्तन करके पुनर्गठित किया जाता है।
2. पुनर्निर्माण खाता वह खाता है जिसमें अंशधारियों द्वारा किये गए त्याग को स्थानान्तरित किया जाता है।
3. पुनर्निर्माण खाते के शेष को पूँजीकृत संचय खाते में स्थानान्तरित कर दिया जाता है।

4. पुनर्निर्माण खाता काल्पनिक सम्पत्तियों के अपलेखन हेतु, सम्पत्तियों के मूल्य के अपलेखन हेतु, नए दायित्वों के अभिलेखन हेतु, इत्यादि प्रयोग किया जाता है।
5. आंतरिक पुनर्निर्माण की विधियाँ—
 - (i) अंश पूँजी में परिवर्तन—
 - (a) अंशों का उपविभाजन एवं समेकन
 - (b) अंशों का स्टॉक एवं स्टॉक का अंशों में परिवर्तन
 - (ii) अंशधारियों के अधिकारों में परिवर्तन
 - (a) Only the specific rights are changed. There is no change in the amount of capital.
 - (iii) अंश पूँजी में पराभव
 - (iv) समझौता / व्यवस्था
 - (v) अंशों का समर्पण।

6

एकीकरण [AMALGAMATION]

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के उपरांत, आप सक्षम हो जायेंगे—

- एकीकरण का अर्थ एवं एकीकरण हेतु लेखांकन कि विधियाँ समझने में।
- हस्तांतरिती (Transferee) कम्पनी एवं हस्तांतरणकर्ता (Transferor) कम्पनी की अवधारणा के प्रोत्साहन में।
- ए. एस. 14 (AS-14) के अनुसार एकीकरण की दोनों विधियों के अंतर्गत क्रय प्रतिफल की गणना करने में।
- विक्रेता कम्पनी की पुस्तकों को बंद करने की प्रविष्टियाँ करने में।
- क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में विक्रेता कम्पनी की संपत्तियों एवं दायित्वों को समामेलित करने तथा साथ ही अन्य समायोजनों का प्रभाव देने हेतु प्रविष्टियाँ कर सकने में।

1. एकीकरण का अर्थ

(MEANING OF AMALGAMATION)

एक-एकीकरण में, दो या अधिक कम्पनियों द्वारा एक में संयुक्त विलय होता है या एक के द्वारा दूसरे को अधिकार में लिया जाता है। अतः 'एकीकरण' मद् निम्नलिखित दो प्रकार की गतिविधियों पर विचार करती है—

- (i) दो या अधिक कम्पनियों का एक नई कम्पनी के गठन में शामिल होना।
- (ii) एक को अन्य द्वारा अवशोषित और सम्मिश्रण करना।

इस प्रकार एकीकरण में अवशोषण शामिल है।

कम्पनियों के साथ में जुड़ने का प्रयोजन विभिन्न लाभों को सुरक्षित करना है; जैसे कि, बड़े स्तर पर उत्पादन की अर्थव्यवस्था, प्रतियोगिता को रोकना, कुशलता में वृद्धि एवं विस्तार आदि।

परिसमापन होने वाली कम्पनियों या विलय हो जाने वाली कम्पनियों को विक्रेता कम्पनियाँ (Vendor companies) या हस्तान्तरक कम्पनियाँ (Transferor companies) कहते हैं। एक नई

कम्पनी, जिसका गठन परिसमापक कम्पनियों को अधिकार में लेने के लिए हुआ है, या जिस कम्पनी के साथ हस्तान्तरक कम्पनी का विलय हुआ है को, हस्तान्तरी (transferee) या क्रेता (vendee) कहते हैं।

एकीकरण की दशा में हस्तान्तरक कम्पनियों की सम्पत्तियों एवं दायित्वों को एकीकृत करते हैं तथा हस्तान्तरी कम्पनी ऐसी सभी सम्पत्तियों एवं दायित्वों पर अधिकार प्राप्त कर लेती है। जहाँ एक उपक्रम किसी कम्पनी द्वारा चलाया जा रहा है तथा इसका अस्तित्व हस्तांतरण किसी गैर (outsider) को नहीं, बल्कि एक अन्य कम्पनी (जिसे मूलतः उन्हीं अंशधारकों द्वारा एकमत दृष्टि के साथ हस्तान्तरी कम्पनी द्वारा जारी रखा जा रहा है) को किया जाता है, तो वह बाह्य पुनर्निर्माण है। ऐसे बाह्य पुनर्निर्माण को मूलतः ए. एस. 14 (AS-14) में सम्मिश्रण स्वभाव के एकीकरण (Amalgamation in the nature of merger) के अन्तर्गत शामिल किया जाता है।

आधार	एकीकरण	अवशोषण	बाह्य पुनर्निर्माण
अर्थ	दो या अधिक कम्पनियाँ एक साथ मिलकर एक नई कम्पनी के रूप में सामने आती हैं।	इस दशा में एक विद्यमान कम्पनी एक या अधिक विद्यमान कम्पनी को ले लेती है।	इस दशा में एक नई कम्पनी एक विद्यमान कम्पनी के व्यवसाय को ले लेती है।
शामिल कंपनियों की संख्या	दो या अधिक कम्पनियाँ मिलती हैं।	एक विद्यमान कम्पनी एक या अधिक विद्यमान कंपनियों के व्यावसाय को ले लेती है।	नई कम्पनी विद्यमान कम्पनी के व्यवसाय को ले लेती है।
परिणामी कंपनियों की संख्या	दो कम्पनियाँ एक परिणामी कम्पनी के रूप में सामने आती हैं।	नई परिणामी कम्पनी नहीं होती है।	इस दशा में एक नए प्रारूप की कम्पनी पहले से विद्यमान कम्पनी के व्यवसाय को ले लेती है।
उदाहरण	ए लि. और बी लि., सी लि. के रूप में एकीकृत होती हैं।	ए लि. अन्य विद्यमान कम्पनी के व्यवसाय को अधिग्रहण करती है।	बी लि. का गठन विद्यमान कम्पनी ए लि. के व्यवसाय को अधिग्रहण करने के लिए होता है।

2. एकीकरण के प्रकार

(TYPES OF AMALGAMATION)

कम्पनी अधिनियम 1956 में एकीकरण मद की विशिष्टतः परिभाषा नहीं दी है, लेकिन अनेक वैधानिक निर्णयों से निष्कर्ष द्वारा एकीकरण की परिभाषा निकाली जा सकती है। भारतीय चार्टर्ड लेखाकार संस्थान में एकीकरणों के लेखांकन पर लेखांकन मानक AS-14 लागू किया गया है। यह लेखांकन मानदण्ड अग्रलिखित दो प्रकार के एकीकरणों को मान्यता देता है—



समिश्रण के स्वभाव का एकीकरण (Amalgamation in the nature of merger)—समिश्रण के स्वभाव का एकीकरण एक ऐसा एकीकरण है जो निम्न सभी शर्तों को पूरा करे :

- (1) एकीकरण के पश्चात् हस्तांतरण कम्पनी की सभी सम्पत्तियाँ तथा दायित्व हस्तांतरी कम्पनी की सम्पत्तियाँ एवं दायित्व बन जाएँ।
- (2) हस्तांतरक कम्पनी के समता अंशों के अंकित मूल्यों का कम से कम 90% भाग को धारण करने वाले अंशधारक (ऐसे अंशधारकों को छोड़कर जिन्होंने एकीकरण से तुरन्त पूर्व हस्तांतरी कम्पनी या उसकी सहायक या उसकी नामित कम्पनी में पहले से ही समता अंश धारित कर रखे हैं) एकीकरण के फलस्वरूप हस्तांतरी कम्पनी के समता अंशधारक बन जायें।
- (3) हस्तांतरक कम्पनी के समता अंशधारक जो हस्तांतरी कम्पनी के समता अंशधारक बनने के लिए सहमत हुए हैं उन अंशधारकों को एकीकरण का प्रतिफल हस्तांतरी कम्पनी द्वारा पूर्णतः समता अंशों के निर्गमन द्वारा निपटाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त निम्नात्मक अंशों के लिये रोकड़ चुकाई जा सकती है।
- (4) हस्तांतरक कम्पनी का व्यवसाय हस्तांतरी कम्पनी द्वारा एकीकरण के बाद चलाये जाना ज़ाहिर हो।
- (5) हस्तांतरक कम्पनी की सम्पत्तियों एवं दायित्वों के पुस्तकीय मूल्य में कोई समायोजन किये जाने का इरादा न हो। जब उनको हस्तांतरी कम्पनी के वित्तीय विवरणों में शामिल किया जाता है। सिवाय लेखांकन नीतियों में समरूपता के आश्वासन के।

यदि उपरोक्त दी हुई शर्तों में से कोई एक या अधिक शर्त एकीकरण में संतुष्ट नहीं होती है तो ऐसे एकीकरण को क्रय के स्वभाव का एकीकरण (Nature of purchase in amalgamations) कहा जायेगा।

3. क्रय प्रतिफल

(PURCHASE CONSIDERATION)

एकीकरणों के लेखांकन के उद्देश्य हेतु, हम अनिवार्य रूप से लेखांकन मानदण्ड [AS-14] एकीकरणों के लेखांकन से दिशा-निर्देश पाते हैं। इस मानदण्ड AS-14 के अनुच्छेद 3 (g) में "क्रय प्रतिफल" मद की परिभाषा इस प्रकार है "निर्गमित अंशों एवं अन्य प्रतिभूतियों का कुल योग तथा रोकड़ अथवा अन्य सम्पत्तियों को हस्तांतरी कम्पनी के द्वारा भुगतान के रूप में हस्तांतरण कम्पनी के अंशधारकों को किया जाता है।" सरल शब्दों में हस्तांतरक कम्पनी के व्यवसाय को लेने हेतु हस्तांतरी कम्पनी द्वारा हस्तांतरक कम्पनी को देय मूल्य है।

यह ध्यान रखना है कि क्रय प्रतिफल में उस राशि का समावेश नहीं होता है जो हस्तांतरी कम्पनी हस्तांतरक कम्पनी के लेनदारों को प्रत्यक्षतः चुकायेंगे। क्रय प्रतिफल में आवश्यक रूप से उसके तत्वों के उचित मूल्य पर निर्भर करता है।

उदाहरण के लिये जब प्रतिफल में प्रतिभूतियों का समावेश होता है तो वैधानिक प्राधिकार द्वारा तय किया गया मूल्य उचित मूल्य के तौर पर लिया जाता है। अन्य सम्पत्तियों की दशा में दी गयी सम्पत्तियों के संदर्भ में बाजार मूल्य को उचित मूल्य निर्धारित किया जा सकता है अथवा बाजार मूल्य की अनुपस्थिति में सम्पत्तियों का पुस्तकीय मूल्य विचारणीय होता है।

कभी-कभी एक या अधिक भावी घटनाओं के कारण क्रय प्रतिफल में कुछ समायोजन करने पड़ते हैं। प्रायः जब अतिरिक्त भुगतान संभावित हो और तर्कसंगत अनुमान के अन्तर्गत क्रय प्रतिफल की गणना को शामिल किया जाता है।

उदाहरण (Illustration) 1

31 मार्च, 2011 को X लिमिटेड के चिट्ठे को मानते हुए :

दायित्व	₹ 000	सम्पत्तियाँ	₹ 000
अंश पूँजी ₹10 प्रत्येक के समता अंश	75.00	भूमि एवं भवन	50.00
₹100 प्रत्येक के 14% पूर्वाधिकार अंश	25.00	संयंत्र एवं यंत्र	45.00
सामान्य संचय	12.50	उपस्कर	10.50
12% ऋणपत्र	40.00	विनियोग	5.00
विविध लेनदार और चूल दायित्व	<u>20.00</u>	स्कंध	23.00
		देनदार	24.00
		रोकड़ और बैंक अधिकोष	<u>15.00</u>
	<u>172.50</u>		<u>172.50</u>

अन्य सूचना (Other Information)—

- 10 अप्रैल, 2011 को Y लिमिटेड, X लिमिटेड को अधिग्रहण कर लेती है।
- X के ऋणपत्रधारियों का भुगतान Y लिमिटेड द्वारा 15% निजी ऋणपत्र 10% पारितोषिक के साथ निर्गमित किये जायेंगे।
- X (एक्स) लिमिटेड के 14% पूर्वाधिकार अंशधारियों का भुगतान Y लिमिटेड द्वारा 15% पूर्वाधिकार अंशों को 20% पारितोषिक के साथ आवश्यक संख्या में निर्गमित किया जायेगा।
- X लिमिटेड के अंश जिनका आन्तरिक मूल्य ₹ 20 और Y लिमिटेड ₹ 30, Y लिमिटेड, X लिमिटेड के समता अंशधारियों को संतुष्ट होने पर समता अंश आन्तरिक मूल्य के आधार पर निर्गमित करेगा। इसी प्रकार प्रविष्टि केवल सममूल्य पर की जायेगी। Y लिमिटेड प्रत्येक समता अंश का उचित मूल्य ₹ 10 है।

क्रय प्रतिफल की गणना कीजिये।

समाधान (Solution)

क्रय प्रतिफल की गणना	(₹ '000)	प्रारूप
X लिमिटेड के पूर्वाधिकार अंशधारियों के लिये	3,000	Y लिमिटेड में 15% पूर्वाधिकार अंश, 30,000
Y लिमिटेड के समता अंशधारियों के लिये (2/3 × 7,50,000) × प्रत्येक ₹ 10 के ₹ 10	5,000	Y लिमिटेड के 5,00,000 समता अंश
कुल क्रय प्रतिफल	8,000	

टिप्पणी (Note) : ऋणपत्रधारियों के लिये प्रतिफल को उपरोक्त में शामिल नहीं करना चाहिये। ऐसे ऋणपत्र Y लिमिटेड द्वारा अधिगृहीत किये जाने चाहिये तथा तत्पश्चात मुक्त कर दिया गया।

उदाहरण (Illustration) 2

नील लि. एवं गगन लि. दोनों ने अपना एकीकरण कर लिया और 1.04.2012 को एवं नयी कम्पनी बना ली। निम्नलिखित प्रारूप तलपट नील लि. और गगन लि. 31.3.2012 का है :

देयताएँ	नील ₹	गगन ₹	सम्पत्तियाँ	नील ₹	गगन ₹
पूँजी	7,75,000	8,55,000	संयंत्र एवं मशीनरी	4,85,000	6,14,000
चालू देयताएँ	6,23,500	5,57,000	भवन	7,50,000	6,40,000
			चालू सम्पत्तियाँ	<u>1,63,500</u>	<u>1,58,500</u>
	<u>13,98,500</u>	<u>14,12,600</u>		<u>13,98,000</u>	<u>14,12,000</u>

निम्न अतिरिक्त जानकारियाँ उपलब्ध हैं :

- नई कम्पनी की अधिकृत पूँजी ₹ 25,00,000 होगी जिसको 1,00,000 समता अंश ₹ 25 प्रति में विभक्त किया जायेगा।
- नील लि. की देयता में वह ₹ 50,000 भी सम्मिलित है जो उसे गगन लि. को उनसे खरीदे गये माल के लिए देने हैं गगन लि. ने नील लि. को बचे माल दर 20% का लाभ कमाया था।
- नील लि. ने गगन लि. से ₹ 10,000 लागत का माल खरीदा। यह सारा माल नील लि. की चालू सम्पत्तियों में 31-12-2012 को सम्मिलित है।
- नील लि. एवं गगन लि. की सम्पत्तियों का पुनर्मूल्यांकन निम्न रूप से किया जाता है :

	नील ₹	गगन ₹
संयंत्र एवं मशीनरी	5,25,000	6,75,000
भवन	7,75,000	6,48,000

- (v) क्रय प्रतिफल का निस्तारण निम्न रूप में होगा :
- (a) 24,000 समता अंश ₹ 25 प्रति पूर्णतया प्रदत्त इनके पिछले 2 वर्ष के लाभ के अनुपात में इन्हें जारी किये जायेंगे।
- (b) पिछले 2 वर्ष के लाभ नीचे दिये जा रहे हैं :

	नील लि. ₹	गगन लि. ₹
प्रथम वर्ष	2,62,800	2,75,125
द्वितीय वर्ष	<u>2,12,200</u>	<u>2,49,875</u>
जोड़	4,75,000	5,25,000

- (c) 12% के प्राथमिकता अंश ₹ 10 प्रति पूर्णतया प्रदत्त उसी मूल्य पर जारी किया जाये ताकि उनको 8% के सम आय उनकी शुद्ध सम्पत्तियों पर जो व्यापार में 31.3.2012 को है पर हो सके यह नील लि. तथा गगन लि. की सम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन के उपरान्त किया जायेगा।

आपको निम्न की गणना करनी होगी :

- (i) नील लि. तथा गगन लि. को जारी किये गये समता तथा प्राथमिकता अंशों की गणना,
(ii) क्रय प्रतिफल।

समाधान (Solution)

- (i) नील लि. एवं गगन लि. को जारी किये जाने वाले समता अंशों की गणना
(Calculation of equity shares to be issued to Neel Ltd. and Gagan Ltd.)

लाभ	नील लि. ₹	गगन लि. ₹
प्रथम वर्ष	2,62,800	2,75,125
द्वितीय वर्ष	2,12,200	2,49,875
जोड़	4,75,000	5,25,000

जारी किये जाने वाले अंशों की संख्या 24,000 समता अंश, पिछले दो वर्ष के लाभ के अनुपात में

	नील लि.	गगन लि.
$24,000 \times 475/1000$	11,400 समता अंश	
$24,000 \times 525/1000$		12,600 समता अंश

नील लि. तथा गगन लि. को जारी किये जाने वाले 12% प्राथमिकता अंशों की गणना :

	नील लि. ₹	गगन लि. ₹
शुद्ध सम्पत्तियाँ (टिप्पणियाँ देखो)	8,40,000	9,24,000
सम्पत्तियों पर 8% का लाभ प्राप्ति	67,200	73,920
12% प्राथमिकता अंश जारी किए जाएंगे	56,000 अंश	
$\left[67,200 \times \frac{100}{12} \right] = 5,60,000 @ ₹ 10$ प्रति		
$\left[73,920 \times \frac{100}{12} \right] = 6,16,000 @ ₹ 10$ प्रति		61,600

(ii) कुल क्रय प्रतिफल (Total Purchase Consideration)

	नील लि. ₹	गगन लि. ₹
समता अंश @ ₹ 25 प्रति	2,85,000	3,15,000
12% प्राथमिकता अंश @ ₹ 10 प्रति	<u>5,60,000</u>	<u>6,16,000</u>
जोड़	<u>8,45,000</u>	<u>9,31,000</u>

कार्यकारी टिप्पणियाँ (Working Note) :

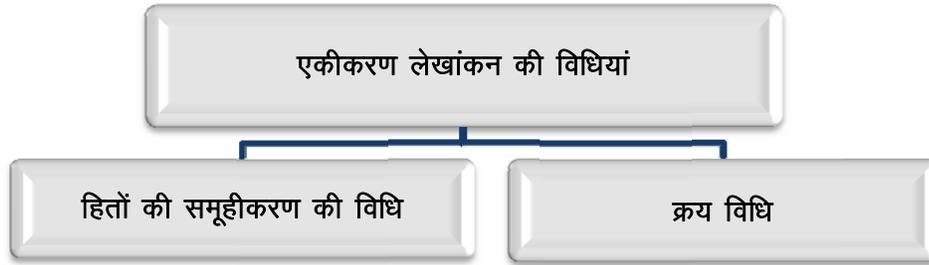
शुद्ध सम्पत्तियों की गणना 31.3.2012 को

	नील लि. ₹	गगन लि. ₹
संयंत्र एवं मशीनरी	5,25,000	6,75,000
भवन	7,75,000	6,48,000
चालू सम्पत्तियाँ	1,63,500	1,58,000
घटा : चालू देयताएँ	<u>(6,23,500)</u>	<u>(5,57,000)</u>
	<u>8,40,000</u>	<u>9,24,000</u>

4. एकीकरणों के लेखांकन की विधियाँ

(METHODS OF ACCOUNTING FOR AMALGAMATIONS)

एकीकरण के लेखांकन की दो मुख्य विधियाँ इस प्रकार हैं—



पहली विधि समिश्रण के स्वभाव के एकीकरण की दशा में काम में लाई जाती है तथा दूसरी विधि क्रय के स्वभाव की दशा में काम में लाई जाती है।

हितों के समूहीकरण की विधि (Pooling of interest method)—हितों के समूहीकरण विधि के अन्तर्गत सभी सम्पत्तियों, दायित्वों और संचयों को हस्तांतरी कम्पनी द्वारा उनके विद्यमान मूल्यों पर लिया जाये, जब तक कि इन कम्पनियों द्वारा अपनाई जा रही लेखांकन नीतियों में किसी अन्तर के कारण कोई समायोजन अपेक्षित न हो जाये। परिणामस्वरूप, निर्गमित अंशपूँजी के रूप में रिकार्ड की गयी राशि के मध्य अन्तर (जमा रोकड़ अथवा अन्य सम्पत्तियों के रूप में अतिरिक्त प्रतिफल) तथा हस्तांतरक कम्पनी की अंशपूँजी की राशि के बीच अन्तर को संचयों से समायोजित किया जाना चाहिये।

क्रय विधि (Purchase method)

सम्पत्तियों एवं दायित्व (Assets and Liabilities)—क्रय विधि के अंतर्गत, हस्तांतरक कम्पनी की सम्पत्तियों एवं दायित्वों को उनके विद्यमान मूल्यों पर शामिल करना चाहिये अथवा क्रय प्रतिफल को व्यक्तिगत रूप से चिन्हित सम्पत्तियों एवं दायित्वों को एकीकरण की तिथि से उचित के आधार पर प्रभारित किया जाना चाहिये। लेकिन वैधानिक संचयों के अतिरिक्त हस्तांतरक कम्पनी का कोई भी संचय हस्तांतरी कम्पनी के वित्तीय विवरणों में सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिये। हस्तांतरक कम्पनी के वैधानिक संचय को निम्न जरनल प्रविष्टि के माध्यम से हस्तांतरी कम्पनी के चिट्ठे में दर्शाया जाना चाहिये।

Amalgamation Adjustment A/c

Dr.

To Statutory Reserve

जब हस्तांतरी कम्पनी द्वारा उपरोक्त वैधानिक संचयों को बनाये रखा जाना जरूरी न रहे तो लेखे की विपरीत प्रविष्टि बनाकर ऐसे संचयों का निराकरण करना चाहिये। क्रय विधि में हस्तांतरी कम्पनी द्वारा प्राप्त हस्तांतरक कम्पनी की शुद्ध सम्पत्तियों के मूल्य के ऊपर प्राप्त क्रय

प्रतिफल की राशि के आधिक्य को हस्तांतरी कम्पनी के वित्तीय विवरणों में ख्याति के रूप में माना जाना चाहिये।

किसी कमी/न्यूनता को पूँजीगत संचय के माध्यम से दिखाया जायेगा। ख्याति को 5 वर्षों की अवधि में अपलिखित किया जाना चाहिये; जब तक एक लंबी अवधि को न्यायोचित न ठहराया जाये।

उदाहरण (Illustration) 3

X लिमिटेड एवं Y लिमिटेड के चिट्ठे इस प्रकार हैं :

चिट्ठे, 31 मार्च, 2012

दायित्व	X लि.	Y लि.	सम्पत्तियाँ	X लि.	Y लि.
	₹ '000	₹ '000		₹ '000	₹ '000
₹10 प्रत्येक के समता अंश पूँजी	50,00	30,00	भूमि एवं भवन	25,00	15,50
₹100 प्रत्येक के 14% पूर्वाधिकार अंश पूँजी	22,00	17,00	संयंत्र एवं यंत्र	32,50	17,00
सामान्य संचय	5,00	2,50	उपस्कर	5,75	3,50
निर्यात लाभ संचय	3,00	2,00	विनियोग	7,00	5,00
विनियोग अनुलाभ संचय		1,00	स्कंध	12,50	9,50
लाभ हानि खाता	7,50	5,00	देनदार	9,00	10,50
₹100 प्रत्येक के 13% ऋणपत्र	5,00	3,50	रोकड़ एवं बैंक	7,25	5,20
व्यापारिक लेनदार	4,50	3,50			
अन्य चालू दायित्व	2,00	1,50			
	99,00	66,00		99,00	66,00

X लिमिटेड, Y लिमिटेड के व्यापार को 1 अप्रैल, 2012 को लेना तय करती है, क्रय प्रतिफल इस प्रकार है—

- (1) ₹10 प्रत्येक के 3,50,000 समता अंश Y लिमिटेड के समता अंशधारियों को सम मूल्य पर निर्गमित किये जायेंगे।
- (2) ₹100 प्रत्येक के 15% पूर्वाधिकार अंश Y लिमिटेड के पूर्वाधिकार अंशधारियों को 10% पारितोषिक के सथ निर्गमित किये जायेंगे।

Y लिमिटेड के ऋणपत्रों को X लिमिटेड के ऋणपत्रों की समान संख्या में परिवर्तित किया जायेगा तथा Y लिमिटेड के वैधानिक संचारों को दो वर्षों तक आगे ले जाया जायेगा।

एकीकरण के पश्चात् X लिमिटेड के चिट्ठे को दर्शाया जाये यह मानते हुए कि—

- (1) एकीकरण समिश्रण के स्वभाव का है।
- (2) एकीकरण क्रय के स्वभाव का है।

समाधान (Solution)

(a) विलय की प्रकृति में एकीकरण (Amalgamation in the nature of merger) :

X लिमिटेड का चिह्न

विवरण	टिप्पणियाँ	'000 में ₹
समता तथा दायित्व		
1 अंशधारियों की निधि		
(a) अंश पूँजी	1	12,570
(b) संचय तथा आधिक्य	2	1,930
2 अप्रचलित संपत्तियाँ		
(a) दीर्घ-अवधि ऋण	3	850
3 चालू दायित्व		
(a) व्यापार देयतायें		800
(b) अन्य चालू दायित्व		350
कुल		16,500
सम्पत्तियाँ		
1 अप्रचलित सम्पत्तियाँ		
(a) स्थायी सम्पत्तियाँ		
मूर्त सम्पत्तियाँ	4	9,925
(b) अप्रचलित निवेश		1,200
2 चालू सम्पत्तियाँ		
(a) रहतिया		2,200
(b) व्यापार प्राप्तियाँ		1,930
(c) रोकड़ तथा रोकड़ तुल्य		1,245
कुल		16,500

लेखों के टिप्पण :

	'000 में ₹
1. अंश पूँजी	
समता अंश पूँजी	
प्रत्येक ₹ 100 के 85,000 समता अंश	8,500

पूर्वाधिकार अंश पूँजी			
प्रत्येक ₹ 100 के 18,700, 15% पूर्वाधिकार अंश			1,870
प्रत्येक ₹ 100 के 22,000, 14% पूर्वाधिकार अंश			2,200
	कुल		12,570
2. संचय तथा आधिक्य			
X लि. का सामान्य संचय*	500		
जोड़ना : Y लि. का सामान्य संचय	<u>250</u>	750	
घटाना : एकीकरण के लिए समायोजन		(670)	80
X लि. निर्यात लाभ संचय		300	
जोड़ना : X लि. निवेश भत्ता संचय	<u>200</u>		500
निवेश भत्ता रिजर्व			100
X लि. आधिक्य (लाभ तथा हानि खाता)		750	
जोड़ना : Y लि. आधिक्य (लाभ तथा हानि खाता)	<u>500</u>		1,250
	कुल		1,930
3. दीर्घ अवधि ऋण			
जमानती			
प्रत्येक ₹ 100 के 8,500, 13% ऋणपत्र			850
	कुल		850
4. मूर्त संपत्तियाँ			
भूमि तथा भवन			4,050
संयंत्र एवं मशीनरी			4,950
उपस्कर तथा फिटिंग			925
	कुल		9,925

*निर्गमित अंश पूँजी के रूप में आलेखित राशि तथा हस्तान्तरणकर्ता कम्पनी की अंश पूँजी की राशि के मध्य अन्तर को संचय में समायोजित करना चाहिए। अतः सामान्य संचय = ₹ '000 [750 – (5370 – 4700)] = ₹ ('000) 80

(b) क्रय की प्रकृति में एकीकरण (Amalgation in the nature of purchase) :

X लिमिटेड का चिह्न

विवरण		टिप्पण	'000 में ₹
समता तथा दायित्व			
1. अंशधारियों की निधि			
(a) अंश पूँजी		1	12,570
(b) संचय तथा दायित्व		2	2,230
2. अप्रचलित दायित्व			
(a) दीर्घ अवधि ऋण		3	850
3. चालू दायित्व			
(a) व्यापार देयताएँ			800
(b) अन्य चालू दायित्व			350
	कुल		16,800
सम्पत्तियाँ			
1. अप्रचलित सम्पत्तियाँ			
(a) स्थायी सम्पत्तियाँ			
मूर्त सम्पत्तियाँ		4	9,925
(b) अप्रचलित निवेश			1,200
(c) अन्य अप्रचलित सम्पत्तियाँ		5	300
2. चालू सम्पत्तियाँ			
(a) रहतिया			2,200
(b) व्यापार प्राप्तियाँ			1,930
(c) रोकड़ तथा रोकड़ तुल्य			1,245
	कुल		16,800

लेखों के टिप्पण :

		'000 में ₹
1. अंश पूँजी		
समता अंश पूँजी		
प्रत्येक ₹ 100 के 85,000 समता अंश		8,500
पूर्वाधिकार अंश पूँजी		
प्रत्येक ₹ 100 के 18,700, 15% पूर्वाधिकार अंश		1,870
प्रत्येक ₹ 100 के 22,000, 14% पूर्वाधिकार अंश		2,200
	कुल	12,570

2.	संचय तथा आधिक्य		380
	पूँजी संचय		500
	सामान्य संचय		500
	निर्यात लाभ संचय		100
	निवेश भत्ता संचय		750
		कुल	2,230
3.	दीर्घ-अवधि ऋण		
	जमानती		
	प्रत्येक ₹ 100 के 8,500, 13% ऋणपत्र		850
		कुल	850
4.	मूर्त सम्पत्तियाँ		
	भूमि तथा भवन		4,050
	संयन्त्र एवं मशीनरी		4,950
	उपस्कर तथा फिटिंग		925
		कुल	9,925
5.	अन्य अप्रचलित सम्पत्तियाँ		
	एकीकरण समायोजन खाता (एक वर्ष से अधिक के लिये मरम्मत के लिये अनुमानित)		300

कार्यशील टिप्पणी (Workings) : एकीकरण पर उत्पन्न पूँजी संचय :

(A)	अधिगृहीत शुद्ध सम्पत्तियाँ :	(‘000 में) ₹	(‘000 में) ₹
	विविध सम्पत्तियाँ		66,00
	घटाया 13% ऋणपत्र	3,50	
	व्यापार लेनदार	3,50	
	अन्य चालू दायित्व	<u>1,50</u>	<u>8,50</u>
			<u>57,50</u>
(B)	क्रय प्रतिफल :		
	Y लिमिटेड का समता अंशाधारियों से		35,00
	Y लिमिटेड के पूर्वाधिकार अंशाधारियों से		<u>18,70</u>
			<u>53,70</u>
(C)	पूँजी आरक्षण (A – B)		<u>3,80</u>

उदाहरण (Illustration) 4

P लिमिटेड, S लिमिटेड का संविलयन करता है। S लिमिटेड का चिह्न इस प्रकार है।

	₹		₹
अंश पूँजी :			
₹ 2,000 7% पूर्वाधिकार अंश		विविध सम्पत्तियाँ	13,00,000
₹ 100 प्रत्येक के (पूर्णदत्त)	2,00,000		
5,000 समता अंश के ₹100			
प्रत्येक के (पूर्णदत्त)	5,00,000		
संचय	3,00,000		
6% ऋणपत्र	2,00,000		
व्यापारिक लेनदार	<u>1,00,000</u>		
	<u>13,00,000</u>		<u>13,00,000</u>

P लिमिटेड सहमत है—

- P लिमिटेड ने ₹100 वाले 9% पूर्वाधिकार अंश निर्गमित किये P लिमिटेड ने 3 अंश के अनुपात में 4 पूर्वाधिकार अंश S लिमिटेड को दिये।
- S लिमिटेड के ऋणपत्रधारियों को S लिमिटेड में 6% ऋणपत्र जो 20% प्रीमियम पर शोधित होने थे, के बदले 8% बंधक ऋणपत्र* निर्गमित किये।
- प्रत्येक अंश पर ₹20 नगद में भुगतान किये तथा S लि. में धारित प्रत्येक पाँच अंश के बदले ₹100 वाले (बाजार मूल्य ₹125) 6 समता अंश निर्गमित किये।
- व्यापारिक देनदार के दायित्व को मानना।

समाधान (Solution)

क्रय प्रतिफल होगा	₹	प्रारूप
पूर्वाधिकार अंशधारी : $2,000 \times 3/4 \times 100$	1,50,000	9% पूर्वाधिकार अंश
समता अंशधारी $5,000 \times 20$	1,00,000	रोकड़
$5,000 \times 6/5 \times 125$	<u>7,50,000</u>	समता अंश
	<u>10,00,000</u>	

माना की, विनिमय पर उत्पन्न कुछ भिन्नो की संख्या के बीस अंशों (पी लिमिटेड में समता अंशों के तुल्य) हेतु प्रत्येक को एक सौ पच्चीस रुपये प्रति अंश की दर से भुगतान करना होगा,

* ए एस 14 के अनुसार, समामेलन के लिए प्रतिफल हस्तान्तरी कम्पनी द्वारा हस्तान्तरक कम्पनी के अंशधारियों को निर्गमित कुल अंशों या अन्य प्रतिभूतियों तथा नकद या अन्य सम्पत्तियों के रूप में किये गये भुगतान के योग के समान होता है। इसलिए ऋणपत्रधारियों को निर्गमित ऋणपत्रों को क्रय प्रतिफल में शामिल नहीं किया जायेगा। व्यापारिक लेनदारों की तरह, ए एस लिमिटेड के ऋणपत्रों के दायित्व के सम्बन्ध में इन्हें P लिमिटेड द्वारा नए 8% ऋणपत्रों को जारी कर तय किया जायेगा।

शेष राशि समता अंशों के निर्गमन द्वारा तय की जायेगी। वैकल्पिक रूप से, भिन्नात्मक अंश प्रमाण पत्र निर्गमित होंगे, ये प्रस्तुति पर अंशों में परिवर्तित होंगे—भिन्नात्मक अंश प्रमाण पत्र के धारक ऐसे अन्य प्रमाणपत्र क्रय करेंगे या अपने द्वारा धारित को बेच देंगे।

उदाहरण (Illustration) 5

Y लिमिटेड, X लिमिटेड के संविलयन का निर्णय लेता है। X लिमिटेड का चिट्ठा इस प्रकार है—

	₹	₹
₹ 100 प्रत्येक के (पूर्णदत्त)	शुद्ध सम्पत्तियाँ	2,90,000
3,000 समता अंश	लाभ-हानि खाता	70,000
पूर्वाधिकार अंश	60,000	
	<u>3,60,000</u>	<u>3,60,000</u>

Y लिमिटेड, X लिमिटेड की शुद्ध सम्पत्तियाँ अधिगृहीत करने के लिये सहमत है। X लिमिटेड में एक समता अंश, संविलयन के प्रयोजन से, @ ₹ 70 पर मूल्यांकित किया गया। Y लिमिटेड पूर्वाधिकार अंशधारियों को भुगतान के लिये रोकड़ में ₹ 60,000 भुगतान करने के लिये सहमत है तथा इसके समता अंश के रूप में शेष को प्रत्येक ₹ 120 पर मूल्यांकित किया गया। Y लिमिटेड द्वारा चुकाये गये क्रय प्रतिफल की गणना करें तथा यह किस प्रकार समाप्त होगा ?

समाधान (Solution)

X लिमिटेड के ₹ 3,000 अंशों का मूल्य @ ₹ 70 = ₹ 2,10,000

क्रय प्रतिफल होगा

समता अंशों हेतु

= ₹ 2,10,000 + पूर्वाधिकारी अंशधारियों संबंधित दायित्व हेतु ₹ 60,000

= ₹ 2,70,000

उपरोक्त में से ₹ 60,000 नगद में होगा और Y लिमिटेड के समता अंश के रूप में ₹ 2,10,000, ₹ 120 प्रति अंश निर्गमित है; अंशों की संख्या जो कि निर्गमित कि जायेगी = ₹ 2,10,000 / ₹ 120 = ₹ 1750 समता अंश।

5. विक्रेता कम्पनी की पुस्तकों को बन्द करने की जर्नल प्रविष्टियाँ

(JOURNAL ENTRIES TO CLOSE THE BOOKS OF VENDOR COMPANY)

निम्नलिखित उदाहरण में दैनिक प्रविष्टियाँ की जायेंगी।

Wye लिमिटेड, Zed लिमिटेड के व्यवसाय को अधिगृहीत करता है जिसका आर्थिक चिट्ठा 31 दिसम्बर, 2012 को इस प्रकार है :

दायित्व	₹ सम्पत्तियाँ	₹
₹100 प्रत्येक के अंश में	ख्याति	2,00,000
विभाजित अंश पूँजी		

6% पूर्वाधिकार अंश पूँजी	4,00,000	भूमि एवं भवन	4,00,000
समता अंश पूँजी	8,00,000	संयंत्र एवं यंत्र	6,00,000
पूँजीगत संचय	1,00,000	एकस्व	50,000
लाभ हानि खाता	50,000	स्कंध	1,50,000
6% ऋणपत्र	2,00,000	पुस्तकीय ऋण	1,80,000
उपरोक्त पर अदत्त ब्याज	12,000	रोकड़ अधिकोष	70,000
कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय	8,000	अभिगोपक कमीशन	40,000
(अनुमानित दायित्व ₹5,000)			
व्यापारिक लेनदार	<u>1,20,000</u>		
	<u>16,90,000</u>		<u>16,90,000</u>

Wye लिमिटेड सभी सम्पत्तियों (रोकड़ को छोड़ कर) और दायित्व (ऋणपत्रों पर अल्प ब्याज को छोड़कर) को अपने अधिकार में लेगा तथा निम्न भुगतान करेगा—

- Zed लि. में विद्यमान ऋणपत्रों हेतु, Wye लि. में ₹ 2,00,000 के 7% ऋणपत्र (₹100 प्रत्येक), इस उद्देश्य हेतु Wye लि. का प्रत्येक ऋणपत्र ₹105 मूल्य के समान माना गया है।
- Zed लि. में प्रत्येक पूर्वाधिकार अंश हेतु ₹10 नकद तथा Wye लि. में एक 9% ₹100 प्रत्येक का पूर्वाधिकार अंश।
- Zed लि. में प्रत्येक समता अंश हेतु ₹20 नकद में तथा ₹100 प्रत्येक का Wye लि. में एक समता अंश जो ₹140 बाजार मूल्य रखता है।
- Zed लि. के समापन के व्यय ₹10,000 की सीमा तक Wye लि. द्वारा प्रतिपूर्ति किये जायेंगे। वास्तविक व्ययों की राशि ₹12,500 है।

Wye लि. भूमि तथा भवन ₹5,50,000 पर, यंत्र एवं संयंत्र ₹6,50,000 पर तय एकस्व ₹ 20,000 पर मूल्यांकित करता है।

क्रय प्रतिफल (Purchase Consideration) :

		₹	प्रपत्र
(i)	पूर्वाधिकार अंश : ₹ 10 प्रति अंश	40,000	रोकड़
	पूर्वाधिकार अंश	<u>4,00,000</u>	4,40,000 पूर्वाधिकार अंश
(ii)	समता अंश : ₹ 20 प्रति अंश	1,60,000	रोकड़
	₹ 140 की दर पर Wye लिमिटेड में		
	8,000 समता अंश	<u>11,20,000</u>	<u>12,80,000</u> समता अंश
			<u>17,20,000</u>

विक्रेता कम्पनी की पुस्तकों को बन्द करने के विभिन्न चरण (Step to Close the Books of the Vendor Company)—

- वसूली खाता खोलें एवं पुस्तक मूल्य पर सभी सम्पत्तियों को अन्तरित कर दें।

अपवाद : यदि क्रेता कम्पनी द्वारा रोकड़ नहीं ली जा रही है तो उसको अन्तरित न करें।

नोट : लाभ-हानि खाता (डेबिट) और अपलिखित न किये जाने वाले व्यय सम्पत्तियाँ नहीं हैं अतः अवयवों को वसूली खाते में हस्तांतरित नहीं करना चाहिये।

उपरोक्त दशा में निम्न जर्नल लेखा होगा—

उपरोक्त मामले में पंजी प्रविष्टियाँ हैं :	₹	₹
वसूली खाता	Dr. 15,80,000	
ख्याति		2,00,000
भूमि तथा भवन		4,00,000
संयंत्र एवं मशीनरी		6,00,000
पेटेंट		50,000
स्कन्ध		1,50,000
पुस्तक ऋण		1,80,000
(Wye लिमिटेड के व्यापार के विक्रय पर वसूली खाते पर संपत्तियों का हस्तांतरण)		

2. वसूली खाते में उन दायित्वों को हस्तांतरित करना चाहिये जिनको क्रेता कम्पनी द्वारा लिया जा रहा हो। प्रावधानों की दशा में वह भाग जो भविष्य में उत्पन्न हो सकने वाली दायित्व की राशि को दर्शाता है। इस प्रकार हस्तांतरित किया जाये तथा वह भाग जो आवश्यक नहीं है (अर्थात् संचय वाला भाग) लाभ के रूप में माना जाना चाहिये, तदानुसार उनका लेखा निम्न प्रकार किया जायेगा :

	₹	₹
Wye लिमिटेड में 6% ऋणपत्र	Dr. 2,00,000	
श्रमिक की क्षतिपूर्ति संचय	Dr. 5,000	
व्यापार लेनदार	Dr. 1,20,000	
वसूली खाता का		3,25,000
(Wye लिमिटेड द्वारा अधिग्रहीत दायित्व का वसूली खातों में हस्तांतरण)		

3. क्रय प्रतिफल की राशि से क्रेता कम्पनी का खाता डेबिट करें एवं वसूली खाता क्रेडिट (Cr.) करें।

	₹	₹
Why लिमिटेड	Dr. 17,20,000	
वसूली खाता को		17,20,000
(व्यापार के विक्रय के लिये Wye लिमिटेड से)		

प्राप्त राशि)

4. क्रय प्रतिफल प्राप्त होने पर जो प्राप्त हो (रोकड़, ऋणपत्र, अंश आदि) डेबिट (Dr.) करें एवं क्रेता कम्पनी को क्रेडिट (Cr.) करें।

		₹	₹
रोकड़	Dr.	2,00,000	
Wye लिमिटेड में 9% पूर्वाधिकार अंश	Dr.	4,00,000	
Wye लिमिटेड में समता अंश	Dr.	11,20,000	
Wye लिमिटेड का			17,20,000
(क्रय कंपनी से क्रय प्रतिफल की प्राप्ति)			

5. समापन के व्ययों को प्रत्येक मामले की परिस्थितियों के अनुसार लेना पड़ता है।
- (a) यदि विक्रेता कम्पनी उनको स्वयं वहन करती है तो वसूली खाते को डेबिट किया जाता है तथा रोकड़/बैंक खाते को क्रेडिट किया जाता है।
- (b) यदि व्यय क्रेता कम्पनी द्वारा वहन किये जाते हैं तो प्रश्न को निम्न दो तरीकों में से किसी एक तरीके के अन्तर्गत निपटाया जा सकता है।
- (i) इसे विक्रेता कम्पनी की पुस्तकों से चुकाया जा सकता है।
- (ii) यदि व्ययों को पहले विक्रेता कम्पनी द्वारा चुकाया जाता है तथा बाद में क्रेता कम्पनी द्वारा भुगतान किया जाता है तो निम्न दो लेखे बनाये जायेंगे।
- (a) विक्रेता कम्पनी द्वारा व्ययों का भुगतान किया जाता है तो क्रेता कम्पनी को डेबिट करें एवं रोकड़ खाते को क्रेडिट करें।
- (b) जब व्ययों की प्रतिपूर्ति की जाती है तो रोकड़ खाता डेबिट करें एवं क्रेता कम्पनी खाता क्रेडिट करें।

उपरोक्त दशा में Wye लिमिटेड को केवल अधिकतम ₹ 10,000 चुकाना है। जबकि व्यय की गई राशि ₹ 2,500 है अतः ₹ 2,500 Zed लिमिटेड द्वारा वहन की जायेगी। निम्नलिखित अपेक्षित प्रविष्टियाँ होंगी—

		₹	₹
Wye लिमिटेड	Dr.	10,000	
वसूली खाता	Dr.	2,500	
रोकड़ खाता को			12,500
(विघटन व्यय जिसमें से ₹ 10,000 Wye लिमिटेड द्वारा भुगतान किये गये)			
रोकड़ खाता	Dr.	10,000	
Wye लिमिटेड को			10,000
(Wye लिमिटेड द्वारा व्यय के लिये)			

प्रतिपूर्ति किया गया खाता)

6. दायित्वों को क्रेता कम्पनी द्वारा नहीं लिया जाता है। उनको चुका दिया जाता है दायित्वों का भुगतान करने पर संबद्ध दायित्वों का खाता डेबिट (Dr.) तथा रोकड़ खाता क्रेडिट (Cr.) किया जाता है। वास्तव में भुगतान की गई राशि एवं पुस्तकीय मूल्य के मध्य में कोई अन्तर होता है तो उसे वसूली खाते में हस्तांतरित करते हैं। इस सम्बन्ध में Zed लिमिटेड निम्न लेखे बनायेगी।

	₹	₹
अदत्त ब्याज		
ऋणपत्रधारकों के खाते को	Dr. 12,000	
(ऋणपत्रधारियों को देय राशि, ऋणपत्र हितों के लिये)		12,000
ऋणपत्रधारी	Dr. 12,000	
रोकड़ खाते को		12,000
(ऋणपत्रधारी अदत्त ब्याज के लिये ₹ 12,000 रोकड़ का भुगतान करते हैं)		

7. अधिमान अंशधारियों को उनके देय राशि से क्रेडिट (Cr.) करें एवं अधिमान अंशपूँजी को पुस्तकों में दिखाई गई राशि से डेबिट (Cr.) करें, यदि दोनों के मध्य कोई अन्तर हो तो उसे वसूली खाते में हस्तांतरित करें।

6% पूर्वाधिकार अंश पूँजी खाता	Dr. 4,00,000	
वसूली खाता	Dr. 40,000	
पूर्वाधिकार अंशधारियों के खाते को		4,40,000
(पूँजी के लिये पूर्वाधिकार अंशधारियों को देय राशि तथा संविलयन की योजना के अंतर्गत भुगतान अतिरिक्त राशि)		

टिप्पणी (Note)—किसी संकेत के प्रतिकूल की अनुपस्थिति में पूर्वाधिकार अंशधारी अपने द्वारा केवल संयोजित पूँजी के अधिकारी होंगे लेकिन लेनदारों को भुगतान करने के पश्चात् यदि कोष पूर्ण पूर्वाधिकार अंशों का दावा सन्तुष्ट करने के लिये पर्याप्त नहीं हो तो उन्हें घाटे के परिणाम की स्थिति, यानि हानि से गुजरना पड़ेगा।

8. अधिमान अंशधारकों को डेबिट करें तथा उनको जो भी दिया जाये उसे क्रेडिट करें। उपरोक्त दशा में निम्न लेखा होगा—

	₹	₹
पूर्वाधिकार अंशधारियों का खाता	Dr. 4,40,000	
रोकड़ खाते को		40,000
Wye लिमिटेड में 9% पूर्वाधिकार अंश		<u>4,00,000</u>
(Wye लिमिटेड में रोकड़ तथा पूर्वाधिकार अंश पूर्वाधिकार अंशधारियों को दिये गये)		

9. समता अंशपूँजी और लाभ-हानि का बोध कराने वाले खाते (जिसमें वसूली खाता सम्मिलित है) में समता अंशधारियों के खाते में हस्तांतरित करें। इससे समता अंशधारियों को उनकी देय राशि का पता चलेगा।

इस सम्बन्ध में निम्न प्रविष्टियाँ होंगी—

		₹	₹
समता अंश पूँजी खाता	Dr.	8,00,000	
पूँजी संचय खाता	Dr.	1,00,000	
लाभ तथा हानि खाता	Dr.	50,000	
श्रमिक की क्षतिपूर्ति संचय	Dr.	3,000	
वसूली खाता	Dr.	4,22,500*	
विविध समता अंशधारी खाते को			13,75,500
(पूँजी तथा लाभ का प्रतिनिधित्व करने वाले विभिन्न खाते समता अंशधारियों के खाते को हस्तांतरित किये गये)			
समता अंशधारियों का खाता	Dr.	40,000	
अभिगोपनीय कमीशन खाते को			40,000
(अभिगोपनीय कमीशन खाता हस्तांतरण द्वारा समता अंशधारियों के खाते को बंद कर दिया गया)			

10. समता अंशधारकों के दावों की संतुष्टि पर उनके खाते को डेबिट (Dr.) करें एवं जो भी उनको दिया जाये उससे क्रेडिट (Cr.) करें।

		₹	₹
समता अंशधारियों का खाता	Dr.	13,35,500	
Wye लिमिटेड में समता अंशों को			11,20,000
रोकड़ खातों को**			2,15,500

* The Realisation Account will appear as follows :

		Realisation Account		
		₹	₹	
To	Sundry Assets	15,80,000	By Sundry Liabilities	3,25,000
To	Cash (excess expenses of liquidation)	2,500	By Wye Ltd.	17,20,000
To	Preference Shareholders	40,000		
To	Equity Shareholders A/c-profit transferred	4,22,500		
		<u>20,45,000</u>		<u>20,45,000</u>

** विद्यार्थियों को रोकड़ अधिकोष निकालने के लिये रोकड़ खाता बनाना चाहिये।

6. क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में प्रविष्टियाँ

(ENTRIES IN THE BOOKS OF PURCHASING COMPANY)

- (1) क्रय प्रतिफल की राशि से व्यवसाय क्रय खाते को डेबिट करें तथा विक्रेता कम्पनी के सहायक को क्रेडिट (Cr.) करें।

	₹	₹
व्यापार क्रय खाता	Dr. 17,20,000	
जेड लिमिटेड के शोधनकर्ता को (तिथि पर ठहराव के अनुसार जेड लिमिटेड को भुगतान की गई राशि)		17,20,000

- (2) (i) क्रेता कम्पनी द्वारा (ख्याति को छोड़कर) लगाये गये मूल्य पर सम्पत्तियों को डेबिट करें।
- (ii) लिये गये दायित्वों को स्वीकृत मूल्य से क्रेडिट करें तथा व्यवसाय क्रय खाते को क्रय प्रतिफल की राशि से क्रेडिट करें।
- (iii) विक्रेता कम्पनी द्वारा लिए गये अंशों, यदि कोई हो तो को ऐसी अंशों की लागत से इस खाते को क्रेडिट करें।
- (iv) यदि उपरोक्त (ii) एवं (iii) में किये गये क्रेडिट की राशि उपरोक्त (i) में की गई डेबिट की राशि से ज्यादा हो तो इस अन्तर की राशि को ख्याति खाते में डेबिट करना चाहिये। जबकि विपरीत स्थिति में अन्तर की राशि को पूँजी संचय खाते में क्रेडिट करना चाहिये।

टिप्पणी (Notes)—ख्याति या पूँजी संचय की राशि यहाँ शामिल करते हुए सिर्फ पूर्वगामी तरीके से प्राप्त राशि ही ली जायेगी। उपरोक्त दशा में निम्नलिखित प्रविष्टियाँ पारित होंगी—

	₹	₹
भूमि तथा भवन खाता	Dr. 5,50,000	
संयंत्र तथा मशीनरी खाता	Dr. 6,50,000	
पेटेंट खाता	Dr. 20,000	
स्कन्ध खाता	Dr. 1,50,000	
विविध देनदार	Dr. 1,80,000	
ख्याति	Dr. 5,05,000	
विविध श्रमिक की क्षतिपूर्ति खाते के लिये विविध प्रावधान को		5,000
व्यापार लेनदार		1,20,000

	जेड लिमिटेड में ऋणपत्र		2,10,000
	व्यापार क्रय खाता		17,20,000
	(जेड लिमिटेड से अधिगृहीत विभिन्न संपत्तियाँ तथा दायित्व ख्याति को संतुलन आँकड़ों के रूप में अनुमानित किया गया)		
(3)	विक्रेता कंपनी को भुगतान पर इसके क्रेडिट पर शेष था, Wye लिमिटेड द्वारा बनाई गई प्रविष्टि होगी :		
		₹	₹
	जेड लिमिटेड का शोधक	Dr.	17,20,000
	रोकड़ को		2,00,000
	9% पूर्वाधिकार अंश पूँजी खाते को		4,00,000
	समता अंश पूँजी खाते को		8,00,000
	प्रतिभूति प्रीमियम खाते को		3,20,000
	(क्रय प्रतिफल की संतुष्टि पर रोकड़ का भुगतान तथा अंशों का निर्गमन)		
(4)	जेड लिमिटेड में ऋणपत्र	Dr.	2,10,000
	7% ऋणपत्र खाते को		2,00,000
	ऋणपत्र खाते पर प्रीमियम को		10,000
(5)	यदि क्रेता कम्पनी को विक्रेता कम्पनी के समापन के व्यय भी चुकाने होते हैं तो राशि को ख्याति या पूँजीगत संचय खाता, जैसी भी स्थिति हो में डेबिट किया जाना चाहिये।		
	ख्याति खाता	Dr.	10,000
	रोकड़ खाते को		10,000
	(जेड लिमिटेड पर विघटन व्ययों पर भुगतान)		

क्रय मूल्य पर प्रविष्टि (Entries at par value)—विद्यार्थी नोट करेंगे कि क्रेता कम्पनी के ख्याति खाते में (चरण नं. 2) डेबिट किया जायेगा। लेकिन बड़ी राशि अंश प्रीमियम खाते में रहेगी (चरण नं. 3)। दोनों का समयोजन नहीं किया जा सकता है। लेकिन, स्वीकार्य रहेगा यदि अंशों के बाजार मूल्य के आधार पर समझौता किया जाये लेकिन क्रेता कम्पनी के अंशों के सममूल्य के आधार पर ही केवल प्रविष्टियाँ बनाई जायें। इसका अर्थ होगा कि ख्याति खाता (अथवा पूँजी संचय) अंश प्रीमियम स्वतः ही समायोजित होंगे।

निम्न सूचनाएँ इस प्रकार हैं—

- 1 अप्रैल, 2012 को Better लिमिटेड द्वारा प्रत्येक दो अंशों के बदले में संचय और आधिक्य के अतिरिक्त एक अंश निर्गमित किया।
- यह सहमति हुयी थी कि पिछले चिट्ठे के आधार पर Best लिमिटेड Better लिमिटेड का व्यवसाय क्रय कर लेगी। यह निर्णय Best लिमिटेड में प्रतिफल अंशों के आबंटन का रूप ले लेता है।
- बोनस अंश के निर्गमन के पश्चात् Best लिमिटेड के अंशों मूल्य ₹ 150 है और Better लिमिटेड के अंशों का मूल्य (बोनस शेयर देने के पश्चात्) ₹ 100 है। अंशों का आबंटन इन्हीं मूल्यों के आधार पर किया जायेगा।
- Better लिमिटेड के दायित्वों में Best लिमिटेड के ₹ 1 लाख सम्मिलित हैं। Best लिमिटेड को इस खरीद की लागत पर 25% लाभ मिलता है। इन क्रयों में से ₹ 50,000 का माल उपरोक्त आर्थिक चिट्ठे की तिथि पर स्कंध के रूप में रखा जाता है।

Better लिमिटेड की पुस्तकों में अंतिम खाता बही बनाइये एवं Best लिमिटेड की पुस्तकों में प्रारंभिक प्रविष्टियाँ कीजिये तथा 1 अप्रैल, 2012 को अधिग्रहण के बाद आर्थिक चिट्ठा बनाइये।

समाधान (Solution)

लिमिटेड का खाता			
स्थायी सम्पतियाँ खाता			
	₹		₹
नीचे लाया गया शेष	15,00,000	वसूली खाता (हस्तान्तरण)	15,00,000
चालू सम्पतियाँ			
	₹		₹
नीचे लाया गया शेष	5,00,000	वसूली खाता (हस्तान्तरण)	5,00,000
दायित्व खाता			
	₹		₹
वसूली खाता	2,00,000	शेष नीचे ले जाइए	2,00,000
वसूली खाता			
	₹		₹
स्थायी सम्पतियों खाता	15,00,000	दायित्व खाता	2,00,000
चालू सम्पतियों खाता	5,00,000	Best लिमिटेड (क्रय प्रतिफल)	15,00,000
		अंशधारियों का खाता (वसूली पर हानि)	3,00,000
	<u>20,00,000</u>		<u>20,00,000</u>

अंश पूँजी खाता

		₹	₹
विविध अंशधारियों खाता (हस्तांतरण)		15,00,000	10,00,000
	शेष नीचे लाया गया		
	संचित एवं आधिक्य खाता (बोनस निर्गमन)		5,00,000
		<u>15,00,000</u>	<u>15,00,000</u>

संचिति तथा आधिक्य खाता

		₹	₹
अंश पूँजी (बोनस निर्गमन)	नीचे लाया गया शेष	5,00,000	8,00,000
विविध अंशधारी		<u>3,00,000</u>	
		8,00,000	<u>8,00,000</u>

Best लिमिटेड

		₹	₹
वसूली खाता क्रय प्रतिफल	Best लिमिटेड में अंश	<u>15,00,000</u>	<u>15,00,000</u>
		15,00,000	15,00,000

Best लिमिटेड में अंश

		₹	₹
Best लिमिटेड	विविध अंशधारी खाते	15,00,000	15,00,000

विविध अंशधारियों का खाता

		₹	₹
वसूली खाता (हानि)	अंश पूँजी खाता	3,00,000	15,00,000
Best लिमिटेड	संचिति तथा आधिक्य खाता	3,00,000	3,00,000
Best लिमिटेड में अंश		<u>12,00,000</u>	
		<u>18,00,000</u>	<u>18,00,000</u>

Best लिमिटेड की पूंजी प्रविष्टियाँ

2012	Dr. ₹	Dr. ₹
1 अप्रैल स्थायी सम्पत्तियाँ खाता	Dr. 15,00,000	
चालू सम्पत्तियाँ खाता	Dr. 5,00,000	
दायित्व खाता		2,00,000
Better लिमिटेड का शोधनकर्ता		12,00,000
पूँजी संचित खाता		3,00,000
(Better लिमिटेड की संपत्तियाँ तथा दायित्व ₹ 15,00,000 के क्रय प्रतिफल के लिए तथ निवेश के रद्दीकरण पर अधिग्रहीत किया गया, तिथि पर ठहराव के अनुसार ₹ 3,00,000 पर, Better लिमिटेड में धारित किया गया)		
Better लिमिटेड के शोधनकर्ता	Dr. 15,00,000	
अंश पूँजी खाता		10,00,000
प्रतिभूति प्रीमियम खाता		5,00,000
(ठहराव के अनुसार ₹ 50 प्रति अंश की प्रीमियम पर ₹ 10,00,000 के समता अंशों के निर्गमन द्वारा क्रय प्रतिफल को मुक्त करना)		
विविध लेनदार खाता	Dr. 1,00,000	
विविध देनदार खाता		1,00,000
(Better लिमिटेड से देय राशि तथा इसके अधिग्रहित लेनदार में शामिल किया गया स्वयं के विविध देनदारों के विरुद्ध रद्द किया गया)		
पूँजी संचित खाता	Dr. 10,000	
चालू सम्पत्ति (स्कंध) खाता		10,000
(Better लिमिटेड की चालू सम्पत्तियों में शामिल किये गये स्कंध पर गैर-वसूली लाभ, संचय खाते पर अपलिखित किया गया)		

कार्यशील टिप्पणी (Working Note) :

क्रय प्रतिफल की गणना—

₹ 100 प्रति अंश पर Better लिमिटेड की निर्गमित पूँजी (बोनस निर्गमन पश्चात्)

15,00,000

₹ 5,00,000 की प्रीमियम पर, ₹ 10,00,000 के लिए अंशों के निर्गमन द्वारा, Best लिमिटेड द्वारा क्रय प्रतिफल समाप्त किया गया। यह ₹ 150 प्रति अंश पर मूल्यांकित करती है।

Best लिमिटेड का चिह्न (संविलयन पश्चात)

विवरण	टिप्पणी	₹
समता तथा दायित्व		
1. अंशधारियों की निधि		
(a) अंश पूँजी	1	30,00,000
(b) संचय तथा आधिक्य	2	17,90,000
2. चालू दायित्व		21,00,000
	कुल	68,90,000
सम्पत्तियाँ		
1. अप्रचालित सम्पत्तियाँ		
(a) स्थायी सम्पत्तियाँ		
मूर्त सम्पत्तियाँ	3	40,00,000
(b) अप्रचालित निवेश		5,00,000
2. चालू सम्पत्तियाँ		23,90,000
	कुल	68,90,000

लेखों की टिप्पणी —

		₹
1. अंश पूँजी		
समता अंश पूँजी		
निर्गमित तथा माँगे गये		
₹ 100 के 30,000 अंश		
(10,000 अंशों में से रोकड़ के अतिरिक्त अन्य		
के लिए निर्गमित किया गया)		30,00,000
	कुल	30,00,000
2. संचय तथा आधिक्य		
पूँजी संचिति (3,00,000 – 10,000)		2,90,000
प्रतिभूति प्रीमियम		5,00,000
अन्य संचय तथा आधिक्य		10,00,000
	कुल	17,90,000
3. मूर्त सम्पत्तियाँ		
स्थायी सम्पत्तियाँ	25,00,000	
वर्ष के दौरान अधिगृहित	15,00,000	40,00,000
	कुल	40,00,000

उदाहरण (Illustration) 7

K लिमिटेड और L लिमिटेड एक नयी कम्पनी LK लिमिटेड के रूप में एकीकृत होती है। एकीकरण की तिथि पर दोनों कम्पनियों की वित्तीय स्थिति इस प्रकार है :

	K Ltd. ₹	L Ltd. ₹		K Ltd. ₹	L Ltd. ₹
अंश पूँजी ₹ 100 प्रत्येक			ख्याति	80,000	
के समता अंश	8,00,000	3,00,000	भूमि एवं भवन	4,50,000	3,00,000
₹ 100 प्रत्येक के 7% पूर्वाधिकार अंश	4,00,000	3,00,000	संयंत्र एवं यंत्र	6,20,000	5,00,000
5% ऋणपत्र	2,00,000		उपस्कर	60,000	20,000
सामान्य संचय	—	1,00,000	विविध देनदार	2,75,000	1,75,000
लाभ-हानि खाता	4,31,375	87,175	भण्डार एवं स्कंध	2,25,000	1,40,000
विविध लेनदार	1,00,000	2,20,000	रोकड़ अधिकोष	1,20,000	55,000
सुरक्षित ऋण	—	2,00,000	हस्तस्थ रोकड़	41,375	17,175
			प्रारम्भिक व्यय	60,000	
	<u>19,71,375</u>	<u>12,07,175</u>		<u>19,71,375</u>	<u>12,07,175</u>

एकीकरण की शर्तें इस प्रकार हैं—

- (A) (1) दोनों कम्पनियों के दायित्वों का पूर्वानुमान माना गया है।
- (2) ₹ 20 प्रत्येक के ₹ 5 पूर्वाधिकार अंश LK लिमिटेड द्वारा चुकता पूँजी ₹ 18 प्रब्याजि प्रति अंश ₹ 4 दोनों कम्पनियों द्वारा अधिग्रहित पूर्वाधिकार अंश निर्गमित किये जायेंगे।
- (3) अधिकता में, दोनों कम्पनियों के समता अंशधारियों को आवश्यक नगद भुगतान करना चाहिये। दोनों कम्पनियों के अंशों का आंतरिक मूल्य के अनुसार, दोनों कम्पनियों के अंशधारियों के अधिकार को समायोजित करना आवश्यक है। LK लि. में ₹ 20 प्रत्येक के छः समता अंशों का निर्गमन ₹ 18 चुकता की दर से ₹ 4 प्रति अंश प्रिमियम पर दो कम्पनियों में प्रत्येक धारित समता अंश हेतु किया गया।
- (4) LK लिमिटेड ने 6% ऋणपत्र पूर्णदत्त मूल्य पर निर्गमित किये ताकि K लिमिटेड के 5% ऋणपत्रों का 5% बट्टे पर भुगतान हो जाये।
- (B) (i) सभी सम्पत्तियों एवं दायित्वों को उनके पुस्तकीय मूल्य पर ले लिया गया, स्कंध एवं देनदारों पर क्रमशः 2% एवं 2½% का प्रावधान किया गया है।
- (ii) K लिमिटेड के विविध देनदारों में L लिमिटेड के ₹ 20,000 सम्मिलित हैं।

- (C) LK लिमिटेड ₹ 4 प्रति अंश की प्रीमियम पर ₹ 18 चुकता पूँजी प्रत्येक ₹ 20 के 15,000 नये समता अंशों को निर्गमित करता है, ताकि पर्याप्त कार्यशील पूँजी प्राप्त हो। K लिमिटेड तथा L लिमिटेड की पुस्तकों में उनकी पुस्तकें बंद करने के लिए तैयार कीजिए।

समाधान (Solution)

K लि. की पुस्तकें
वसूली खाता

	₹		₹
ख्याति	80,000	5% ऋणपत्र	2,00,000
भूमि तथा भवन	4,50,000	विविध लेनदार	1,00,000
संयंत्र तथा मशीनरी	6,20,000	LK लिमिटेड (क्रय प्रतिफल)	15,60,000
उपस्कर तथा फिटिंग	60,000	समता अंशधारी खाता	51,375
विविध देनदार	2,75,000	(हानि)	
स्टोर तथा स्कंध	2,25,000		
बैंक में रोकड़	1,20,000		
हस्तस्थ रोकड़	41,375		
पूर्वाधिकार अंशधारियों को (अतिरिक्त भुगतान)	40,000		
	<u>19,11,375</u>		<u>19,11,375</u>

समता अंशधारी खाता

	₹		₹
वसूली खाता (हानि)	51,375	अंश पूँजी	8,00,000
LK लिमिटेड में	10,56,000	लाभ-हानि खाता	3,71,375
रोकड़	<u>64,000</u>		
	<u>11,71,375</u>		<u>11,71,375</u>

LK लिमिटेड का खाता

	₹		₹
वसूली खाता	15,60,000	LK लिमिटेड में समता	
		अंश समता के लिये	10,56,000
		पूर्वाधिकार के लिये	<u>4,40,000</u>
		रोकड़	<u>64,000</u>
	<u>15,60,000</u>		<u>15,60,000</u>

L लिमिटेड की पुस्तकों में

वसूली खाता

		₹	₹
भूमि तथा भवन	3,00,000	विविध लेनदार	2,10,000
संयंत्र तथा मशीनरी	5,00,000	जमानती ऋण	2,00,000
उपस्कर तथा फिटिंग	20,000	By LK लिमिटेड (क्रय प्रतिफल)	7,90,000
विविध देनदार	1,75,000	समता अंशधारी खाता	37,175
भंडार में स्कंध	1,40,000	(हानि)	
बैंक में रोकड़	55,000		
हस्तस्थ रोकड़	17,175		
पूर्वाधिकार अंशधारी	<u>30,000</u>		
	<u>12,37,175</u>		<u>12,37,175</u>

समता अंशधारियों का खाता

		₹	₹
LK लिमिटेड में समता अंश	3,96,000	अंश पूँजी	3,00,000
वसूली	37,175	लाभ तथा हानि खाता	97,175
रोकड़	<u>64,000</u>	संचिति	<u>1,00,000</u>
	<u>4,97,175</u>		<u>4,97,175</u>

LK लिमिटेड का खाता

		₹	₹
वसूली खाता	7,90,000	LK लिमिटेड समता अंश	
		समता के लिए	3,96,000
		पूर्वाधिकार के लिए	<u>3,30,000</u>
		रोकड़	<u>64,000</u>
	<u>7,90,000</u>		<u>7,90,000</u>

कार्यशील टिप्पणी (Working Notes) :

(i) क्रय प्रतिफल (Purchase consideration)

	K लिमिटेड ₹	L लिमिटेड ₹
पूर्वाधिकार अंशधारियों को भुगतान : ₹ 22 प्रतिअंश पर पूर्वाधिकार अंश	4,40,000	3,30,000
₹ 22 प्रतिअंश पर समता अंश	10,56,000	3,96,000
रोकड़ [कार्यशील टिप्पणी (ii) देखें]	<u>64,000</u>	<u>64,000</u>
	<u>15,60,000</u>	<u>7,90,000</u>

(ii) शुद्ध सम्पत्तियों का मूल्य (Value of Net Assets)

	K लिमिटेड ₹	L लिमिटेड ₹
ख्याति	80,000	
भूमि तथा भवन	4,50,000	3,00,000
संयंत्र तथा मशीनरी	6,20,000	5,00,000
उपस्कर तथा फिटिंग	60,000	20,000
25% घटाया देनदार	2,68,125	1,70,625
2% घटाया स्कन्ध	2,20,500	1,37,200
बैंक में रोकड़	1,20,000	55,000
हस्तस्थ रोकड़	<u>41,375</u>	<u>17,175</u>
	18,60,000	12,00,000
घटाया: ऋणपत्र	2,00,000	
लेनदार	1,00,000	2,10,000
जमानती ऋण	–	3,00,000
	<u>15,60,000</u>	<u>7,90,000</u>
अंशों में भुगतान	<u>14,96,000</u>	<u>7,26,000</u>
रोकड़ में भुगतान	<u>64,000</u>	<u>64,000</u>

उदाहरण (Illustration) 8

31.03.2012 को A लिमिटेड तथा B लिमिटेड के संक्षिप्त चिट्ठे निम्न प्रकार हैं :

	(हजार रुपये में)	
	A लिमिटेड	B लिमिटेड
दायित्व		
अंश पूँजी :		
प्रत्येक 100 के पूर्ण देय समता अंश	2,000	1,000
संचय	800	---
10% ऋणपत्र	500	---
बैंकों से ऋण	250	450
बैंक अधिविकर्ष	---	50
विविध लेनदार	300	300
प्रस्तावित लाभांश	200	---
कुल	4,050	1,800
सम्पत्तियाँ		
मूर्त सम्पत्तियाँ/स्थायी सम्पत्तियाँ	2,700	850
निवेश (B लिमिटेड में निवेश को मिलाकर)	700	---
विविध देनदार	400	150
बैंक में रोकड़	250	---
असंचयी हानि	---	800
कुल	4,050	1,800

B लिमिटेड ने A लिमिटेड का व्यवसाय अधिग्रहित किया। विलय की निम्न योजनाओं को सम्बन्धित किया गया :

- बैंक B लिमिटेड के ₹ 60,000 के ऋण का अपलिखन के लिये सहमत हुआ।
- B लिमिटेड इसके अंशों को ₹ 10 प्रति अंश पर कम करती है तथा उसके बाद ऐसे 10 अंशों को प्रत्येक ₹ 100 के एक अंश में समेकित किया (नये अंश)।
- A लिमिटेड के अंशधारी, A लिमिटेड में धारित प्रत्येक अंश के हस्तांतरण में B लिमिटेड के (नये) एक अंश को दिया गया।
- A लिमिटेड के प्रस्तावित लाभांश A लिमिटेड के अंशधारियों से विलय के पश्चात् भुगतान किया जायेगा।
- B लिमिटेड के विविध लेनदार, A लिमिटेड के ₹ 100 हजार भुगतान को शामिल करता है।
- A लिमिटेड निवेश के रूप में B लिमिटेड में 20% धारितों को रद्द कर देगा, जोकि ₹ 250 हजार की लागत पर धारण किया गया।

B लिमिटेड की पुस्तकों में आवश्यक प्रविष्टियाँ प्रतिपादित कीजिए तथा विलय के पश्चात् चिट्ठा तैयार कीजिए।

समाधान (Solution)

क्रय प्रतिफल की गणना (Calculation of purchase consideration)

B लिमिटेड के एक अंश A लिमिटेड के हस्तांतरण में निर्गमित किये गये (अर्थात् B लिमिटेड के 20,000 समता अंश A लिमिटेड के 20,000 समता अंश के विरुद्ध निर्गमित किये जायेंगे)	20,000 अंश
---	------------

B लिमिटेड की पुस्तकों में पूंजी प्रविष्टियाँ

तिथि 2012		(हजार रुपये में)	
		Dr.	Cr.
31 मार्च	बैंक खाते से ऋण पुनर्निर्माण खाते को (बैंक से ऋण ₹ 60,000 की सीमा तक अपलिखित किया गया)	Dr. 60	60
	समता अंश पूँजी खाता का (₹ 100) समता अंश पूँजी खाते को (₹ 10) पुनर्निर्माण खाते को (₹ 100 के प्रत्येक समता अंश, ₹ 10 के प्रत्येक पर घटाये गये)	Dr. 1,000	100 900
	समता अंश पूँजी खाता (₹ 10) समता अंश पूँजी खाता (प्रत्येक ₹ 100) (प्रत्येक ₹ 100 के 10 समता अंश, प्रत्येक ₹ 100 के एक अंश पर समेकित किया गया)	Dr. 100	100
	वसूली खाता लाभ तथा हानि खाता को पूँजी संचिति खाते को	Dr. 960	800 160
	(असंचयी हानियों को वसूली खाते के लिए अपलिखित किया गया तथा शेष को पूँजी संचय खाते पर हस्तांतरित किया गया)		
	व्यवसाय क्रय खाता A लिमिटेड के शोधनकर्ता को (A लिमिटेड के व्यापार को क्रय होने पर)	Dr. 2,000	2,000
	स्थायी सम्पत्तियाँ खाता	Dr. 2,700	
	निवेश खाता (700-250)	Dr. 700	
	विविध देनदार खाता	Dr. 400	
	बैंक में रोकड़ खाता	Dr. 250	

विविध लेनदार खाते को			300
प्रस्तावित लाभांश खाते को			200
बैंक से ऋण खाते को			250
10% ऋणपत्र खाते को			500
व्यापार क्रय खाते को			2,000
संचय खाते को (800-230)			800
(सम्पत्ति, दायित्व तथा संचिति को ब्याज पद्धति के हित के अन्तर्गत अधिग्रहित किया गया)			
A लिमिटेड का शोधनकर्ता खाता	Dr.	2,000	
समता अंश पूँजी खाता को			2,000
(19,800 नये समता अंशों के आबंटन द्वारा A लिमिटेड के शोधनकर्ता को भुगतान किया गया)			
विविध लेनदार खाते	Dr.	100	
विविध देनदार खाते को			100
(साझा अधिग्रहण रद्द करते हुए)			
प्रस्तावित लाभांश खाता	Dr.	200	
बैंक खाते को			200
(लाभांश भुगतान करते हुए)			

31.03.2012 को विलय के पश्चात् B लिमिटेड का चिट्ठा

विवरण	टिप्पणी	'000 में ₹
समता एवं दायित्व		
1. अंशधारियों की निधि		
(a) अंश पूँजी	1	2,200
(b) संचिति एवं आधिक्य	2	960
2. अप्रचलित दायित्व		
(a) दीर्घ-अवधि ऋण	3	1,140
3. चालू दायित्व		
(a) व्यापार देयता		500
(b) अल्प-अवधि ऋण	4	50
	कुल	4,750

सम्पत्तियाँ		
1.	अप्रचलित सम्पत्तियाँ	
	(a) स्थायी सम्पत्तियाँ	
	मूर्त सम्पत्तियाँ	3,550
	(b) अप्रचलित निवेश	700
2.	चालू सम्पत्तियाँ	
	(a) व्यापार प्राप्तियाँ	450
	(b) रोकड़ तथा रोकड़-तुल्य	50
	कुल	4,750

लेखों की टिप्पण :

			₹ '000
1.	अंश पूँजी		
	प्रत्येक ₹ 100 के 20,800 समता अंश पूर्ण देय (उपरोक्त में से, 19,800 अंश रोकड़ के अतिरिक्त प्रतिफल के लिये निर्गमित किये गये)		2,100
2.	संचिति तथा आधिक्य		
	पूँजी संचिति	160	
	सामान्य संचिति	800	
	कुल		960
3.	दीर्घ-अवधि ऋण		
	10% ऋणपत्र	500	
	बैंक से ऋण (250 + 450 - 60)	640	1,140
4.	अल्प-अवधि ऋण		
	बैंक अधिविकर्ष		50

उदाहरण (Illustration) 9

नीचे 31.12.2012 को ह्यूज लिमिटेड तथा बिग लिमिटेड का संक्षिप्त चिदटा दिया गया है। B लिमिटेड 01.01.2013 से प्रभावी होते हुये ह्यूज लिमिटेड के साथ विलय हुआ।

31.12.2012 को चिदटा

(₹)

दायित्व	ह्यूज लि.	बिग लि.	सम्पत्तियाँ	ह्यूज लि.	बिग लि.
अंश पूँजी :			विविध स्थायी निवेश	9,50,000	4,00,000
प्रत्येक ₹ 10 के समता	7,00,000	2,50,000	(गैर-व्यापारिक)	2,00,000	50,000
सामान्य संचिति	3,50,000	1,20,000	स्कंध	1,20,000	50,000

लाभ तथा हानि खाता	2,00,000	65,000	देनदार	75,000	80,000
निर्यात तथा संचिति	70,000	40,000	अग्रिम कर	80,000	20,000
12% ऋणपत्र	1,00,000	1,00,000	रोकड़ तथा बैंक	2,75,000	1,30,000
विविध लेनदार	40,000	45,000			
कर के लिये प्रावधान	1,00,000	60,000			
प्रस्तावित लाभांश	<u>1,40,000</u>	<u>50,000</u>			
	<u>17,00,000</u>	<u>7,30,000</u>		<u>17,00,000</u>	<u>7,30,000</u>

ह्यूज लिमिटेड उचित मूल्य पर Big लिमिटेड के ऋणपत्रधारियों के दावों को समाप्त करने के लिये 12% ऋणपत्र निर्गमित करता है। ह्यूज लिमिटेड के गैर-व्यापारिक निवेश 25% की दर पर, जबकि Big लिमिटेड के गैर-व्यापारिक निवेश 18% की दर पर किये गये। 2010, 2011 तथा 2012 के दौरान ह्यूज लिमिटेड तथा बिग लिमिटेड का लाभ निम्न प्रकार था :

वर्ष	ह्यूज लिमिटेड	बिग लिमिटेड
	₹	₹
2010	5,00,000	1,50,000
2011	6,50,000	2,10,000
2012	5,75,000	1,80,000

ख्याति को 20% सामान्य प्रत्याय दर लेते हुए पूँजीकरण पद्धति के आधार पर गणना की जा सकती है। क्रय प्रतिफल अतिरिक्त मूल्य अंश के आधार पर ह्यूज लिमिटेड द्वारा समाप्त किया जा सकता है। दोनों कम्पनियों प्रस्तावित लाभांश को रद्द करने का निर्णय कर चुकी हैं।

पंजी प्रविष्टियाँ प्रस्तावित कीजिए तथा विलय के पश्चात् ह्यूज लिमिटेड का चिह्न तैयार कीजिए।

समाधान (Solution)

विलय के पश्चात् मेसर्स ह्यूज, लिमिटेड का चिह्न

विवरण	टिप्पणी	₹
समता तथा दायित्व		
1. अंशधारियों की निधि		
a अंश पूँजी	1	9,24,000
b संचिति तथा आधिक्य	2	14,80,960
2. अप्रचलित दायित्व		
a दीर्घ अवधि ऋण	3	2,00,000

3. चालू दायित्व		
a व्यापार देयताएँ		85,000
b अल्प-अवधि प्रावधान	4	1,60,000
कुल		28,49,960
सम्पत्तियाँ		
1. अप्रचलित सम्पत्तियाँ		
a स्थायी सम्पत्तियाँ		
मूर्त सम्पत्तियाँ		13,50,000
अमूर्त सम्पत्तियाँ	5	3,80,000
b अप्रचलित निवेश		2,50,000
c अन्य अप्रचलित सम्पत्तियाँ	7	40,000
2. चालू सम्पत्तियाँ		
a रहतिया		1,70,000
b व्यापार प्राप्तियाँ		1,55,000
c रोकड़ तथा रोकड़ तुल्य		4,04,960
d अल्प अवधि ऋण तथा अग्रिम	6	1,00,000
कुल		28,49,960

लेखों के टिप्पण :

		₹
1. अंश पूँजी		
प्रत्येक ₹ 10 के 92,400 समता अंश		9,24,000
(जिनमें से 22,400 अंश रोकड़ के अतिरिक्त प्रतिफल के लिए निर्गमित किये गए)		
2. संचय तथा आधिक्य		
प्रतिभूति प्रीमियम		6,80,960
सामान्य संचय		3,50,000
लाभ तथा हानि खाता	2,00,000	
जोड़ा : प्रस्तावित लाभांश रद्द	1,40,000	3,40,000
निर्यात लाभ संचिति (70,000+_40,000)		1,10,000
कुल		14,80,960

3.	दीर्घ-अवधि ऋण जमानती 12% ऋणपत्र (1,00,000+1,00,000)		2,00,000
4.	अल्प-अवधि प्रावधान कर के लिए प्रावधान (1,00,000+60,000)		1,60,000
5.	अमूर्त सम्पत्तियाँ ख्याति (W.N.3C)		3,80,000
6.	अल्प अवधि ऋण तथा अग्रिम अग्रिम कर (80,000+20,000)		1,00,000
7.	अन्य अप्रचलित सम्पत्तियाँ एकीकरण समायोजन खाता		40,000

कार्यशील टिप्पणी (Working Notes) :

1. क्रय प्रतिफल की गणना :

बिग लिमिटेड के समता अंश	25,000 अंश
Big लिमिटेड की प्रति अंश आंतरिक मूल्य (W. W. 2)	₹ 36.2
अंशों का मूल्य	₹ 9,05,000
Huge लिमिटेड का प्रति अंश आंतरिक मूल्य (W. N. 2)	₹ 40.4
Huge लिमिटेड द्वारा निर्गमित किये गये अंशों की संख्या	₹ 9,05,000 / ₹ 40.4
	= 22,400.99
22,400 शेयरों और अंश के लिए नकद	$0.99 \times ₹ 40.4 = ₹ 40$

क्रय प्रतिफल

(i) ₹ 40.4 पूँजी की दर पर 22,400 अंश [₹ 10/अंश]	2,24,000	
प्रीमियम [₹ 30.4/अंश]	6,80,960	₹ 9,04,960
(ii) अंश के लिये रोकड़		₹ 40
(iii) कुल क्रय प्रतिफल भुगतान		₹ 9,05,000

2. आंतरिक मूल्य प्रति अंश :

	ह्यूज लि. लिमिटेड		बिग लिमिटेड	
	₹	₹	₹	₹
सम्पत्तियाँ				
(i) ख्याति (W.N.3)	13,65,000		3,80,000	
(ii) विविध स्थायी सम्पत्तियाँ	9,50,000		4,00,000	

(iii) निवेश	2,00,000		50,000	
(iv) स्टॉक	1,20,000		50,000	
(v) देनदार	75,000		80,000	
(vi) अग्रिम कर	80,000		20,000	
(vii) रोकड़ तथा बैंक शेष	2,75,000	30,65,000	1,30,000	11,10,000
दायित्व				
(i) 12% ऋणपत्र	1,00,000		1,00,000	
(ii) विविध लेनदार	40,000		45,000	
(iii) कर के लिए प्रावधान	<u>1,00,000</u>	<u>(2,40,000)</u>	<u>60,000</u>	<u>2,05,000</u>
शुद्ध सम्पत्तियाँ		28,25,000		9,05,000
अंशों की संख्या		70,000		25,000
प्रति अंश आंतरिक मूल्य (दशमलव तक)		40.4		36.2

3. ख्याति का मूल्यांकन (Valuation of goodwill)

A. लगाई गई पूँजी (Capital Employe)

	ह्यूज लिमिटेड		बिग लिमिटेड	
	₹	₹	₹	₹
सम्पत्तियाँ				
(i) विविध स्थाई सम्पत्तियाँ	9,50,000		4,00,000	
(ii) निवेश (गैर-व्यापारिक)	—		—	
(iii) स्कन्ध	1,20,000		50,000	
(iv) देनदार	75,000		80,000	
(v) अग्रिम कर	80,000		20,000	
(vi) रोकड़ तथा रोकड़ तुल्य	<u>2,75,000</u>	15,00,000	<u>1,30,000</u>	6,80,000

दायित्व				
(i) 12% ऋणपत्र	1,00,000		1,00,000	
(ii) विविध लेनदार	40,000		45,000	
(iii) कर के लिए प्रावधान	1,00,000	<u>(2,40,000)</u>	60,000	<u>(2,05,000)</u>
लगाई गई पूँजी		<u>12,60,000</u>		<u>4,75,000</u>

B. औसत कर पूर्व लाभ (Average pre-tax profit) :

विवरण	ह्यूज लिमिटेड ₹	बिग लिमिटेड ₹
2010	5,00,000	1,50,000
2011	6,50,000	2,10,000
2012	<u>5,75,000</u>	<u>1,80,000</u>
कुल (a+b+c)	<u>17,25,000</u>	<u>5,40,000</u>
सामान्य औसत [कुल ÷ 3]	5,75,000	1,80,000
घटाया : गैर-व्यापारिक आय (25% की दर पर 2,00,000)	(50,000)	
(18% की दर पर 50,000)		<u>(9,000)</u>
औसत लाभ	<u>5,25,000</u>	<u>1,71,000</u>

C. ख्याति की गणना (Computation of goodwill)

विवरण	ह्यूज लिमिटेड	बिग लिमिटेड ₹
औसत लाभों का पूँजीकरण मूल्य $\left[\frac{5,25,000}{.20}; \frac{1,71,000}{.20} \right]$	26,25,000	8,55,000
लगाई गई पूँजी	<u>12,60,000</u>	<u>4,75,000</u>
ख्याति	<u>13,65,000</u>	<u>3,80,000</u>

सारांश

(SUMMARY)

- एकीकरण का तात्पर्य दो या दो से अधिक कम्पनियाँ जो पहले से अस्तित्व में हैं एक नयी कम्पनी के रूप में सम्मिलित होती है। सम्मिलित हुई कम्पनियाँ अपनी एकरूपता को खो देती हैं एवं एक नयी कम्पनी के रूप में स्वतः अस्तित्व में आती हैं।
- संविलयन, एक कम्पनी जो पहले से ही अस्तित्व में है। एक को अन्य द्वारा साथ में संविलयन करना इस प्रकार एक कम्पनी का समापन होता है तथा कम्पनी उसमें सम्मिश्रण हो जाती है।
- एक कम्पनी जो किसी अन्य कम्पनी में विलय होता है, उस कम्पनी को हस्तांतरक कम्पनी या विक्रेता कम्पनी कहते हैं।
- एक कम्पनी जिसका विक्रेता कम्पनी को एकीकृत कर लेती है उसे हस्तांतरी कम्पनी या क्रेता कम्पनी कहते हैं।
- एकीकरण विलयन के स्वभाव का है, वहाँ हितों का समूहीकरण निम्न ढंग से होता है —
 - (1) कम्पनियों द्वारा सम्पत्तियों एवं दायित्वों का एकीकरण किया जायेगा
 - (2) अंश धारकों को ब्याज
 हस्तांतरक कम्पनी भी हस्तांतरी कम्पनी के व्यवसाय को लेने का इरादा रखती है।
- एकीकरण क्रय के स्वभाव का है एक कम्पनी दूसरी कम्पनी के व्यवसाय को अधिगृहीत करती है।
- क्रय प्रतिफल शेयरों और प्रतिभूतियों का निर्गमन हो जाता है और हस्तांतरी कम्पनी द्वारा नकद या अन्य संपत्ति के रूप में हस्तांतरी कम्पनी को अंशधारक के लिये किये गये भुगतान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
- एकीकरण के लेखांकन के लिये दो मुख्य विधियाँ हैं —
 - (1) हितों के समूहीकरण की विधि तथा
 - (2) क्रय विधि
- हितों के समूहीकरण विधि के अन्तर्गत हस्तांतरक कम्पनी की सम्पत्तियों, दायित्वों एवं संचयों को हस्तांतरी कम्पनी विद्यमान मूल्य पर लेती है।
- क्रय विधि के अन्तर्गत हस्तांतरण करती कम्पनी की सम्पत्तियों और दायित्वों के मौजूद परिचालन राशि अथवा क्रय प्रतिफल उनके उचित मूल्यों के आधार पर होता है।

7

औसत देय तिथि और चालू खाता [AVERAGE DUE DATE AND ACCOUNT CURRENT]

भाग 1 : औसत देय तिथि

(UNIT 1 : AVERAGE DUE DATE)

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत, आप सक्षम हो जायेंगे—

- औसत देय तिथि क्या है और औसत देय तिथि की गणना करने के लिए 0 (शून्य) दिवस का चुनाव कैसे करें को समझने में।
- नियत तिथि की गणना की तकनीक सीखना।
- औसत देय तिथि की गणना करना सीखने में जब रकम अनेक किस्तों में उधार दी जाती है।
- आहरण पर ब्याज को निर्धारित करने के लिए औसत देय तिथि की गणना करने में।
- औसत देय तिथि निकालने के सम्बन्ध में विभिन्न चरणों से परिचित होने में, जब रकम एक मुश्त में उधार दी जाती है लेकिन उसका भुगतान कई किस्तों में करना होता है, साथ ही अनुग्रह दिवसों को समझने में तथा अनुग्रह दिवस से गिनते हुए परिपक्वता (Maturity) तिथि की तकनीक को सीखने में।

1.1 परिचय (Introduction)

व्यावसायिक उपक्रमों में, किसी एकाकी पक्षकार के साथ ही विभिन्न समय बिन्दुओं पर बड़ी संख्या में प्राप्ति एवं भुगतान हो सकते हैं। इन लेनदेनों में सन्निहित (Involved) ब्याज की गणना को सरल बनाने के लिए औसत देय तिथि के विचार को विकसित किया गया है। इस इकाई में हम औसत देय तिथि ज्ञात करने में निहित सिद्धान्तों पर विचार करेंगे जिनमें ऐसी स्थितियाँ भी शामिल हैं जब रकम अनेक किस्तों में उधार दी जाती है, लेकिन पुनः भुगतान एकमुश्त ही कर दिया जाता है तथा साथ ही जब रकम एक ही किस्त में उधार दी जाती है लेकिन पुनः भुगतान अनेक किस्तों में किया जाता है। व्यावसायिक फर्म के स्वामियों या साझेदारों द्वारा विभिन्न समय

बिन्दुओं पर किये गये आहरणों पर ब्याज की गणना में भी औसत देय तिथि की तकनीक उपयोगी होती है।

1.2 देय तिथि (Due Date)

किसी भी विपत्र या बीजक के भुगतान की देय तिथि वह तिथि होती है जिस तिथि पर उस विपत्र या बीजक की राशि का भुगतान लेनदार (जिसके नाम पर विपत्र या बीजक) बनाया गया है, को देनदार (विपत्र या बीजक जारीकर्ता) को देना होता है।

1.2.1 देय तिथि की गणना, छूट के दिनों को ध्यान में लेने के उपरान्त (Calculation of Due Date after Taking into Consideration Day of Grace)—कोई विपत्र या वचन पत्र जिस तिथि पर देय होता है वह उसी तिथि पर परिपक्व होता है और प्रत्येक वचन पत्र और विपत्र (मांग करने पर देय या दृष्टिगत होने पर या प्रस्तुत किये जाने पर देय छोड़कर) जिस तिथि पर देय लिखा गया होता है उसके तीन दिन के उपरान्त देय होता है।

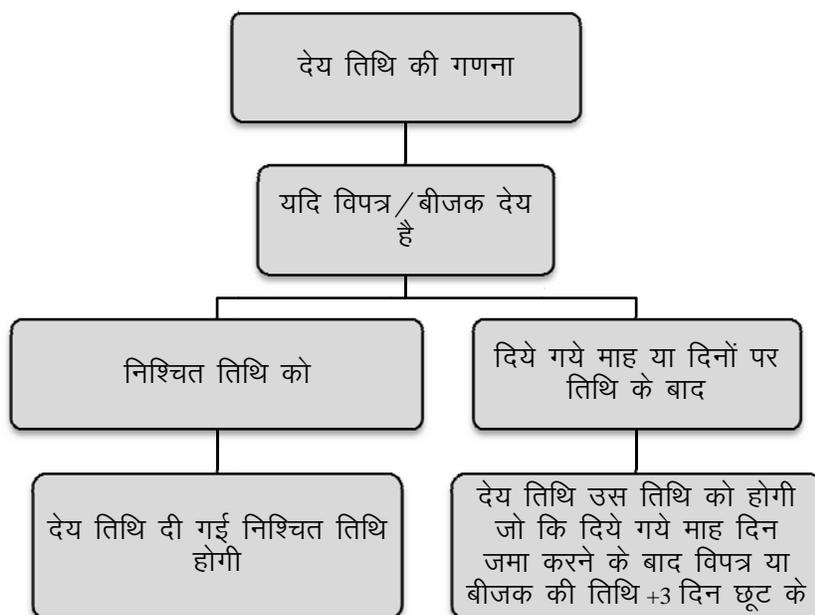
उदाहरण (Example)—

- (i) एक विपत्र दिनांक 30 सितम्बर को उस तिथि से तीन माह की तिथि पर देय बनाया गया है तो यह विपत्र 2 जनवरी को देय होगा।
- (ii) एक वचन पत्र दिनांक 1 जनवरी दृष्टि के उपरान्त एक माह पर देय है तो वह वचन पत्र 4 फरवरी को देय हो जायेगा।

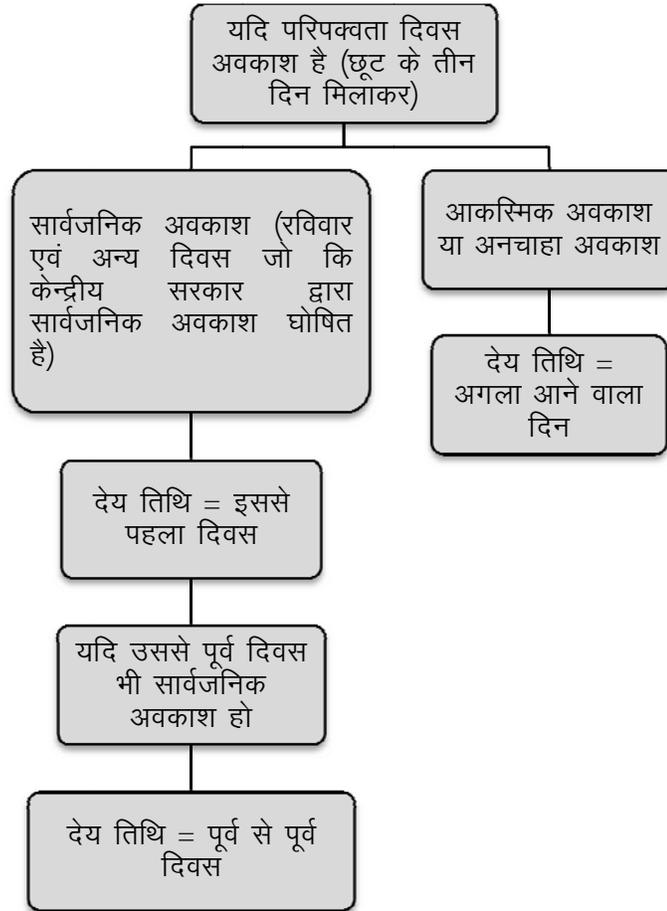


1.2.2 विपत्र या वचन पत्र की देय तिथि की गणना जोकि कुछ माह, दिन, तिथि से दृष्टिगत होने की तिथि पर देय बनया गया है (Calculating Due Date of Bill or Note Payable Few Months after Date or Sight)—जब किसी विपत्र को दिये गये माह की संख्या विपत्र की तिथि या दृष्टिगत होने की तिथि या किसी घटना होने के उपरान्त देय बनाया जाता है तो उस अवधि का अन्त उस तिथि को उस माह की तिथि पर होगा जोकि विपत्र जारी करने की तिथि के समान होगी यदि जब उस तिथि का अन्त होता है और वह दिवस उस तिथि को नहीं है तो उस तिथि की गणना उस माह की अंतिम तिथि के रूप में होगी।

उदाहरण (Example)—एक विपत्र 29 जनवरी 2011 को देय है उसे उस तिथि से एक माह पर देय बनाया जाता है। उस विपत्र की देय तिथि 28 फरवरी से तीन बाद है यानी की 3 मार्च को होगी क्योंकि वर्ष 2011 में फरवरी में केवल 28 दिन हैं :



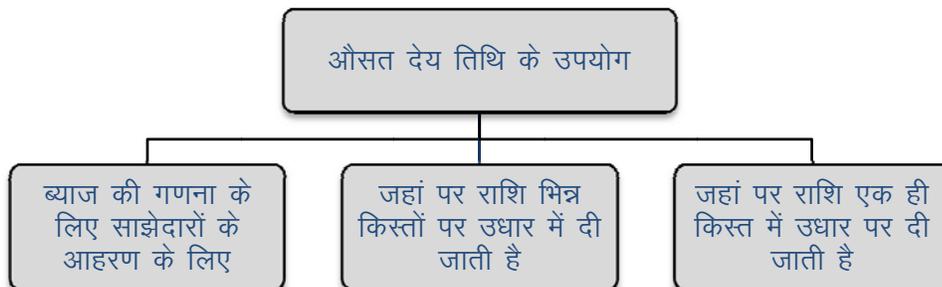
1.2.3 जब परिपक्वता दिवस अवकाश का दिन हो तो देय तिथि की गणना (Calculation of Due Date when the Maturity Day is a Holiday)—जब वह दिन जिस दिन वचन पत्र या विपत्र परिपक्व हो गया है (3 दिन छूट के मिलाकर) उस दिन सार्वजनिक अवकाश है तो वह विलेख दिये गये दिवस से एक दिन पहले के दिवस पर देय माना जायेगा। सार्वजनिक अवकाश दिवस रविवार तथा अन्य वह अवकाश दिवस होते हैं जिन्हें केन्द्रीय सरकार ने विज्ञप्ति के द्वारा उन्हें सार्वजनिक अवकाश घोषित किया है और अब यदि दिये गये दिवस से पूर्व का भी दिवस सार्वजनिक अवकाश दिवस है तो उससे पूर्व का दिवस ही देय दिवस तिथि माना जायेगा। पर यदि वह सार्वजनिक अवकाश अकस्मिक है तो देय तिथि उस अवकाश से अगला दिवस देय तिथि होगी।



1.3 समस्याओं के प्रकार (Types of Problems)

समस्याएँ दो प्रकार की होती हैं—

- (1) समानीकृत तिथि की गणना जब रकम भिन्न किश्तों में उधार दी जाती है और उस कर्ज का पुनः भुगतान एक ही तिथि पर किया जाता है।
- (2) समानीकृत तिथि की गणना जब उधार की रकम एक ही किश्त में दी जाती है पर उसका पुनर्भुगतान विभिन्न किश्तों में किया जाता है।



1.3.1 दृष्टांत (Case) 1. जहाँ पर कर्ज राशि विभिन्न राशियों में दी जाती है (Where amount is lent in various instalments)

औसत देय तिथि की गणना (Calculation of average due date)—इस प्रकार की समस्या में औसत देय तिथि की गणना निम्न रूप से की जाती है—

- सबसे पहली देय तिथि को आरम्भ की तिथि या आधार तिथि या सुविधा के लिए 0 दिवस को ले कोई भी तिथि जो भी वह हो को 0 दिवस के रूप में लिया जा सकता है।
- आधार तिथि से देय तिथि के बीच के दिनों की संख्या को ध्यान रखो। गणना माह में एक बार भी की जा सकती है।
- सम्बन्धित राशि को दिनों की संख्या से गुणा करें।
- गुणांक और राशि को आपस में जमा करें।
- गुणांक फल जोड़ को राशि जोड़ में भाग दें और परिणाम को पूर्णांक तक लें।
- इस प्रकार प्राप्त परिणाम अंक को आधार तिथि में जमा करें और उससे औसत देय तिथि ज्ञात करें।

इस प्रकार, औसत देय तिथि के लिए निम्न सूत्र हो सकता है—

$$\text{औसत देय तिथि} = \text{आधार तिथि} \pm \frac{\text{गुणांक फल जोड़}}{\text{राशियों का योग}}$$

नोट (Note)—दिनों की संख्या की गणना के लिए प्रत्येक माह में दिनों की संख्या को अलग से गिना जाना चाहिए।

उदाहरण (Illustration) 1

समान पक्षकारों के बीच में विभिन्न तिथियों पर निम्नलिखित राशियाँ देय हैं—

राशि ₹	देय तिथि
500	3 rd जुलाई
800	2 nd अगस्त
1,000	11 th सितम्बर

एक तिथि सुझाएँ जिस पर सभी विपत्रों का भुगतान किसी भी पक्षकार को ब्याज की हानि हुए बिना चुकाया जा सके।

समाधान (Solution)

3rd जुलाई को प्रारम्भिक दिवस के रूप में लेते हुए निम्नलिखित तालिका तैयार की गयी है—

देय तिथियाँ	राशि	3 rd जुलाई से दिनों की संख्या	गुणनफल
3 rd जुलाई	500	0	0
2 nd अगस्त	800	30	24,000

11th सितम्बर	<u>1,000</u>	70	<u>70,000</u>
	<u>2,300</u>		<u>94,000</u>

$$\text{औसत देय तिथि} = 3\text{rd जुलाई} + \frac{94,000}{2,300}$$

$$= 3\text{rd जुलाई} + 41 \text{ दिन} = 13^{\text{th}} \text{ अगस्त}$$

माना कि 5% ब्याज दर है, देनदार को पूर्व भुगतान से 29 दिनों (13th अगस्त से 11th सितम्बर तक) हेतु ₹ 1,000 पर ब्याज की हानि होगी यानि कि ₹ 4। हालांकि उसे, ₹ 500 पर 41 दिनों (3rd जुलाई से 13th अगस्त तक) हेतु एवं ₹ 800 पर 11 दिनों हेतु विलम्ब भुगतान पर ब्याज का लाभ होगा यानि कि, ₹ 2.80 + ₹ 1.20 यानि कि, ₹ 4। इसलिए सभी राशियों का 13th अगस्त पर भुगतान द्वारा देनदार को न ही हानि होगी और न ही लाभ।

दिनों कि संख्या की गणना हेतु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि तिथियों की गणना में या तो प्रारम्भिक तिथि या देय तिथि में से किसी भी एक दिन को गिना जाएगा।

इसी प्रकार से एक पक्षकार द्वारा एक ही पक्षकार से उतनी ही देय राशि के विपत्र के हित में दो औसत देय तिथियों के बीच व्यतीत अवधि हेतु ब्याज के समायोजन के पश्चात् निरस्त किया जा सकता है। उपरोक्त अनुसार एक ही तिथि पर कई विपत्रों का भुगतान करने के स्थान पर, औसत देय तिथि से प्रारम्भ एक अन्य सहमत अवधि हेतु ब्याज सहित अन्य विपत्र को भी उस अवधि हेतु स्वीकार किया जा सकता है।

उदाहरण (Illustration) 2

दो व्यापारी X और Y आपस में माल खरीदते हैं, वे एक-दूसरे से एक माह के उधार की अनुमति देते हैं। तीसरे माह के अंत पर प्रस्तुत खाते निम्नानुसार हैं—

	X द्वारा Y को माल की बिक्री		Y द्वारा X को माल की बिक्री
	₹		₹
18 अप्रैल	60.00	23 अप्रैल	52.00
15 मई	70.00	24 मई	50.00
16 जून	80.00		

उस तिथि की गणना कीजिये जिस पर शेष भुगतान इस प्रकार होना चाहिए ताकि X या Y में से किसी पर भी ब्याज देय न हो।

समाधान (Solution)

18th मई को आधार दिवस या शून्य के रूप में लेते हुए—

Y के भुगतानों के लिए

सौदों की तिथि	देय तिथि	राशि	आधार तिथि से दिनों की संख्या	गुणनफल
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
18 अप्रैल	18 मई	60	0	0
15 मई	15 जून	70	28	1,960
16 जून	16 जुलाई	<u>80</u>	59	<u>4,720</u>
X को देय राशि		<u>210</u>	गुणनफलों का योग	<u>6,680</u>

X के भुगतानों के लिए

विद्यार्थियों को ध्यान रखना चाहिए कि, समान आधार तिथि लेना चाहिए। इसलिए इस दशा में भी आधार तिथि 18th मई ही होगी।

सौदों की तिथि	देय तिथि	राशि	आधार तिथि से दिनों की संख्या	गुणनफल
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
23 अप्रैल	23 मई	52	5	260
24 मई	24 जून	<u>50</u>	37	<u>1,850</u>
Y को देय राशि		<u>102</u>	गुणनफलों का योग	<u>2,110</u>

$$Y \text{ के गुणनफलों पर X का आधिक्य} = 6,680 - 2,110 \\ = 4,570$$

$$X \text{ को आधिक्य देय राशि } ₹ 210 - 102 = ₹ 108.$$

आधार तिथि से निपटारे की तिथि तक के दिनों की संख्या है—

$$\frac{4,570}{108} = 42 \text{ दिन}$$

इसलिए शेष के निपटारे की तिथि 18 मई 42 दिनों के बाद यानि कि, 29 जून पर होगी। 29 जून पर, Y द्वारा X को ₹108 चुका कर खाते को समाप्त किया जायेगा।

आहरणों पर ब्याज की गणना (Calculation of interest on drawings)—जब विभिन्न तिथियों पर विभिन्न राशियाँ देय हों, लेकिन वे अंततः एक दिन में ही निपटाई जाएँ तो औसत देय तिथि के माध्य द्वारा ब्याज की गणना की जा सकती है। जब आहरणों पर ब्याज लगाया जाता है, और आहरण विभिन्न तिथियों पर होते हैं तब उपरोक्त आधार पर आहरणों के औसत देय तिथि के आधार पर ब्याज की गणना का निर्धारण किया जा सकता है।

उदाहरण (Illustration) 3

एक फर्म के दो साझेदार A तथा B, 31st मार्च, 2013 पर समाप्त होने वाले वर्ष में अग्रलिखित राशियाँ फर्म से आहरित करते हैं—

तिथि	A	तिथि	B
	₹		₹
1 st जुलाई	500	12 th जून	1,000
30 th सितम्बर	800	11 th अगस्त	500
1 st नवम्बर	1,000	9 th फरवरी	400
28 th फरवरी	400	7 th मार्च	900

सभी अहरणों पर 6% वार्षिक की दर से ब्याज लगाना है। ब्याज की गणना कीजिये—

(i) साधारण प्रणाली (ii) औसत नियत तारीख प्रणाली

समाधान (Solution)

(1)	साधारण प्रणाली (Ordinary system) :		
A	9 माह हेतु 500	=	1 माह हेतु 4,500
	6 माह हेतु 800	=	1 माह हेतु 4,800
	5 माह हेतु 1,000	=	1 माह हेतु 5,000
	1 माह हेतु 400	=	1 माह हेतु 400
			<u>1 माह हेतु 14,700</u>
	14,700 पर 1 माह हेतु 6%	=	14,700 का 1/2%
		=	₹ 73.50
B	292 दिनों हेतु 1,000	=	2,92,000
	232 दिनों हेतु 500	=	1,16,000
	50 दिनों हेतु 400	=	20,000
	24 दिनों हेतु 900	=	21,600
			<u>4,49,600</u>

$$4,49,600 \times \frac{6}{100} \times \frac{1}{365} = ₹ 73.91$$

(2) औसत देय तिथि प्रणाली (Average due date system)—

(a) 1st जुलाई को 0 - दिवस के रूप में लेते हुए—

	तिथियाँ	₹	0-दिवस से माह	गुणनफल
A	1 st जुलाई	500	0	0
	30 th सितम्बर	800	3	2,400
	1 st नवम्बर	1,000	4	4,000
	28 th फरवरी	<u>400</u>	8	<u>3,200</u>
		<u>2,700</u>		<u>9,600</u>

औसत देय तिथि = $\frac{9,600}{2,700}$ 1st जुलाई, से माह, यानि कि, 3.556 माह, यानि कि 17th अक्टूबर.

17th अक्टूबर से 31st मार्च यानि कि 5.444 माह, तक प्रभारित ब्याज

$$2,700 \times \frac{6}{100} \times \frac{5.444}{12} = ₹ 73.49$$

Or,

1st अप्रैल को 0-दिवस के रूप में लेते हुए—

	तिथियाँ	₹	0 - दिवस से माह	गुणनफल
A	1st जून	500	3	1,500
	30 th अगस्त	800	6	4,800
	1 st नवम्बर	1,000	7	7,000
	28 th फरवरी	<u>400</u>	11	<u>4,400</u>
		<u>2,700</u>		<u>17,700</u>

औसत देय तिथि = $\frac{17,700}{2,700}$ 1st अप्रैल से माह, यानि कि, 6.556 माह, यानि कि 17th अक्टूबर.

17th अक्टूबर से 31 मार्च यानि कि 5.444 माह, तक प्रभारित ब्याज

$$2,700 \times \frac{6}{100} \times \frac{5.444}{12} = ₹ 73.49$$

(b) 12th जून को 0-दिवस के रूप में लेते हुए—

	तिथियाँ	₹	0-दिवस से माह	गुणनफल
B	12 th जून	1,000	0	0
	11 th अगस्त	500	60	30,000
	9 th फरवरी	400	242	96,800
	7 th मार्च	900	268	2,41,200
		<u>2,800</u>		<u>3,68,000</u>

औसत देय तिथि = $\frac{3,68,000}{2,800}$ 12 जून से माह, यानि कि, 131 दिन

जून 18

जुलाई 31

अगस्त 31

सितम्बर 30

110

131 दिन -110 दिन यानि कि, 21st अक्टूबर

इसलिए 21 अक्टूबर से to 31 मार्च तक यानि कि 161 दिनों हेतु प्रभारित ब्याज

$$2,800 \times \frac{6}{100} \times \frac{161}{365} = ₹ 74.10$$

दोनों प्रणालियों (1) और (2) में राशियों में अन्तर सन्निकटन (approximation) के कारण हैं।

उदाहरण (Illustration) 4

Y द्वारा X को निम्नलिखित राशियाँ देय हैं Y चुकाना चाहता है (a) 18.3. पर या (b) 14.7. पर। ध्यान रहे 8% प्रति वर्ष ब्याज की दर है।

देय तिथियाँ	₹
10 th जनवरी	500
26 th जनवरी (गणतंत्र दिवस)	1,000
23 rd मार्च	3,000
18 th अगस्त (रविवार)	4,000

(a) तथा (b) में चुकता राशि का निर्धारण करें।

समाधान (Solution)

देय तिथि (सामान्य)	देय तिथि (वास्तविक)	10. जनवरी को दिवस के रूप में लेते हुए, से दिनों की संख्या	राशि ₹	गुणनफल
10 th जनवरी	10 th जनवरी	0	500	0
26 th जनवरी	25 th जनवरी	15	1,000	15,000
23 th मार्च	23 rd मार्च	72	3,000	2,16,000
18 th अगस्त	17 th अगस्त	219	4,000	8,76,000
			<u>8,500</u>	<u>11,07,000</u>

$$\text{औसत देय तिथि} = 10^{\text{th}} \text{ जनवरी} + \frac{11,07,000}{8,500} = 10^{\text{th}} \text{ जनवरी} + 130 \text{ दिन} = 20^{\text{th}} \text{ मई}$$

जनवरी	21
फरवरी	28
मार्च	31
अप्रैल	<u>30</u>
	<u>110</u>

- (a) यदि 18 मार्च पर भुगतान होता है तो असमाप्त समय 18 मार्च से 20 मई तक यानि कि, 13 + 30 + 20 यानि कि, 63 दिनों हेतु छूट घोषित होगी। वह कुल राशि के बट्टात्मक राशि को चुकायेगा।

$$\text{बट्टा} = 8,500 \times \frac{8}{100} \times \frac{63}{365} = 680 \times \frac{63}{365} = ₹ 117.37$$

$$18 \text{ मार्च पर चुकता राशि } ₹ 8,500 - 117.37 = 8,382.63$$

- (b) यदि भुगतान 14.7 तक किया जाता है, तो 20.5 से 14.7 तक यानि कि, 11 + 30 + 14 = 55 दिनों तक का ब्याज चुकाया जायेगा।

$$\text{ब्याज} = 8,500 \times \frac{8}{100} \times \frac{55}{365} = 680 \times \frac{55}{365} = ₹ 102.47$$

14 जुलाई पर चुकता राशि होगी

$$₹ 8,500 + 102.47 = 8,602.47$$

उदाहरण (Illustration) 5

मनोज के पास निम्न प्राप्य तथा देय बिल सोहन के प्रति थे। औसत देय तिथि की गणना करो जिस तिथि पर राशि प्राप्त की जा सकती है या भुगतान किया जा सकता है ताकि ब्याज का कोई नुकसान न हो :

तिथि	प्राप्य बिल	अवधि	तिथि	देय बिल	अवधि
	₹			₹	
01/06/2012	3,000	3 माह	29/05/2012	2,000	2 माह
05/06/2012	2,500	3 माह	03/08/2012	3,000	3 माह
09/06/2012	6,000	1 माह	09/06/2012	6,000	1 माह
12/06/2012	1,000	2 माह			
20/06/2012	1,500	3 माह			

15th अगस्त, 2012 सार्वजनिक अवकाश का दिवस था, लेकिन 6 सितम्बर 2012 को भी अचानक सार्वजनिक अवकाश घोषित कर दिया गया।

समाधान (Solution)

हमें आधार तिथि के रूप में 12.07.2012 रखना है।

प्राप्य बिल (विपत्र)

देय तिथि	12.07.2012 से दिनों की संख्या	राशि ₹	गुणांकफल
04/09/2012	54	3,000	1,62,000
08/09/2012	58	2,500	1,45,000
12/07/2012	0	6,000	0

14/08/2012	33	1,000	33,000
23/09/2012	74	<u>1,500</u>	<u>1,09,500</u>
		<u>14,000</u>	<u>4,49,500</u>

भुगतान देय बिल (विपत्र)

देय तिथि	12.07.2012 से दिनों की संख्या	राशि ₹	गुणांकफल
01/08/2012	20	2,000	40,000
07/09/2012	57	3,000	1,71,000
12/07/2012	0	<u>6,000</u>	<u>0</u>
		<u>11,000</u>	<u>2,11,000</u>

प्राप्य बिलों के गुणांकल देय बिलों से अधिक है = 4,49,500 – 2,11,000
= 2,38,500

प्राप्य बिलों की अधिकता देय बिलों पर = 14,000 – 11,000
= 3,000

आधार तिथि से दिनों की संख्या निपटारे की तिथि तक = $\frac{2,38,500}{3,000} = 79.5$ लगभग

इसलिए निपटारे की तिथि बकाया राशि 80 दिन 12 जुलाई से 30 सितम्बर

30 सितम्बर 2012 को सोहन को मनोज के लिए निपटारे के लिए ₹ 3,000 देने होंगे।

1.3.2 दृष्टांत (Case) 2. जब कर्ज की राशि एक किश्त में दी जाती है (Where amount is lent in one Instalment)—औसत देय तिथि की गणना जहाँ पर पूरी कर्ज राशि एक ही किश्त में दी जाती है और उसका पुनर्भुगतान विभिन्न किश्तों में किया जाता है यह समस्या दूसरा रूप ले लेती है। औसत देय तिथि की गणना की विधि निम्न रूप से की जा सकती है :

पग 1 (Step 1) : दिनों/महीनों/वर्षों की गणना जिस तिथि को कर्ज दिया गया है तथा प्रत्येक पुनर्भुगतान की तिथि तक करो।

पग 2 (Step 2) : इस प्रकार दिनों/महीनों/वर्षों का जोड़ ज्ञात करो।

पग 3 (Step 3) : इसका गुणांक दिनों/महीनों/वर्षों की संख्या औसत देय तिथि कर्ज देने की तिथि से उतनी ही दूर होती जायेगी।

इस प्रकार औसत देय तिथि का सूत्र निम्न रूप में है :

$$\text{औसत देय तिथि} = \text{कर्ज की तिथि} + \frac{\text{दिनों/महीनों/वर्षों कर्ज देने की तिथि से जो उस तिथि तक जिस तिथि को पुनर्भुगतान होता है}}{\text{किश्तों की संख्या}}$$

उदाहरण (Illustration) 6

₹ 10,000 दास ब्रादर्स द्वारा कुमार एण्ड सन्स को पहली जनवरी 2008 को कर्ज पर दिये जाते हैं जिनका पुनर्भुगतान पाँच सम वार्षिक किश्तों में पहली जनवरी 2009 को आरम्भ होगा। औसत देय तिथि को ज्ञात करो तथा 5% प्रति वर्ष के अनुसार ब्याज की गणना करो जिसे दास ब्रादर्स, कुमार एण्ड सन्स से वसूल करेंगे।

समाधान (Solution)

$$\begin{aligned} \text{औसत देय तिथि} &= \text{कर्ज की तिथि} + \frac{\text{कर्ज की तिथि से दिनों/महीनों/वर्षों की संख्या का जो प्रत्येक किश्त पुनर्भुगतान की तिथि तक किश्तों की संख्या}}{\text{किश्तों की संख्या}} \\ &= \text{जनवरी 1, 2008} + \frac{1+2+3+4+5}{5} \\ &= \text{जनवरी 1, 2008} + 3 \text{ वर्ष} \\ &= \text{जनवरी 1, 2011} \end{aligned}$$

ब्याज निश्चित दर पर जोकि किश्तों पर है जब वह किश्त दी जाती है भुगतान की तिथि से किसी निश्चित तिथि पर एक जैसा ही होगा जैसा कि ₹ 10,000 (यदि ₹ जनवरी 2011 को कर्ज पर एक निश्चित तिथि तक दिया गया है) दोनों पक्षों को कोई नुकसान नहीं होगा। यह मानते हुए कि ब्याज की दर 5% वार्षिक है और निपटारे की तिथि 31st दिसम्बर 2009 है तो ब्याज की गणना यदि गुणांक विधि से दोनों पक्षों के हित में होगी जोकि निम्न रूप में होगी :

राशि	तिथि जिस पर दिये गये	दास ब्रादर्स द्वारा राशि का उपयोग 31 st दिसम्बर 2013	गुणांक फल
₹			₹
2,000	पहली जनवरी 2009	5 वर्ष	10,000
2,000	पहली जनवरी 2010	4 वर्ष	8,000
2,000	पहली जनवरी 2011	3 वर्ष	6,000
2,000	पहली जनवरी 2012	2 वर्ष	4,000
2,000	पहली जनवरी 2013	1 वर्ष	<u>2,000</u>
			<u>30,000</u>

$$\text{₹ 30,000 पर 5\% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज} = \frac{\text{₹ } 30,000 \times 5}{100} = \text{₹ } 1,500$$

दास ब्रादर्स को ब्याज प्राप्त होगा (यदि 1st जनवरी को दिया गया है ₹ 10,000 औसत देय तिथि से 31st दिसम्बर 2013)

$$3 \text{ वर्षों के लिए } 5\% \text{ प्रति वर्ष ब्याज दर पर } \frac{5 \times 3 \times \text{₹ } 10,000}{100} = \text{₹ } 1,500$$

उपरोक्त से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कर्जदाता प्रति वर्ष ₹ 2,000 पहली जनवरी 2009 से पाँच वर्षों तक देगा और यदि कर्जदाता ₹ 10,000 पहली जनवरी 2011 को देता है तो दोनों एक दूसरे से एक जैसा ब्याज लेगा इस प्रकार दोनों पक्षों को कोई नुकसान नहीं होगा। पर कर्जदाता ने ₹ 10,000 पहली जनवरी 2008 को कर्ज पर दिये हैं और उसने तीन वर्ष पहले कर्ज दिया है इसलिए ₹ 10,000 पर तीन वर्ष के लिए ब्याज लेगा।

$$\text{ब्याज} = \frac{\text{₹}10,000 \times 5 \times 3}{100} = \text{₹}1,500$$

दास ब्रादर्स ₹ 1,500 ब्याज लेगा।

उदाहरण (Illustration) 7

एक व्यापारी जिसने बहुत से विपत्र स्वीकार किये हैं जिनका विवरण नीचे दिया गया है जोकि भिन्न तिथियों पर देय हैं अब उसकी इच्छा है कि इन विपत्रों को निरस्त कर दिया जाये और वह नये विपत्रों का औसत देय तिथि पर भुगतान कर देगा।

क्रम संख्या	विपत्र की तिथि		विपत्र का उपयोग
1	1 st मार्च 2012	400.00	2 माह
2	10 th मार्च 2012	300.00	3 माह
3	5 th अप्रैल 2012	200.00	2 माह
4	20 th अप्रैल 2012	375.00	1 माह
5	10 th मई 2012	500.00	2 माह

आपको वह औसत देय तिथि ज्ञात करनी है।

समाधान (Solution)

औसत देय तिथि की गणना 4 मई को आधार तिथि मानते हुए

क्र. सं.	विपत्र की तिथि	परिपक्वता के देय तिथि	राशि ₹	आधार तिथि से दिनों की संख्या (4 मई से)	गुणांक
1	1 st मार्च 2012	4 th मई	400	0	0
2	10 th मार्च 2012	13 rd जून	300	40	12,000
3	5 th अप्रैल 2012	8 th जून	200	35	7,000
4	20 th अप्रैल 2012	23 rd मई	375	19	7,125
5	10 th मई 2012	13 rd जुलाई	<u>500</u>	70	<u>35,000</u>
	जोड़		<u>1,775</u>		<u>61,125</u>

औसत देय तिथि है $61,125 \div 1,775 = 34$ दिन मानी गयी देय तिथि 4th मई 2012 से नया बिल ₹ 1,775 का होना चाहिए जो 7th जून 2012 को देय होगा।

उदाहरण (Illustration) 8

A ने B के पहली जनवरी 2013 ₹ 800 देने हैं जनवरी से मार्च के बीच A और B के बीच निम्नलिखित व्यवहार हुए :

जनवरी 16	A माल खरीदता है	₹ 910
फरवरी 2	A नकद कर्ज लेता है	₹ 750
मार्च 5	A माल खरीदता है	₹ 810

A सारी राशि का भुगतान 31st मार्च 2013 को 5% प्रति वर्ष ब्याज के साथ कर देता है।

औसत देय तिथि विधि द्वारा ब्याज की गणना करो :

देय तिथि	राशि	1 st जनवरी से दिनों की संख्या	गुणांक
2013	₹		
जनवरी 1	890	0	0
जनवरी 16	910	15	13,650
फरवरी 2	750	32	24,000
मार्च 5	810	64	51,840
जोड़	3,360		89,490

समाधान (Solution)

औसत देय तिथि की गणना

औसत देय तिथि = आधार तिथि + दिन सम $\frac{\text{गुणांक का जो}}{\text{राशि का जो}}$

जनवरी 1 + $\left[\frac{89,490}{3,360} \right] = 27$ दिन या 28th जनवरी

इसलिए ब्याज की गणना ₹ 3,360 पर 28th जनवरी से 31st मार्च तक जोकि 83 दिन बना है

$$3,360 \times \frac{5}{100} \times \frac{63}{365} = ₹ 29$$

उदाहरण (Illustration) 9

राधेश्याम ने हरीराम से माल खरीदा नकद में भुगतान की औसत देय तिथि निम्न रूप में थी :

मार्च 15	₹ 400 देय 18 अप्रैल
अप्रैल 21	₹ 300 देय 24 मई
अप्रैल 27	₹ 200 देय 30 जून
मई 15	₹ 250 देय 18 जुलाई

हरीराम सारी राशि का एक ही विपत्र बनाने के कलिए सहमत हो गया और कुल राशि औसत देय तिथि पर देय होगी औसत देय तिथि ज्ञात करो।

समाधान (Solution)

18 अप्रैल को आधार तिथि मानकर

देय तिथि	राशि	दिनों की संख्या	गुणांक
	₹	18 अप्रैल से	
18 th अप्रैल	400	0	0
24 th मई	300	36	10,800
30 th जून	200	73	14,600
18 th जुलाई	<u>250</u>	91	<u>22,750</u>
जोड़े	<u>1,150</u>		<u>48,150</u>

$$\text{औसत देय तिथि} = \frac{48,150}{1150} = 42 \text{ दिन आधार तिथि से 42 दिन}$$

18 अप्रैल आधार तिथि देय तिथि 30 मई

उदाहरण (Illustration) 10

निम्नलिखित जानकारी से औसत देय तिथि की गणना करो

विपत्र की तिथि	अवधि	राशि
		₹
10 th अगस्त, 2011	2 माह	6,000
23 rd अक्टूबर, 2011	60 दिन	5,000
4 th दिसम्बर, 2011	2 माह	4,000
14 th जनवरी, 2012	60 दिन	2,000
08 th मार्च, 2012	2 माह	3,000

फरवरी को 28 दिन का मानो।

समाधान (Solution)

औसत देय तिथि की गणना
10 अगस्त को आधार तिथि माना

विपत्र की तिथि	अवधि	देय तिथि	10 th अगस्त 2011 से दिनों की संख्या	राशि ₹	गुणांक ₹
10 th अगस्त, 2011	3 माह	13 rd नवम्बर, 2011	95	6,000	5,70,000
23 rd अक्टूबर, 2011	60 दिन	25 th दिसम्बर, 2011	137	5,000	6,85,000
04 th दिसम्बर, 2011	2 माह	07 th फरवरी, 2012	181	4,000	7,24,000
14 th जनवरी, 2012	60 दिन	18 th मार्च, 2012	220	2,000	4,40,000
08 th मार्च, 2012	2 माह	11 th मई, 2012	274	<u>3,000</u>	<u>8,22,000</u>
				<u>20,000</u>	<u>32,41,000</u>

$$\begin{aligned} \text{औसत देय तिथि} &= \frac{\text{गुणांक को जो}}{\text{राशि का जो}} \\ &= \frac{32,41,000}{20,000} = 162.05 \text{ दिन} \\ &= 10 \text{ अगस्त के बाद } 162 \text{ दिन यानि की जनवरी } 19, 2012 \end{aligned}$$

उदाहरण (Illustration) 11

मि. ग्रीन तथा मि. रेड में निम्न आपसी लेनदेन हुआ और वह अपने लेनदेन का निपटारा औसत देय तिथि आधार पर करना चाहते हैं :

ग्रीन द्वारा रेड से की गयी खरीद :	₹
6 th जनवरी, 2011	6,000
2 nd फरवरी, 2011	2,800
31 st मार्च, 2011	2,000

ग्रीन द्वारा रेड को माल की बिक्री :

6 th जनवरी, 2011	6,600
9 th फरवरी, 2011	2,400
20 th मार्च, 2011	500

आपको औसत देय तिथि ज्ञात करनी है।

समाधान (Solution)

औसत देय तिथि की गणना

ग्रीन के भुगतान के लिए आधार तिथि 6 जनवरी 2011 को माना

देय तिथि	राशि	आधार तिथि 6 जनवरी, 2011 से दिनों की संख्या	गुणांक
2011	₹		
6 जनवरी	6,000	0	0
2 फरवरी	2,800	27	75,600
31 मार्च	<u>2,000</u>	84	<u>1,68,000</u>
जोड़	<u>10,800</u>		<u>2,43,000</u>
रेड के भुगतान के लिए 2011			
6 जनवरी	6,600	0	0
9 मार्च	2,400	62	1,48,800
20 मार्च	<u>500</u>	73	<u>36,500</u>
जोड़	<u>9,500</u>		<u>1,85,300</u>

ग्रीन के गुणांक रेड पर अधिकता = ₹ 2,43,600 – ₹ 1,85,300 = ₹ 58,300

= ₹ 10,800 – ₹ 9,500 = ₹ 1,300

आधार तिथि से निपटारे की तिथि तक दिनों की संख्या

$58,300/1,300 = 45$ दिन

इसलिए बकाया देय राशि के निपटारे के लिए 45 दिन 6 जनवरी से यानी के 20 फरवरी।

20 फरवरी 2011 ग्रीन को रेड को ₹ 1,300 देने होंगे अपने लेखे का निपटारा करने के लिए

सारांश

(SUMMARY)

- औसत देय तिथि वह तिथि है जिसमें शुद्ध देय राशि का निपटारा ऋणकर्ता या ऋणदाता को बिना किसी ब्याज की हानि हुए हो सकता है।
- यह कई दशाओं में प्रयोग होता है; जैसे—
 - (i) साझेदार के आहरण पर ब्याज की गणना।
 - (ii) कई विभिन्न तिथियों पर देय विनिमय विपत्रों तथा एक अकेले विपत्र के निर्गमन की गणना।
 - (iii) एक किश्त में राशि उधार लेना तथा कई किश्तों में पुनः भुगतान।

- जब रकम कई किश्तों में उधार ली जाती है तब औसत देय तिथि की गणना निम्न प्रकार से की जायेगी—

$$\text{औसत देय तिथि} = \text{आधार तिथि} \pm \frac{\text{गुणनफलों का योग}}{\text{राशियों का योग}}$$

- जब आहरणों पर ब्याज प्रभार है तथा आहरण विभिन्न तिथियों पर होते हैं तब ब्याज की गणना आहरणों की औसत देय तिथि के आधार पर की जा सकती है।
- जब रकम एक किश्त में उधार ली जाती है तथा पुनः भुगतान कई किश्तों में होता है, इस दशा में औसत देय तिथि होगी—

$$\text{औसत देय तिथि} = \text{ऋण की तिथि} = \frac{\text{उधार देने की तिथि से प्रत्येक किश्त के पुनः भुगतान की तिथि तक दिनों/महीनों/वर्षों की संख्या का योग}}{\text{किश्तों की संख्या}}$$

- प्रत्येक प्रतिज्ञा पत्र या विनिमय विपत्र (जो माँग पर या दर्शनी या प्रस्तुत करने पर देय हैं, को छोड़कर) उस तिथि के तीन दिन बाद देय होते हैं जिस पर ये चुकता होना व्यक्त हैं। तीन दिन की यह छूट अवधि 'अनुग्रह दिवस' कहलाती है।
- When due date is a public holiday, then the preceding business day will be the due date.
- When due date is an emergency/unforeseen holiday, then the next following day will be the due date.

भाग 2 : चालू खाता**(UNIT 2 : ACCOUNT CURRENT)****अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)**

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप सक्षम होंगे—

- चालू लेखा विवरण के अर्थ को समझने में।
- चालू लेखा विवरण तैयार करने की विधियों को सीखने में। चालू लेखा विवरण तैयार करने की विधियाँ; जैसे—ब्याज सारणी की सहायता द्वारा, गुणनफलों के माध्यम द्वारा तथा गुणनफल के शेषों द्वारा।
- चालू लेखा विवरण को तैयार करने में निहित प्रक्रिया की गणना सीखने में।

2.1 परिचय (Introduction)

एक चालू लेखा दी गयी समय अवधि हेतु पक्षकारों के मध्य हुए व्यवहारों तथा विभिन्न मदों पर देय या प्रभारित ब्याज को शामिल करते हुए एक निरन्तर विवरण है। इसे एक खाते के रूप में लिया जाता है।

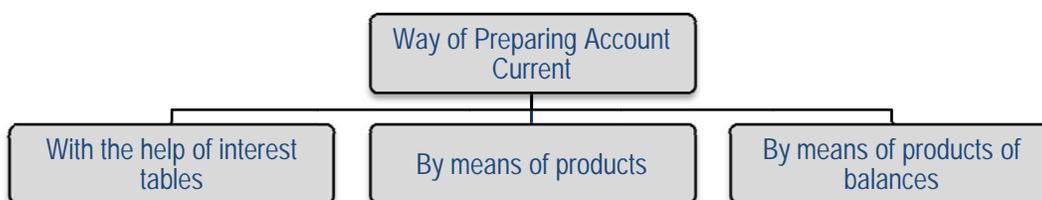
कुछ स्थितियाँ जब चालू लेखा विवरण तैयार किया जाता है—

1. यह तब बनाया जाता है जब दो पक्षकारों के मध्य निरन्तर व्यवहारों को नियमित रूप से स्थापित करना हो। उदाहरण—एक निर्माता जो एक व्यापारी को निरन्तर उधार पर माल बेचता है तथा विभिन्न अन्तरालों पर उससे किश्तों में भुगतान प्राप्त करता है तथा शेष अदत्त राशि पर ब्याज प्रभारित होता है।
2. माल का प्रेषणी भी चालू लेखा विवरण तैयार कर सकता है, यदि प्रेषण की समाप्ति के बाद खातों का निपटारा होता तथा अदत्त शेष पर ब्याज प्रभारित होता है।
3. एक बैंकर तथा उसके ग्राहक के मध्य हुए सौदों को भी निरन्तर चालू लेखा विवरण तैयार करके सुलझाया जा सकता है।
4. It is prepared when two or more persons are in joint venture and each co-venture is entitled to interest on their investment. Also, no separate set of book is maintained for it.

चालू लेखा विवरण के दो पक्षकार होते हैं—एक जो खाता प्रस्तुत करता है तथा अन्य जिसका खाता प्रस्तुत किया जाता है। यह एक चालू लेखा विवरण के शीर्षक में निर्देशित किया जाता है जो निम्न प्रकार से होता है—“A in Account Current with B” इसका मतलब है कि A ग्राहक है तथा B द्वारा खाता प्रस्तुत किया जाएगा।

2.2 चालू लेखा विवरण की तैयारी (Preparation of Account Current)

यहाँ चालू लेखा विवरण तैयार करने के तीन तरीके हैं—



2.2.1 ब्याज सारणियों की सहायता के साथ चालू लेखा विवरण की तैयारी (Preparation of Account Current with the help of Interest Tables)—इस विधि के अनुसार, सभी सौदे एक खाते के रूप में व्यवस्थित होते हैं। यहाँ ऐसे ही एक खाते के दोनों पक्षों पर दो अतिरिक्त स्तम्भ जो निर्मांकित हैं—

- (a) पहले स्तम्भ का मतलब है कि प्रत्येक व्यवहार की देय तिथि से खाते प्रस्तुत करने की तिथि तक गिने हुए दिनों की संख्या को निर्देशित करना।
- (b) अन्य स्तम्भ का मतलब ब्याज लिखने के लिए है। तैयार सारणियों की सहायता से विभिन्न समय बिन्दुओं के लिए दिए गये दरों से विभिन्न राशियों पर देय ब्याज निकाला जाता है तथा इसे प्रत्येक मद के सामने अलग से लिखा जाता है।

दोनों पक्षों के ब्याज स्तम्भ का योग लगाया जाता है तथा शेष निकाला जाता है।

उदाहरण (Illustration) 1

श्याम के साथ निम्नलिखित व्यवहारों के सम्बन्ध में नाथ ब्रदर्स के लिए चालू लेखा विवरण तैयार कीजिए—

2011		₹	
16 सितम्बर	श्याम को माल बेचा	200	[1 अक्टूबर को देय]
01 अक्टूबर	श्याम से रोकड़ प्राप्त	90	
21 अक्टूबर	श्याम से माल खरीदा	500	[1 दिसम्बर को देय]
01 नवम्बर	श्याम को चुकाये	330	
01 दिसम्बर	श्याम को चुकाये	330	
05 दिसम्बर	श्याम से माल खरीदा	500	[1 जनवरी को देय]
10 दिसम्बर	श्याम से माल खरीदा	200	[1 जनवरी को देय]
2012			
01 जनवरी	श्याम को चुकाये	600	
09 जनवरी	श्याम को माल बेचा	20	[1 फरवरी को देय]

1 फरवरी तक का चालू खाता विवरण तैयार कीजिए। 6% प्रतिवर्ष ब्याज की गणना कीजिए।

समाधान (Solution)

श्याम का नाथ ब्रदर्स के साथ चालू खाता
(6% प्रतिवर्ष के ब्याज दर पर 1 फरवरी, 2011 तक)

दिनांक	विशेष	देय तिथि	राशि	दिनों	ब्याज	दिनांक	विशेष	देय तिथि	राशि	दिन	ब्याज
2011			₹			2011			₹		
16 दिस.	विक्रय खाता	1 अक्टू.	200	123	4.04	1 अक्टू.	रोकड़ खाता	1 अक्टू.	90	123	1.82
1 नव.	रोकड़ खाता	1 नव.	330	92	5.00	21 अक्टू.	क्रय खाता	1 दिस.	500	62	5.10
1 दिस.	रोकड़ खाता को	1 दिस.	330	62	3.36	5 दिस.	क्रय खाता द्वारा	1 जन.	500	31	2.55
						10 दिस.	क्रय खाता द्वारा	1 जन.	200	31	1.02
2012						2012					
1 जन.	रोकड़ खाता	1 जन.	600	31	3.06	1 फर.	ब्याज के शेष द्वारा				4.97
9 जन.	क्रय खाता को	1 फरवरी.	20			1 फर.	बढ़ा शेष द्वारा		194.97		—
1 फर.	ब्याज		4.97								
			<u>1,484.97</u>		<u>15.46</u>				<u>1,484.97</u>		<u>15.46</u>

शैक्षणिक टिप्पणी (Tutorial Notes)—

- हालांकि दिनों की संख्या की गणना में देय तिथि की तारीख पर ध्यान नहीं दिया जाता है और जिस तारीख तक खाता तैयार किया जाता है वह शामिल होती है।
- जबकि प्रारम्भिक शेष हेतु दिनों की संख्या की गणना में प्रारम्भिक तिथि के साथ-ही-साथ जिस तारीख तक खाता तैयार किया जाता है, को भी गिना जाता है।

दिनों की गणना (Calculation of days) :

लेन-देन	देय तिथि	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	कुल
2011							
16 th सितम्बर	1 अक्टूबर	30+	30+	31+	31+	1=	123

1 st अक्टूबर	1 अक्टूबर	30+	30+	31+	31+	1=	123
21 st अक्टूबर	1 दिसम्बर	-	-	30+	31+	1=	62
1 st नवम्बर	1 नवम्बर	-	29+	31+	31+	1=	92
1 st दिसम्बर	1 दिसम्बर	-	-	30+	31+	1=	62
5 th दिसम्बर	1 जनवरी	-	-	-	30+	1=	31
10 th दिसम्बर	1 जनवरी	-	-	-	30+	1=	31
2012							
1 st जनवरी	1 फरवरी	-	-	-	30+	1=	31
9 th जनवरी	1 फरवरी	-	-	-	-	- =	0

2.2.2 गुणनफलों के माध्यम द्वारा चालू लेखा विवरण की तैयारी (Preparation of Account Current by means of Products)—जब इस विधि को अपनाया जाता है तब चालू लेखा विवरण को बनाने का तरीका समान रहता है। यह केवल ब्याज की गणना की विधि है, जो अलग है।

पिछली विधि के अन्तर्गत, चालू लेखा विवरण के दोनों पक्षों पर ब्याज स्तम्भ उपलब्ध होता है तथा प्रत्येक मद के सम्बन्ध में तैयार बनी ब्याज सारणियों से ब्याज निकाला जाता है। इस विधि में, ब्याज स्तम्भ को 'गुणनफल' स्तम्भ द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है। इस स्थिति में, रकम को उन दिनों की संख्या से गुणित करके जिसके लिए वह अदत्त रहे हैं निकाली गयी राशि गुणनफल होगी। मुद्रा की एक निश्चित राशि हेतु दिनों की एक निश्चित संख्या पर ब्याज गुणनफल पर निकाले गये एक दिन के ब्याज के समान ही होगी। अन्य शब्दों में, प्रत्येक व्यवहार की अवधि को एक दिन तक घटाने की दृष्टि से, प्रत्येक सौदे की राशि दिनों की संख्या द्वारा गुणित होगी। यह गुणनफल प्रत्येक व्यवहार के सम्मुख गुणनफल स्तम्भ में प्रविष्ट होगा।

शेष चरण निम्न प्रकार होते हैं—

- (अ) दो पक्षों पर गुणनफलों का शेष;
- (ब) गुणनफलों के शेष दिये गये दर से ब्याज की गणना;
- (स) राशि स्तम्भ में उचित पक्ष पर ब्याज प्रविष्टि होगा। यह प्रविष्टि उस विपरीत पक्ष में होती है जिसमें कि गुणनफल का शेष प्रस्तुत हुआ है।

उदाहरण 1 को लेते हुए, गुणनफल के माध्यम से चालू लेखा विवरण नीचे समझाया गया है—

**नाथ ब्रदर्स के साथ श्याम के चालू खाते में
(6% प्रतिवर्ष की दर पर 1 फरवरी 2011 को ब्याज)**

Dr.											Cr.
तिथि	विवरण	देय	राशि	दिन	ब्याज	तिथि	विवरण	देय	राशि	दिन	ब्याज
2011		तिथि	₹	₹	₹	2011		तिथि	₹	₹	₹
16 सित.	विक्रय खाता	1 अक्टू.	200	123	24,600	1 अक्टू.	रोकड़ खाता	1 अक्टू.	90	123	11,070
01 नव.	रोकड़ खाता	1 नवम्ब.	330	92	30,360	21 अक्टू.	क्रय खाता	1 दिस.	500	62	31,000

7.24

दि इन्स्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स ऑफ इण्डिया

1 दिस.	रोकड़ खाता	1 दिस.	330	62	20,460	5 दिस.	क्रय खाता	1 जन.	500	31	15,500
						10 दिस.	क्रय खाता	1 जन.	200	31	6,200
2012						2012					
1 जन.	रोकड़ खाता	1 जन.	600	31	18,600	1 फर.	उत्पादों का कोष				30,250
9 जन.	विक्रय खाता	1 फर.	20			1 फर.	शेष आगे ले जाया गया		194.97		
1 फर.	ब्याज $\frac{30,250}{365} \times \frac{6}{100}$		4.97								
			1,484.97		94,020				1,484.97		94,020
2012											
फरवरी.	शेष आगे लाया गया		194.97								

उदाहरण (Illustration) 2

निम्नलिखित विवरण के आधार पर चालू खाता बनाओ जिसे मि. सिंह, मि. पाल को देना है यह खाता 31 अगस्त, 2012 का होना चाहिए। ब्याज की 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष के हिसाब से गणना होनी चाहिए—

2012		₹
11 जून	मि. पॉल को माल भेजा	1,020
15 जून	मि. पॉल से नकद प्राप्त हुआ	500
20 जून	मि. पॉल को माल भेजा	650
7 जुलाई	मि. पॉल को माल भेजा	700
8 अगस्त	मि. पॉल से नकद प्राप्त हुआ	1,100

समाधान (Solution)

मि. पॉल का चालू खाता मि. सिंह के साथ
10 प्रतिशत का वार्षिक ब्याज 31 अगस्त 2012 तक

तिथि	विवरण	देय	राशि	दिन	गुणांक	तिथि	विवरण	देय	राशि	दिन	गुणांक
2012		तिथि	₹			2012		तिथि	₹		
11 जून	विक्रय खाता	11 जून	1,020	81	82,620	15 जून	नकद खाता	15 अग.	500	77	38,500
20 जून	विक्रय खाता	20 जून	650	72	46,800	8 अग.	नकद खाता	8 अग.	1,100	23	25,300
7 जुलाई	विक्रय खाता	7 जुलाई	700	55	38,500	31 अग.	उत्पाद का शेष				

31 अग.	ब्याज खाता ₹ $\frac{1,04,120}{365}$ $\times \frac{10}{100}$		28.53			बकाया बी/डी		798.53		
			2,398.53		1,67,920			2,398.53		1,67,920
सितम्बर	बकाया बी/डी		798.53							

उदाहरण (Illustration) 3

निम्न विवरण के आधार पर चालू खाता बनाओ जोकि एस. दास गुप्ता द्वारा ए. हल्दार को दिया जाना है यह 31 दिसम्बर पर बनेगा ब्याज 5% प्रति वर्ष लगेगा।

2012		₹
30 जून	ए. हल्दार को बकाया	520
17 जुलाई	ए. हल्दार को बेचा माल	40
1 अगस्त	ए. हल्दार से प्राप्त नकद	500
19 अगस्त	ए. हल्दार को बेचा माल	720
30 अगस्त	ए. हल्दार को बेचा माल	50
1 सितम्बर	ए. हल्दार से प्राप्त नकद	400
1 सितम्बर	ए. हल्दार ने दास गुप्ता का विपत्र स्वीकार किया 3 माह की तिथि पर	300
22 अक्टूबर	ए. हल्दार से माल खरीदा	20
12 नवम्बर	ए. हल्दार को माल बेचा	14
14 दिसम्बर	ए. हल्दार से प्राप्त रोकड़	50

समाधान (Solution)

मिस्टर दासगुप्ता के साथ चालू खाते में A हल्दार
(5% प्रतिवर्ष की दर पर 31 दिसम्बर 2010 को ब्याज)

Dr.

Cr.

तिथि	विवरण	देय तिथि	राशि ₹	दिवस	ब्याज	तिथि	विवरण	देय तिथि	राशि ₹	दिवस	ब्याज
2012						2012					
30 जून	बकाया बी/डी		520	185	96,200	1 अग.	नकद खाता	1 अग.	500	152	76,000
17 जुला.	विक्रय खाता	17 जुला.	40	167	6,680	1 सित.	नकद खाता	1 अग.	400	121	48,400
19 अग.	विक्रय खाता	19 अग.	720	134	96,480	1 सित.	प्राप्त बिल खाता	4 सित.	300	27	8,100
30 अग.	विक्रय खाता	30 अग.	50	123	8,150	22 अक्टू.	क्रय खाता	22 अक्टू.	20	70	1,400

12 नव.	विक्रय खाता	12 नव.	14	49	666	14 दिस.	नकद खाता	14 दिस.	50	17	850
						31 दिस.	माल का बकाया				71,446
31 दिस.	ब्याज खाता		9.79			31 दिस.	बकाया बी/डी		83.79		----
	$71,446 \times 5\%$										
	365										
			1,353.79		2,06,196				1,353.79		2,06,196

टिप्पणी (Notes)—यह माना जाता है कि विपत्र का भुगतान देय तिथि को कर दिया होगा। बिल को देय तिथि को बिल के भुगतान की तिथि मानी जानी चाहिए और दिनों की गणना खाते के देय तिथि से की जानी चाहिए।

क्रियान्वयन (Workings) :

दिनों की गणना

व्यवहार की तिथि	देय तिथि	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	कुल
प्रारम्भिक बकाया		1	+31	+31	+30	+31	+30	+31	= 185
17 जुलाई	17 जुलाई	—	14	+31	+30	+31	+30	+31	= 167
1 अगस्त	1 अगस्त	—	—	30	+30	+31	+30	+31	= 152
19 अगस्त	19 अगस्त	—	—	12	+30	+31	+30	+31	= 134
30 अगस्त	30 अगस्त	—	—	1	+30	+31	+30	+31	= 123
1 सितम्बर	1 सितम्बर	—	—	—	29	+31	+30	+31	= 121
1 सितम्बर	4 दिसम्बर	—	—	—	—	—	—	27	= 27
22 अक्टूबर	22 अक्टूबर	—	—	—	—	9	+30	+31	= 70
12 नवम्बर	12 नवम्बर	—	—	—	—	—	18	+31	= 49
14 दिसम्बर	14 दिसम्बर	—	—	—	—	—	—	17	= 17

टिप्पणी (Notes)—दिनों की संख्या की गणना करते हुए आरम्भिक बकाया, आरम्भिक तिथि तथा वह तिथि जिस तिथि पर वह खाता बनाया जाता है को भी गिना जाता है।

उदाहरण (Illustration) 4

निम्न विवरण के आधार पर चालू खाता बनाओ जैसे कि ए द्वारा बी को 30 जून 2012 पर भेजा जायेगा गुणांक विधि का उपयोग करो और उसके 6% का वार्षिक ब्याज लगाओ—

2012		₹
1 जनवरी	बी से बकाया प्राप्य	600
11 जनवरी	बी को माल बेचा	520
18 जनवरी	बी माल वापस करता है	125

11 फरवरी	बी द्वारा चैक द्वारा भुगतान	400
14 फरवरी	बी ए द्वारा जारी विपत्र को 1 माह पर स्वीकार करता है	300
29 अप्रैल	बी को माल बेचा	615
15 मई	बी से नकद प्राप्त किया	700

समाधान (Solution)

बी का चालू खाता ए के साथ
अवधि अन्त 30 जून 2012

तिथि 2012	विवरण	राशि ₹	दिवस	गुणांक	तिथि 2012	विवरण	राशि ₹	दिवस	गुणांक
1 जन.	बकाया बी/डी	800.00	182	1,09,200	18 जन.	विक्रय वापसी	125.00	164	20,500
11 जन.	विक्रय खाता	520.00	171	88,920	11 फर.	बैंक खाता	400.00	140	56,000
20 अप्रैल	विक्रय खाता	615.00	62	38,130	14 फर.	विपत्र देय तिथि 17 मार्च			
30 जून	ब्याज खाता	15.75			15 मई	नकद खाता	700.00	46	32,200
					30 जून	माल का बकाया			96,050
						बकाया सी/डी	225.75		
		1750.75		2,36,250			1,750.75		2,36,250

Calculation of interest :

$$\text{Interest} = \frac{96,050}{366} \times \frac{6}{100} = ₹ 15.75$$

रेड-इंक ब्याज (Red-Ink Interest)—यदि बिल की देय तिथि खाता बंद होने की तिथि के बाद की है तो उसके लिए को ब्याज नहीं होता है लेकिन खाता बन्द होने की तिथि ऐसी देय तिथि तक की बिल में लाल स्याही रेड-इंक में लिखा जाता है ऐसे ब्याज को रेड-इंक इंट्रेस्ट कहा जाता है रेड-इंक इंट्रेस्ट नकारात्मक ब्याज होता है।

उदाहरण (Illustration) 5

निम्नलिखित व्यवहार X और Y के बीच अप्रैल 2012 माह में हुआ

		₹
अप्रैल 1	X द्वारा Y को देय राशि	10,000
7	X की Y को सहमति प्राप्त 2 माह के लिए	5,000
10	प्राप्य बिल (Y द्वारा स्वीकृत) 7.2.2012 को देय तिथि पर भुगतान हो गया	

10	X द्वारा Y को माल बेचा बीजक 10.5.2012	15,000
12	X को Y से 15.5.2012 का चैक मिला	7,500
15	Y ने X को माल बेचा बीजक दि. 15.5.2012	6,000
20	X ने Y द्वारा बेचा माल वापस किया 15.4.2012	1,000
20	Y द्वारा स्वीकार बिल देय तिथि पर अनादरित	5,000

आपको गुणांक विधि से चालू खाता बनाना है जो एक्स वाई को देगा यह खाता 30.04.2012 तक होगा ब्याज की दर 10% प्रति वर्ष होगी।

समाधान (Solution)

वाई का चालू खाता एक्स के साथ ब्याज

30 अप्रैल 2012 ब्याज दर 10% प्रतिवर्ष

तिथि 2012	विवरण	देय तिथि 2012	राशि ₹	दिवस	ब्याज	तिथि 2012	विवरण	देय तिथि 2012	राशि ₹	दिवस	ब्याज
7 अप्रैल	बिल देय	10 जून	5,000			1 अप्रैल	बकाया बी/डी		10,000	30	3,00,000
10 अप्रैल	विक्रय खाता	10 मई	15,000			12 अप्रैल	बैंक खाता	15 मई	7,500		
							15.5.2012 का चैक प्राप्त हुआ				
20 अप्रैल	क्रय वापसी	15 मई	1,000			15 अप्रैल	क्रय खाता	15 मई	6,000		
							15.5.2012 बीजक				
20 अप्रैल	प्राप्यबिल खाता	20 अप्रैल	5,000	10	50,000						
30 अप्रैल	रेड-इंक गुणांक (7,500 × 15)	15 मई		30	1,12,500	30 अप्रैल	रेड-इंक गुणांक (5,000 × 41)	10 जून		41	2,05,000
30 अप्रैल	रेड-इंक गुणांक (6,000 × 15)	15 मई		30	90,000	30 अप्रैल	रेड-इंक गुणांक (15,000 × 10)	10 मई		10	1,50,000
30 अप्रैल	बकाया गुणांक का				4,17,500		रेड-इंक गुणांक (1,000 × 15)				
						30 अप्रैल	ब्याज खाता				
							<u>4,17,500</u>				
							10 × 365				
						30 अप्रैल	बकाया सी/डी		2,385.62		
			26,000		6,70,000				26,000		6,70,000

परिपक्व बिल 10 अप्रैल के लिए किसी प्रवृष्टि की आवश्यकता नहीं है क्योंकि पार्टी से कोई अनुबन्ध नहीं हुआ है।

2.2.3 Preparation of Account Current by Means of Product of Balances

This method, also known as periodic balance method, is usually adopted in the case of banks where the balance of account is taken out after every transaction. In this case, the number of days written against each transaction are the days counted from its date or due date to the date of the following transaction. In the case of the last transaction, the number of days is counted to the close of the period.

Each amount is multiplied with the number of days. If the amount represents a debit balance, the product is entered in the Dr. Product column; and if it represents a credit balance, the product is written in the Cr. Product column. The Dr. Product and Cr. Product columns are then totalled up. Interest is calculated on each total at the given rate of interest; and the net interest is ascertained. If net interest is payable to the customer, it will appear as “By Interest A/c”, and if it is due from the customer, it will appear as “To Interest A/c”.

उदाहरण (Illustration) 6

2 जनवरी, 2011 को विनोद ने इलाहबाद बैंक लिमिटेड में एक चालू खाता खोला और उसमें ₹ 30,000 जमा करवाये।

विनोद ने निम्न राशि या इसके बाद जमा करवाये	₹
15 जनवरी	12,000
12 मार्च	8,000
10 मई	16,000
विनोद ने निम्न राशि या बैंक से निकलवाई	
15 फरवरी	26,000
10 अप्रैल	30,000
15 जून	14,000

विनोद का खाता इलाहबाद बैंक के बही खाते में दिखाओ। ब्याज की गणना देनदारी बकाया पर 5% की दर से तथा लेनदारी खाते पर 2% की दर से होगी यह खाता 30 जून, 2011 को बनाना है गणना पूरे रुपये तक की जानी चाहिए।

समाधान (Solution)

विनोद का चालू खाता इलाहबाद बैंक लिमिटेड के साथ

तिथि	विवरण	देनदारी	लेनदारी	दे. या ले.	बकाया	दिन	दे. गुणांक	ले गुणांक
2011								
2 जन.	नकद खाता	–	30,000	लेनदार	30,000	13	–	3,90,000
15 जन.	नकद खाता	–	12,000	लेनदार	42,000	31	–	13,02,000
15 फर.	स्वयं	26,000	–	लेनदार	16,000	25	–	4,00,000

12 मार्च	नकद खाता	–	8,000	लेनदार	24,000	29	–	6,96,000
10 अप्रैल	स्वयं	30,000	–	देनदार	6,000	30	1,80,000	–
10 मई	नकद खाता	–	16,000	लेनदार	10,000	36	–	3,60,000
15 जून	स्वयं	14,000	–	देनदार	4,000	15	60,000	–
30 जून	ब्याज खाता	–	140	देनदार	3,860	–	–	–
30 जून	बकाया सी/डी	–	3,860	–	–	–	–	–
		70,000	70,000				2,40,000	31,48,000
1 जुलाई	बकाया बी/डी	3,860						

*ब्याज की गणना निम्नरूप से की जाती है

₹ 31,48,000 @ 2% – 1 दिन के लिए = ₹ 172.49

₹ 2,40,000 @ 5% – 1 दिन के लिए = ₹ 32.87

शुद्ध ब्याज = ₹ 139.62 (₹ 172.49 – ₹ 32.87)

सारांश

(SUMMARY)

- जब ब्याज की गणना खाते का आन्तरिक भाग बन जाता है तो बनाये गये खाते को चालू लेखा विवरण कहते हैं।
कुछ उदाहरण जहाँ इसे बनाया जाता है—
 - (1) दो पक्षों के बीच निरन्तर सौदों में,
 - (2) प्रेषण पर माल भेजने में तथा
 - (3) एक बैंकर और उसे ग्राहकों के बीच निरन्तर सौदों में।
 - (4) In case of Joint venture when no separate set of books is maintained for joint venture
- यहाँ चालू लेखा विवरण को बनाने के तीन तरीके निम्नलिखित हैं—
 - (1) ब्याज-सारणी की सहायता से,
 - (2) गुणनफलों के माध्यम से तथा
 - (3) गुणनफलों के शेषों के माध्यम से।

8

स्वकीय संतुलन खाताबही [SELF BALANCING LEDGERS]

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के उपरान्त, आप सक्षम हो जायेंगे—

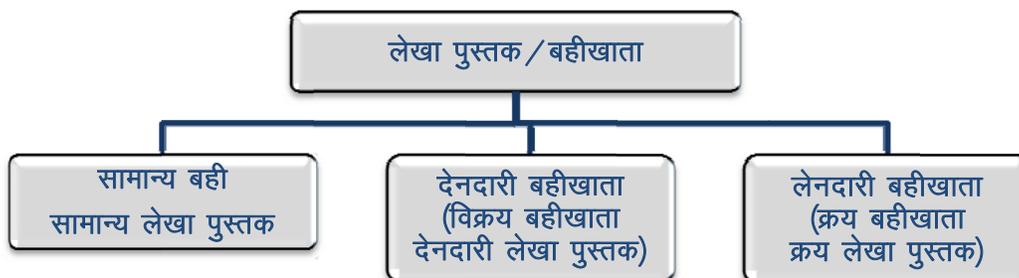
- स्वकीय-संतुलन खाताबही प्रणाली की परिभाषा और महत्व को समझने में।
- स्वकीय-संतुलन खाताबही प्रणाली में सामान्यतः रखी जाने वाली तीन खाताबहियों को जानने में।
- स्वकीय-संतुलन खाताबही को बनाने के लिए कुल देनदार तथा कुल लेनदार को तैयार करने की तकनीक को समझने में। स्वकीय-संतुलन खाताबही प्रणाली में कुल लेनदार तथा कुल देनदार खाते सामान्य खाताबही में रखे जाते हैं जो कि क्रमशः विक्रय खाताबही समायोजन खाते एवं क्रय खाताबही समायोजन खाते कहलाते हैं, का निरीक्षण करने में।
- विक्रय खाताबही से क्रय खाताबही एवं क्रय खाताबही से विक्रय खाताबही हस्तान्तरण को सम्मिलित करते हुए सौदों के लेखे की तकनीक को समझने में।

1. परिचय

(INTRODUCTION)

स्वकीय-संतुलन खाताबही प्रणाली से आशय खाताबही रखने की वह प्रणाली में जो खाताबहियों को लेनदेन की प्रकृति के अनुसार वर्गीकृत करती है। नामस्वरूप, विक्रय खाताबही, क्रय खाताबही, सामान्य खाताबही आदि और स्वतन्त्र रूप से उन्हें संतुलित करती है। खातों की बड़ी संख्या के दौरान सौदों की संख्या में बढ़ोत्तरी के साथ खाताबही के आकार में पुष्टि होती है, यह अशुद्धियों की खोज करने में समस्या उत्पन्न करती है। उसे हटाने के लिए विभिन्न खाताबही की प्रणाली को समाप्त किया जाता है यह इकहरा खाताबही विभक्त करने में सम्मिलित करता है। सामान्यतः तीन खाताबही बनाये जाते हैं नामस्वरूप—देनदार खाताबही, लेनदार खाताबही और मुख्य खाताबही [शेष खातों को अनुग्रहीत करना] इस इकाई में हम स्वकीय-संतुलन खाताबही प्रणाली और उसके लाभों की चर्चा करेंगे। हम प्रणाली के उदाहरण को भी देंगे।

बहु-बहीखाता प्रणाली में बहीखाते को सामान्यतः तीनों भागों में बाँटा जाता है कि नीचे दिये गये चित्र में दिया गया है।



In this chapter, we shall discuss the concept and significance of Self-balancing and Sectional balancing systems with the help of suitable illustrations.

2. स्वकीय-संतुलन प्रणाली

(SELF-BALANCING SYSTEM)

स्वकीय-संतुलन बहीखाता प्रणाली से अभिप्राय है कि यह ऐसी प्रणाली है जिसमें बहीखातों को विभिन्न श्रेणियों में बाँटा जाता है और यह बँटवारा उन बहियों की प्रकृति के अनुसार किया जाता है और उनमें वह व्यवहार लिखे जाते हैं जो उस बही की प्रकृति के अनुरूप होते हैं जैसे कि विक्रय के लिए बिक्री बही, क्रय के लिए क्रय बही और सामान्य बही आदि। इन बहियों में संतुलन स्वतंत्र रूप में स्वयं होता है। इस प्रणाली का उद्देश्य कि गयी भूल या गलती को इंगित करना और उन्हें बहुत कम मेहनत से ठीक करना होता है। इन बहियों को स्वकीय-संतुलन प्रणाली बनाने के लिए प्रत्येक बही में एक अतिरिक्त खाता खोला जाता है जिसे सामान्य बही समाशोधन खाता कहा जाता है और इन्हें विक्रय बही और क्रय बही में खोला जाता है। इन विभिन्न बहियों को इस प्रणाली में किस प्रकार से बनाकर रखा जाता है की व्याख्या विस्तार से इस विषय के पैरा 2.3 में की गयी है।

2.1 Working of the Self-Balancing system

Quite often the debit and credit entries relating to a transaction are posted in different ledgers e.g. when goods are sold on credit, the Sales Account will be credited in the General Ledger but the corresponding debit will be made in the customer's account in the Personal Ledger. In such a case for ascertaining the correctness of the posting in either of the ledgers it will be necessary to take out balances in both the ledgers; thus a mistake in one ledger will require checking of the balances in the others as well.

Such a position would be avoided if every ledger is made independent of the other by the converse aspect of entries in each ledger being posted in totals to the Control Account set up in the ledger itself. If this is done the correctness of individual balances in each ledger would be verified extracting its balances and agreeing them with the balances of the Control Account. A ledger that has a 'Control Account' set up in it, is referred to as

a 'self balancing ledger'. It connotes that it is capable of being balanced independently, the balance in the Control Account being equal to that of the individual balance.

2.2 स्वकीय संतुलन प्रणाली के लाभ (Advantages of Self-balancing system)

- (i) **बहीखाता संतुलन प्रणाली (Fixation of responsibility of ledger keeper)**—बहीखाता बनाने वाले का दायित्व निश्चित कर देता है, क्योंकि बही का संतुलन बनाना उस व्यक्ति पर निर्भर करता है और किसी भी त्रुटि के लिए वह उत्तरदायी होता है और उसे यह कहा जा सकता है कि वह अधिक समय लगाकर उस त्रुटि को ढूँढे तथा उसे ठीक करे इस प्रकार त्रुटि स्थानीय हो जाती है।
- (ii) **गणित रूप से ठीक (Arithmetical accuracy)**—यह सिद्ध किया जा सकता है कि वह बहीखाता गणित की तरह ठीक है।
- (iii) **अतिरिक्त लेखों को बनाना (Preparation of interim accounts)**—इस प्रणाली से व्यक्तिगत बहियों का संतुलन किये बिना ही आंतरिक लेखों को बनाया जा सकता है।
- (iv) **सभी आंकड़े उपलब्ध होते हैं (Availability of total figures)**—देनदारों और लेनदारों के पूरे आंकड़े हर समय उपलब्ध रहते हैं।
- (v) **आंतरिक देख-रेख (Internal check)**—इस प्रणाली के कारण आंतरिक देख-रेख सुदृढ़ हो जाती है।
- (vi) **गोपनीयता (Secrecy)**—जहां पर यह आवश्यक हो कि लिपिक कर्मियों को व्यक्तिगत खातों की जानकारी प्राप्त न हो सके तो उस बहीखाते के अन्तिम आंकड़े सीधे परीक्षण बकाया में समाहित किये जा सकते हैं।

2.3 स्वकीय संतुलन प्रणाली के अन्तर्गत रखे जाने वाले विभिन्न प्रकार के बहीखाते (Various Ledgers to be Maintained in Self-balancing Ledger System)

उपर्युक्त प्रणाली में विक्रय बहीखाते तथा क्रय बहीखाते में दोहरे प्रविष्टि पूरे नहीं होते हैं इसलिए इन बहीखातों से कोई पृथक् परीक्षण बकाया नहीं लिया जा सकता है। यदि इन बहीखातों को इस प्रकार से बनाया जाये कि इनमें से सीधे पृथक् परीक्षण बकाया प्राप्त हो सके तो इसे स्वकीय संतुलन प्रणाली कहा जायेगा। इसलिए इन सहायक बहीखातों में एक सामान्य बही संशोधन खाता बनाया जाता है। इस सामान्य बहीखाते में निम्न होते हैं :

- (i) **क्रय बही संशोधन खाता**
(यह वास्तव में कुल लेनदारी का खाता होता है।)
- (ii) **विक्रय बही संशोधन खाता**
(यह वास्तव में कुल देनदारों का खाता होता है।)

इन लेखों को नियंत्रक खाते कहा जाता है। वह प्रणाली जिसके अन्तर्गत संशोधन खाते में प्रविष्टि किये जाते हैं उनका विवरण आगे दिया जा रहा है।

2.3.1 क्रय बहीखाता (Bought Ledger)—किसी क्रय के लेखांकन करने के लिए आपने देखा होगा कि आरम्भिक प्रविष्टि क्रय खाते में देनदारी की तरफ सामान्य बही में किया जाता है

और आपूर्तिकर्ता के खाते में यह प्रविष्टि लेनदारी या जमा के रूप में क्रय बही में किया जाता है और यह जमा क्रय बही संशोधन खाता जो कि सामान्य बहीखाते में क्रय की कुल खरीद के रूप में किया जाता है।

और, यदि खरीदे गये माल में से कुछ माल वापिस किया जाता है और देय बकाया का भुगतान किया जाता है तो इसके लिए जो प्रविष्टि होगी आपूर्तिकर्ता के खाते में उसे देनदारी रूप में क्रय खाते में वापिस किये गये माल का मूल्य और जो भुगतान किया है, को लिखा जायेगा बाहर की और वापसी खाते जो कि सामान्य बही में है लेनदारी के रूप में लिखा जायेगा जिसमें वापिस किये गये माल का मूल्य को जमा दिखाया जायेगा तथा उसे किये गये भुगतान को बैंक खाते में जमा रूप में दिखाया जायेगा।

इससे आगे स्वकीय संतुलन प्रणाली के अनुरूप एक अतिरिक्त प्रविष्टि किया जाना चाहिए जिसमें सामान्य बही संशोधन खाते में जो कि क्रय बही में है। इसे जमा के रूप में दिखाना चाहिए और क्रय बही संशोधन खाते जो कि सामान्य बही में है को उस राशि को देनदारी के रूप में दिखाना चाहिए।

इसी प्रकार देय बिलों, मूल्य पर बट्टा आदि का प्रविष्टि भी किया जा सकता है। इस बात को विशेष रूप में ध्यान में लेना चाहिए कि सामान्य बही के क्रय बही संशोधन खाते का बकाया क्रय बहीखाते के सामान्य बही संशोधन खाते का सम होगा पर वह विपरीत दिशा में होगा तथा क्रय बही संशोधन खाता को सामान्य बही को स्वकीय रूप से संतुलित करना चाहिए।

यदि बहुत सी क्रय बहियां हैं तो प्रत्येक बही में एक सामान्य बही संशोधन खाता बना हुआ होगा और सामान्य बही में क्रय बही संशोधन खाता पृथक् रूप से प्रत्येक क्रय बही के लिए बनाया जायेगा प्रयास की मितव्यता तथा प्रविष्टि करने की सुविधा के लिए बहियों में प्रविष्टि एक निश्चित अवधि पर चाहे वह मासिक हो या सप्ताहिक रूप सहायक पुस्तकों से जो इस उद्देश्य के लिए रखी गयी है में दिये गये कुल व्यवहारों के जोड़ के आधार पर की जाती है।

2.3.2 विक्रय बही (Sales Ledger)—उधार पर की गयी बिक्री का मूल्य प्रविष्टि ग्राहक के खाते में देनदारी के रूप में विक्रय खाते में सामान्य बही में किया जाता है। पर सामान्य एवं विक्रय बही के स्वकीय संतुलन के लिए एक और प्रविष्टि विक्रय बही संशोधन खाते की सामान्य बही में देनदारी के रूप में किया जाता है और सामान्य बही संशोधन खाते में कुल विक्रय के साथ जमा के रूप में किया जाता है।

जब पूर्व में बेचे गये माल में से कुल माल वापिस प्राप्त होता है तथा भुगतान की बकाया राशि प्राप्त हो जाती है तो विक्रय वापसी खाते में देनदारी का प्रविष्टि वापिस प्राप्त माल के मूल्य से किया जाता है तथा बैंक खाते को भी प्राप्त कि गयी राशि से देनदारी के प्रविष्टि किया जाता है और विक्रय खाते में ग्राहक के व्यक्तिगत खाते को कुल जोड़ का जमा किया जाता है। दोनों बहियों को स्वकीय संतुलित करने के लिए एक अतिरिक्त प्रविष्टि सामान्य बही संशोधन खाते में देनदारी के रूप में विक्रय बही में की जाती है तथा विक्रय बही संशोधन खाते को सामान्य बही में उपर्युक्त राशि से जमा के रूप में की जाती है।

इसी प्रकार प्राप्य बिलों तथा अनादरित बिलों के लिए भी प्रविष्टि की जा सकती है।

2.3.3 सामान्य बही खाता (General Ledger)—जैसा कि ऊपर बताया गया है कि जब भी कोई प्रविष्टि क्रय या विक्रय बही में किया जाता है तो स्वकीय संतुलन के लिए एक विपरीत

प्रविष्टि को क्रय बही या विक्रय बही शोधन खाते में किया जाता है और यह खाते सामान्य खाते में बनाये जाते हैं। यह खाते कुल देनदार तथा कुल लेनदारों को संक्षिप्त रूप में दर्शाते हैं और इस प्रकार यह सामान्य बही का स्वकीय-संतुलन करते हैं। परिणामस्वरूप सामान्य बही को स्वकीय-संतुलित बनाने के लिए किसी और अतिरिक्त प्रविष्टि की आवश्यकता नहीं होती है।

अन्य कई प्रकार के खातों के लिए जो कि न तो ग्राहकों से या आपूर्तिकर्ताओं से सम्बन्धित हैं उनके लिए स्वकीय-संतुलन के लिए किसी अतिरिक्त प्रविष्टि की आवश्यकता नहीं होती है, क्योंकि प्रत्येक व्यवहार के दोनों रूप पहले से ही किसी न किसी खाते में सामान्य बही में पहले से ही होते हैं, जैसे कि नकद विक्रय, विपत्रों को बट्टे पर देना, खराब कर्जों की उगाही को समाप्त करना तथा खराब कर्जों के लिए प्रावधान करना।

उदाहरण (Illustration) 1

दिनेश एण्ड कं. प्रयोग में तीन खाताबही लाते हैं यानि देनदार खाताबही, लेनदार खाताबही तथा सामान्य खाताबही जो सभी स्वकीय-संतुलन की प्रणाली पर रखते हैं। निम्नलिखित विवरण से इन खाताबही के प्रत्येक में समायोजन खाता तैयार कीजिए।

2012		₹
जनवरी 1	देनदारों का शेष	16,000
	लेनदारों का शेष	18,500
जनवरी 31	उधार क्रय	4,500
	उधार विक्रय	9,800
	नकद विक्रय	1,500
	लेनदारों को चुकाये	9,875
	उनके द्वारा बट्टा दिया	325
	देनदारों से रोकड़ प्राप्त	7,800
	उन्हें छूट दी गई	200
	देय विपत्र स्वीकार	1,500
	प्राप्य विपत्र प्राप्त	3,000
	विक्रय वापसी	875
	क्रय वापसी	600
	देनदारों को छूट दी	275
	लेनदारों को छूट दी	150
	अशोध्य ऋण के लिए संचय	320
	डूबत ऋण	450
	प्राप्य विपत्र अनादरित	375

समाधान (Solution)

देनदार खाता में
सामान्य समायोजन खाता

Dr.					Cr.
2012		₹	2012		₹
1 जनवरी	देनदार खाता		1 जनवरी	शेष c/d	16,000
	समायोजन खाता		31 जनवरी	देनदार खाता	
	बैंक	7,800		समायोजन खाता:	
	छूट	200		बिक्री	9,800
	विपत्र प्राप्य	3,000		पिपत्र प्राप्य	375
	रिटर्न	875		अनादृत	
	भीतर				
	भत्ते	275			
	बुरा ऋण	450			
	शेष c/d	13,575			
		26,175			26,175
			1 फरवरी	शेष c/d	13,575

नकद विक्रय एवं संदिग्ध ऋणों हेतु प्रावधानों की प्रविष्टियाँ देनदार खाताबही पर प्रभाव नहीं डालेंगी।

लेनदार खाता में
सामान्य खाता समायोजन खाता

2012		₹	2012		₹
1 जनवरी	शेष c/d	18,500	31 जनवरी	लेनदार खाता	
31 जनवरी	लेनदार खाता			समायोजन खाता	
	समायोजन खाता			बैंक	9,875
	क्रय	4,500		छूट	325
				देय विपत्र	1,500
				रिटर्न बाहरी	600
				भत्ते	150
				शेष c/d	10,550
		23,000			23,000
1 फरवरी	शेष b/d	10,550			

सामान्य खाता में
देनदार खाता समायोजन खाता

2012		₹	2012		₹
1 जनवरी	शेष c/d	16,000	31 जनवरी	नाममात्र खाता	
31 जनवरी	नाममात्र खाता :			समायोजन खाता	
	बिक्री	9,800		बैंक	7,800
	विपत्र प्राप्य			छूट	200
	अनाहूत	375		विपत्र प्राप्य	3,000
				भीतर रिटर्न	875
				भत्ते	275
				बुरा ऋण	450
				शेष c/d	13,575
		26,175			26,175
1 फरवरी	शेष c/d	13,575			

लेनदार खाता में सामान्य
खाता समायोजन खाता

2012		₹	2012		₹
31 जनवरी	नाममात्र खाता		1 जनवरी	शेष द्वारा	18,500
	समायोजन खाता को		31 जनवरी	नाममात्र खाता	
	बैंक	9,875		समायोजन खाता :	
	छूट	325		विक्रय	4,500
	देय विपत्र	1,500			
	भाहरी रिटर्न	600			
	भत्ते	150			
	शेष c/d	10,550			
		23,000			23,000

एक खाताबही से दूसरे में हस्तान्तरण (Transfer from one ledger to another)—जहाँ एक खाता बही से अन्य खाता बही में एक खाते के शेष को हस्तान्तरित किया जाता है। उदाहरण हेतु क्रय खाताबही से विक्रय खाताबही, तो प्रविष्टि, पंजी के माध्यम से अभिलेखित होगी। साथ ही सम्बन्धित प्रभाव को अभिलेखित करने हेतु नियंत्रण खाते में भी एक अतिरिक्त प्रविष्टि करनी होगी।

3. विभागीय सन्तुलन

(SECTIONAL BALANCING)

विक्रय बही बिल्कुल सही है यह सिद्ध करने का सबसे आसान तरीका है कि सामान्य बहीखाते में सारे देनदारों का खाता बनाना इसका अर्थ यह होगा कि जबकि प्रत्येक ग्राहक का खाता विक्रय बही में बनाया जायेगा पर सामान्य बही में सारे देनदारों के खातों का जोड़ मासिक आधार पर लिखा जायेगा जिसमें सारे व्यवहारों के जोड़ जिसमें उधार पर कुल विक्रय, उधार लेने वाले ग्राहकों से प्राप्त राशि उनको दिये गये बट्टे का जोड़, वापिस आये माल का जोड़, कुल प्राप्य बिल प्राप्त हुए आदि का विवरण लिखा जायेगा।

सारे देनदारों के खाते का बकाया प्रत्येक ग्राहक के खातों के जोड़ के बराबर होना चाहिए और यदि यह ऐसा ही है तो माना जायेगा कि सारे देनदारों का खाता तथा ग्राहकों के व्यक्तिगत खाते ठीक हैं। यदि इनमें कोई अन्तर है तो यह स्पष्ट हो जाता है कि कोई गलती कहीं-न-कहीं जरूर है।

इसी प्रकार प्रत्येक आपूर्तिकर्ता के खातों की शुचिता को भी परखा जा सकता है। इन खातों के जोड़ का सारे लेनदारों के खाते के जोड़ का मिलान करके सामान्य बही में दोहरी प्रविष्टि अपने आप में पूरा होगा। उदाहरण के लिए उधार विक्रय के लिए सारे देनदारों का खाते को घटा दिखाया गया था और विक्रय खाते में जमा किया गया आपूर्तिकर्ताओं को वापिस किये गये माल के लिए सारे लेनदारी के खाते में घटा करके दिखाया जायेगा तथा बाहरी वापसी खाते में जमा के रूप में दिखाया जायेगा।

‘कुल जोड़ खाते’ को शोधन खाते या नियंत्रण खाता कहा जाता है, क्योंकि वह सहायक खातों की शुचिता (विक्रय या क्रय खाते) शुद्धियों को सिद्ध करते हैं।

विभागीय संतुलन प्रणाली में प्रत्येक सहायक बही के कुल जोड़ खाते सामान्य बही में खोले जाते हैं और कोई भी नियंत्रण खाता, शोधन खाता या स्वकीय-संतुलन सहायक पुस्तकों में नहीं खोला जाता है।

3.1 विभागीय संतुलन प्रणाली के लाभ (Advantages of Sectional balancing system)

इस प्रणाली में नियंत्रक खातों से निम्न लाभ हैं :

1. **प्रविष्टि की शुद्धि की परख (Check on accuracy of entries)**—नियंत्रण खातों द्वारा देनदारों और लेनदारों के खातों में किये गये प्रविष्टि की शुद्धता की परख की जा सकती है।
2. **त्रुटियों का स्थान (Location of errors)**—नियंत्रण खातों के बकाया का नियमित व्यक्तिगत खातों से मिलान और तुलना करना त्रुटि को ठीक करने में सहायक होता है।
3. **अंतिम खातों को बनाना (Preparation of final accounts)**—नियंत्रण खाते अंतिम खातों को बनाने में सहायता करता है, क्योंकि यह कुल बकाया प्रदान करता है।
4. **जो आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं (Calculation of missing figures)**—उनकी गणना करने में सहायता नियंत्रण खाते से अन उपलब्ध आंकड़ों की गणना करने में सहायता मिलती है।

5. आंतरिक पड़ताल (Internal check)—नियंत्रण खाते विभिन्न खातों में किये गये प्रविष्टि जो अतिरिक्त पड़ताल करने में सहायक होते हैं।

4. स्वकीय संतुलन तथा विभागीय संतुलन प्रणाली में अन्तर

(DISTINCTION BETWEEN SELF BALANCING AND SECTIONAL BALANCING SYSTEMS)

	स्वकीय संतुलन	विभागीय संतुलन
1. बहियों का वर्गीकरण	विभिन्न प्रकार के व्यवहारों के लिए पृथक् बही बनाई जाती है।	सामान्य बही में केवल कुल जोड़ खाता खोला जाता है जो कि प्रत्येक सहायक बही से लिया जाता है।
2. दोहरे प्रविष्टि	इस प्रणाली में एक सामान्य बही शोधन खाता देनदारों तथा लेनदारों के खाते में खोला जाता है जिस से दोहरी प्रविष्टि हो जाती है।	इससे पृथक् परीक्षण बकाया नहीं बनाया जा सकता है, क्योंकि इन बहियों में दोहरी प्रविष्टियाँ पूरी नहीं होती हैं।
3. लेखों की शुद्धता	व्यक्तिगत खातों बकायों की शुद्धता प्रत्येक बही के बकाया को भी सत्यापित माना जायेगा जब वह नियंत्रण खाते से मेल खाते हैं तो।	प्रत्येक ग्राहक या आपूर्तिकर्ता के खाते की शुद्धता को परखा जा सकता है इसके लिए इन खातों के बकाया को सारे देनदारों/लेनदारों के खाते जो सामान्य बही में हैं से मिलना चाहिए।

5. अशुद्धियों का संशोधन

(RECTIFICATION OF ERRORS)

5.1 संदिग्ध खाता खोलने से पूर्व अशुद्धियों का संशोधन (Rectification of errors before opening Suspense Account)

5.1.1 विभागीय संतुलन प्रणाली (Sectional Balancing System)—यदि कोई त्रुटि देनदारों या लेनदारों के खातों को बिना उसके जोड़ को प्रभावित किये उन्हें प्रभावित करती है तो इस त्रुटि का संशोधन देनदारों या लेनदारों के खातों का शोधन करके किया जा सकता लेकिन यदि ऐसी त्रुटि देनदारी या लेनदारी के जोड़ को प्रभावित करती है तो इसके लिए मुख्य खाता बही में कुछ प्रविष्टियाँ करनी होती है जो कुल देनदार तथा कुल लेनदार खातों के माध्यम से कि जायेगी। इसको निम्न उदाहरणों के साथ नीचे वर्णित किया गया है।

- यदि एक्स को माल बेचा गया और उसे वाई के खाते में लिख दिया गया तो मुख्य खाता बही का परीक्षण बकाया आपस में मिलेगा। इस त्रुटि का संशोधन देनदारों के

5.2 संदिग्ध खाता खोलने के उपरान्त अशुद्धियों का संशोधन (Rectification of errors after opening Suspense Account)

5.2.1 विभागीय संतुलन प्रणाली (Sectional Balancing System)—संशोधन की विधि वही होगी पर पर इसमें जिन प्रविष्टियों को अपनी मर्जी से ठीक किया जाता है। उन्हें संदिग्ध खाते के माध्यम से ठीक किया जायेगा उपर्युक्त उदाहरण त्रुटि का संशोधन निम्न रूप में किया जायेगा।

1. वैसा ही जैसा ऊपर बताया गया है।
2. वैसा ही जैसा ऊपर बताया गया है।
3. वैसा ही जैसा ऊपर बताया गया है।
4. कुल देनदारी का खाता Dr (मुख्य खाता बही में)
को संदिग्ध खाता (मुख्य खाता बही में)

5.2.2 स्वकीय संतुलन प्रणाली (Self-Balancing System)—संशोधन की विधि वही है पर इसमें अपवाद है वह है कि वह प्रविष्टियाँ जिन्हें एक तरफा रूप से ठीक किया गया है को संदिग्ध खाते के माध्यम से किया जायेगा। उपर्युक्त उदाहरण त्रुटियों का संशोधन निम्न रूप से किया जायेगा।

1. वैसा ही जैसा ऊपर दिया है।
2. (a) संदिग्ध खाता Dr. (देनदारों की बही में)
को विक्रय खाता
- (b) देनदारी को बही शोधन खाता Dr. (मुख्य बही खाता में)
को सामान्य बही शोधन खाता (देनदारों के खातों में)
3. एक्स का खाता Dr. (देनदारों का खाता बही में)
को संदिग्ध खाता Dr. (देनदारों का खाता बही में)
4. (a) देनदारी बही शोधन खाता Dr. (मुख्य खाता बही में)
को संदिग्ध खाता (मुख्य खाता बही में)
- (b) संदिग्ध खाता Dr. देनदारी का खाता में
को सामान्य बही शोधन खाता देनदारों का खाता में

उदाहरण (Illustration) 2

निम्नलिखित व्यवहारों के लिए एक्स लि. की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ तैयार कीजिए:

- (a) ₹ 1,000 द्वारा विक्रय पुस्तक कम कर दी गयी थी।
- (b) राव को बट्टा दिया ₹ 50 रोकड़ पुस्तक में सही लिखे थे, उसके खाते में नहीं पहुँचाये।
- (c) क्रय खाताबही में मूर्ति के खाते में ₹ 310 का क्रेडिट शेष था उसे विक्रय खाताबही में उसके खाते में हस्तान्तरित कर दिये थे।

स्वकीय-संतुलन प्रणाली तथा विभागीय संतुलन प्रणाली दोनों के अन्तर्गत जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए।

समाधान (Solution)

Journal of Exe. Ltd.

स्वयं संतुलन प्रणाली :

(a)	स्वयं संतुलन प्रणाली (सामान्य खाता में) सामान्य खाता समायोजन खाता को (बिक्री पुस्तकों के तहत कांस्टिंग की वजह से त्रुटि सुधारी)	Dr.	1,000	1,000
	उचंत खाता (सामान्य खाता में) बिक्री खाता को (बिक्री पुस्तकों के तहत कांस्टिंग, त्रुटि से उत्पन्न अशुद्धियों का संशोधन)	Dr.	1,000	1,000
(b)	उचंत खाता (क्रय खाता में) राव को (क्रय खाता में) (अशुद्धियों का संशोधन जिसके द्वारा राव लेनदार नहीं रहेगा, सामान्य खातों में बही खातों को प्रभावित नहीं कर रहा)	Dr.	50	50
(c)	मूर्ति (क्रय खाता में) मूर्ति (क्रय खाता में) (मूर्ति खरीद खाता बही में क्रेडिट संतुलन के विक्रय खाता बही में अपने खाते में रूपान्तरण)	Dr.	310	310
	खरीद खाता समायोजन खाता (सामान्य खाता में) सामान्य खाता समायोजन खाता को (खरीद खाता में) (मूर्ति के खाते का खरीद खातों में हस्तान्तरण की वजह से खरीद खाते से सम्बन्धित समायोजन खाते में सुधार)	Dr.	310	310
	सामान्य खाता समायोजन खाता (क्रय खाता में) क्रय खाता समायोजन खाता को (सामान्य खाता में) (मूर्ति खाते के हस्तान्तरण की वजह से क्रय खाते से सम्बन्धित समायोजन खाते में सुधार)	Dr.	310	310

टिप्पणी (Note) : यह मानें कि यदि खाताबही बराबर नहीं है तो उचन्त खाता खोला जाता है।

खण्डीय सन्तुलन प्रणाली (Sectional balancing System)

(a)	कुल देनदार खाता विक्रय खाता (विक्रय पुस्तक में अन्तर्जातीय के परिणाम का संशोधन)	Dr.	1,000	1,000
(b)	₹ 50 के साथ क्रेडिट अनुपात (विक्रय बही में)			
(c)	1. मूर्ति (क्रय बही में) मूर्ति को (क्रय बही में) (क्रय बही में मूर्ति के क्रेडिट शेष ₹ 30 का उसके खाते विक्रय बही में हस्तान्तरण)	Dr.	310	310
	2. कुल लेनदार खाता कुल देनदार खाता (मूर्ति के खाते के हस्तान्तरण के कारण, क्रय बही से विक्रय बही में कुल खातों का हस्तान्तरण)	Dr.	310	310

उदाहरण (Illustration) 3

मैसर्स कुलकर्णी ब्रदर्स जो स्वकीय सन्तुलन प्रणाली पर देनदार खाता बही, लेनदार खाता बही तथा सामान्य खाता बही रखता है, की पुस्तकों से निम्नलिखित विवरण निकाला है। देनदार खाताबही तथा लेनदार खाताबही में प्रकट सामान्य खाताबही समायोजन खाता कैसे दर्शायेंगे :

	₹
1 जनवरी 2010 पर, देनदारों का शेष	91,500
1 जनवरी 2010 पर, लेनदारों का शेष	1,09,800
वर्ष 2010 के लिए व्यवहार :	
उधार क्रय	41,000
उधार विक्रय	45,400
विक्रय वापसी	800
क्रय वापसी	1,200
ग्राहकों से रोकड़ प्राप्त	51,000
ग्राहकों को बट्टा दिया	900
लेनदारों को रोकड़ चुकाई	61,400
बट्टा प्राप्त	1,340
स्वीकृत बिल प्राप्त	17,000
स्वीकृत बिल देखते हुए	24,000
प्राप्य विपन्न अनादरित	2,400

देय विपत्र अनादरित	6,000
बुरा ऋण से लिखा	5,000
फुटकर प्रभाव ग्राहकों के लिए डेबिट	690
लेनदारों से भत्ता	550
देनदार खाताबही से हस्तान्तरित	1,290

समाधान (Solution)

सामान्य खाताबही समायोजन खाता
(विक्रय खाता बही में)

2012		₹	2012		₹
1 जनवरी से 31 दिसम्बर	विक्रय खाताबही समायोजन खाता सामान्य खाता बही में :		1 जनवरी से 31 दिसम्बर	नीचे लाग गया शेष	91,500
	आन्तरिक वापसी	800		विक्रय खाता बही समायोजन खाता सामान्य खाताबही में :	
	बैंक	51,000		विक्रय	45,400
	बट्टा	900		अनादरित बिल	2,400
	प्राप्य बिल	17,000		विविध प्रभार	690
	डूबत ऋण	5,000			
	हस्तान्तरण	1,290			
31 दिसम्बर	शेष आगे ले जाया गया	64,000			
		1,39,990			1,39,990
			2011 1 जनवरी	नीचे लाया गया शेष	64,000

सामान्य खाता बही समायोजन खाता
(क्रय खाताबही में)

2012		₹	2012		₹
1 जनवरी से 31 दिसम्बर	नीचे लाया गया शेष	1,09,800	1 जनवरी से 31 दिसम्बर	क्रय खाता बही समायोजन खाता	

	क्रय खाता बही समायोजन खाता		31 दिसम्बर	सामान्य खाताबही में	
	सामान्य खाता बही में :			बैंक	61,400
	क्रय	41,000		देय बिल	24,000
	देय बिल निरस्त	6,000		बाह्य वापसी	1,200
				बट्टा	1,340
				भत्ता	550
				हस्तान्तरण	1,290
				शेष आगे ले जाया गया	<u>67,020</u>
		1,56,800			<u>1,56,800</u>
2011 1 जनवरी	नीचे लाया गया शेष	67,020			

6. सहायक पुस्तकों का रेखांकन

(RULING OF SUBSIDIARY BOOKS)

जिस समय यहाँ कई क्रय या विक्रय खाताबहियाँ प्रयोग में हैं, वास्तविक प्रविष्टियों की कई पुस्तकें, उदाहरण हेतु क्रय पुस्तकें, विक्रय पुस्तकें, रोकड़ पुस्तकें, दैनिक पूंजी आदि में उपयुक्त तरीके से रेखांकन, जो विभिन्न खाताबहियों में खाताये गये व्यवहारों के मासिक योग को तत्परता से दर्शाने लायक, स्वकीय संतुलन प्रविष्टि के आधार पर अभिलेखित किया जा सकता है।

7. गुप्त खाता

(SECRET ACCOUNT)

समय पर, निश्चित खातों का संचालन उच्च अधिकारी के अतिरिक्त, स्टॉक के सदस्यों से गुप्त रखना आवश्यक समझा जा सकता है। उदाहरण साझेदारों की पूंजी ऋण, जमा आदि। ऐसी दशा में, इन खातों के लिये एक निजी खाता अलग से बनाया जाता है और एक विश्वसनीय लिपिक द्वारा मुख्य लेखाकार की सीधे निगरानी में खाताबही में खतौनी की जायेगी। निजी खाता बही में सामान्य खाताबही समायोजन खाता भी बनाया जायेगा और सामान्य खाता बही में निजी खाता बही समायोजन खाता बनाया जायेगा। इस प्रकार यद्यपि निजी खाते में रखे गये खातों में व्यक्तिगत लेखे लेखांकन कर्मचारियों का प्रकट किये जायेंगे पर उनका कुल प्रभाव गुप्त रखा जायेगा। व्यक्तिगत खातों को गुप्त रखने की इच्छा की दशा में पृथक रोकड़ बही तथा अधिकोष खाता बनाया जायेगा जो कि पूर्ण गुप्तता को सुनिश्चित करेगा।

जब ऐसी प्रणाली पहली बार आरम्भ की जाती है तो सम्पत्तियाँ और अन्य डेबिट शेषों को सामान्य खाता बही से सम्बन्धित खातों को क्रेडिट करके निजी खाते में सामान्य खाताबही

समायोजन खाते को डेबिट या क्रेडिट किया जाता है। जब क्रेडिट शेषों को हस्तांतरित किया जाता है, तब विपरीत लेखे किये जाते हैं। यदि अधिकोष शेष का एक भाग निजी अधिकोष खाते में करने की इच्छा हो तो अधिकोष खाता क्रेडिट निजी खाताबही समायोजन खाता डेबिट करते हैं। निजी अधिकोष से साझेदार आवश्यक राशि को निकाल सकते और जमा पर ब्याज चुकाते हैं और ऋणों पर उपयुक्त दर से ब्याज चुकाते हैं इस बात को प्रकट किये बिना। जब वर्ष के अन्त में खाते बन्द किये जाते हैं तो आगम खाते निजी समायोजन आगम खाते निजी खाता बही समायोजन खाते को हस्तान्तरण द्वारा तथा तत्सम्बन्धी लेखे निजी खाते में सामान्य खाता बही समायोजन खाते को डेबिट या क्रेडिट कर दिया जाता है। इसके पश्चात् सभी शेषों को निजी खाताबही में पहले से ही विद्यमान शेषों के साथ लाभ-हानि खाते में हस्तांतरण कर दिये जाते हैं। इस प्रकार निजी खाते में खातों के परिचालन की पूरी गुप्तता बनी रहती है तथा संस्था द्वारा अर्जित किया गया लाभ भी कर्मचारियों को पता नहीं चलता।

When accounts are closed at the end of the year, the revenue accounts are closed off by transfer of the Private Ledger Adjustment Account and corresponding entries are made in the Private Ledger by debit or credit to the General Ledger Adjustment Account. Afterwards all the balances so transferred, along with those already in the Private Ledger, are transferred to the Profit & Loss Account in the Private Ledger. In this way, complete secrecy is maintained regarding the operation of accounts in the Private Ledger; also the amount of profit made by the concern is not disclosed to the staff.

विद्यार्थी ध्यान दें कि निजी तथा सामान्य खाता बही को स्वकीय-संतुलित करने के लिये अपनाई जाने वाली प्रक्रिया उपरोक्त वर्णित विधि से भिन्न है क्योंकि समायोजन खातों में लेखे उस समय नहीं किये जाते, जब व्यय का भुगतान किया जाता है या आय वसूल की जाती है बल्कि वर्ष के अन्त में लेखे किये जाते हैं यह केवल पुस्तपालन की कठिनाई को दूर करने के लिये किया जाता है।

उदाहरण (Illustration) 4

मि. गोविन्द स्वकीय संतुलन खाताबही रखते हैं, निम्नलिखित व्यवहारों के लेखों से विक्रय खाताबही में सामान्य खाताबही समायोजन खाता बनाइये :

- | | |
|-----------|---|
| 1.4.2013 | मि. X से पूर्ण भुगतान में ₹ 475 प्राप्त हुए, वह ₹ 25 का बट्टा देता है। |
| 2.4.2013 | मि. Y से ₹ 2,000 प्राप्त |
| 3.4.2013 | मि. T को माल भेजा ₹ 700 तथा ₹ 400 का अग्रिम के समायोजन के बाद ₹ 300 प्राप्त |
| 4.4.2013 | मि. Q से ₹ 1,000 डूबत ऋण पुनः प्राप्त किया |
| 5.4.2013 | निम्नलिखित को माल बेचा— |
| | मि. A ₹ 1,000 |
| | मि. B ₹ 1,500 |
| | मि. C ₹ 2,000 |
| 15.4.2013 | मैं P ने देय के लिए ₹ 750 चुकाये उसके बाद शेष देय ₹ 250 था |

25.4.2013	निम्नलिखित से प्राप्त राशि—	
	मि. A	₹ 750
	मि. B	₹ 1,000
	मि. C	₹ 2,000

30.4.2013 पूर्ति के लिए मि. R से अग्रिम प्राप्त ₹ 2,000.

समाधान (Solution)

विक्रय खाता बही सामान्य खाताबही
समायोजन खाता

2013		₹	2013		₹
1 अप्रैल	नीचे लाया गया शेष	400	1 अप्रैल	नीचे लाया गया शेष	3,500
2 अप्रैल	विक्रय खाताबही		3 अप्रैल	विक्रय खाता बही	
	समायोजन खाता	300		समायोजन खाता	
30 अप्रैल	To " " (P,X,&Y)	3,250		(विक्रय)	700
	To " " (A, B, C)	3,750	30 अप्रैल	विक्रय खाता बही	
	To " " R	2,000		समायोजन खाता	4,500
30 अप्रैल	शेष आगे लाया गया		30 अप्रैल	शेष आगे ले जाया गया	2,000
	(A, B &P)	1,000			
		10,700			10,700
1 मई	नीचे लाया शेष	2,000	1 मई	नीचे लाया गया शेष	1,000

क्रियात्मक टिप्पणियाँ (Working Notes)—

(i) प्रारम्भिक शेष में निम्नलिखित देनदारियाँ शामिल हैं—

	₹
X	500
Y	2,000
P	<u>1,000</u>
	<u>3,500</u>

(ii) प्रारम्भिक नाम शेष में टी. से ₹ 400, अग्रिम के शामिल हैं।

(iii) अंतिम नाम शेष आर से ₹ 2,000, अग्रिम का प्रतिनिधित्व करता है।

(iv) अंतिम शेष ₹ 1,000 में निम्नलिखित देनदारियाँ शामिल हैं—

	₹
A	250
B	500
P	<u>250</u>
	<u>1,000</u>

उदाहरण (Illustration) 5

एक व्यापारी की पुस्तकों से 1 जनवरी से 31 मार्च, 2013 तक की निम्नलिखित सूचनायें उपलब्ध हैं।

- (1) कुल बिक्री राशि के ₹ 60,000 जिसमें पुराने उपस्कर की बिक्री हेतु ₹ 1,200 (पुस्तक मूल्य ₹ 3,500) शामिल हैं। कुल नकद बिक्री, कुल उधार बिक्री 80% से कम है।
- (2) अवधि हेतु प्रारम्भिक देनदारों तथा उधार विक्रय का कुल का 60% की राशि देनदारों से नकद प्राप्त हुआ। देनदारों ने ₹ 2,600 का नकद बढ़ा दिया था।
- (3) 3 माह के दौरान कुल ₹ 6,000 के प्राप्य विपत्र लिखे गये जिसमें से ₹ 3,000 प्राप्य विपत्र पूर्तिकर्ताओं को बेचान कर दिये गये। इन बेचान किये गये प्राप्य विपत्रों में से एक ₹ 600 का प्राप्य विपत्र पक्षकार के दिवालिया होने के कारण [उसकी सम्पत्तियों से कुछ भी वसूल नहीं हुआ] भुगतान न होने पर अनादरित हो गया था।
- (4) कुल क्रय ₹ 16,000 जिसका 10% नकद हेतु थे।
- (5) ग्राहक से प्राप्त धनादेश ₹ 6,000 हेतु अनादरित हो गया, ₹ 500 की राशि वसूल नहीं है, पहले वर्ष में प्राप्त ₹ 2,500 अशोध्य ऋण अपलिखित हुए।
- (6) 1 जनवरी 2013 पर ₹ 40,000 के विविध देनदार थे।

आपको सामान्य खाताबही में देनदार खाताबही समायोजन खाता दर्शाना आवश्यक है।

समाधान (Solution)

साधारण खाताबही

देनदार की खाताबही समायोजन खाता

Dr.			Cr.
	₹		₹
नीचे लाया गया शेष	40,000	सामान्य खाता बही	
सामान्य खाताबही		समायोजन खाता	
समायोजन खाता :		संग्रहण (रोकड़ तथा बैंक)	53,400
विक्रय	49,000	बट्टा	2,600
विविध लेनदार	600	प्राप्य बिल	6,000

अनादरित बिल		डूबत ऋण	1,100
बैंक		शेष आगे ले जाया गया	32,500
अनादरित चैक	6,000		
	<u>95,600</u>		<u>95,600</u>

टिप्पणी (Note)—यदि उधार बिक्री ₹ 100 तथा नकद बिक्री 20 ₹ है तो कुल उधार बिक्री ₹ 58,800 की 5/6वीं यानि की, ₹ 49,000 होगी।

उदाहरण (Illustration) 6

निम्नलिखित विवरण से, मार्च 2013 के माह के लिए मि. वासू के सामान्य खाताबही में प्रकट उपयुक्त समायोजन खाता तैयार कीजिये—

दिनांक विवरण

- 1 मि. X से क्रय ₹ 2,000
- 2 मि. X को प्रारम्भिक अग्रिम को समायोजित करते हुए ₹ 1,600 चुकाये
- 3 फरवरी में क्रय के सम्बन्ध में मि. R को पूर्ण भुगतान में ₹ 1,000 चुकाये
- 13 मि. Y को अग्रिम भुगतान ₹ 3,000
- 14 मि. A से माल क्रय ₹ 4,000
- 25 मि. A को ₹ 500 मूल्य का माल वापस
- 26 A को देय शेष का निपटारा 10% के बट्टे पर किया
- 27 13th पर अग्रिम चुकता के विरुद्ध ₹ 2,500 का मि. Y से माल क्रय किया
- 28 ₹ 2,000, 28 फरवरी 2013 पर चुकता मि. P से अग्रिम बैंक से प्राप्त
- 29 B से क्रय ₹ 2,000
- 30 ₹ 750 Q से माल वापस किया, फरवरी में नकद के लिए माल वास्तविक क्रय किया था।

समाधान (Solution)

लेनदार खाताबही समायोजन खाता

2013		₹	2013		₹
1 मार्च	शेष (X.P.)	2,400	1 मार्च	नीचे लाया गया शेष	1,000
31 मार्च	सामान्य खाताबही		31 मार्च	सामान्य खाताबही	
	समायोजन खाता (क्रय खाताबही में)			समायोजन खाता (क्रय की गई	
	बैंक (X,R,Y & A)	8,750		खाताबही में) :	
	वापसी (A&Q)	1,250		क्रय	10,500

8.20

दि इन्स्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स ऑफ इण्डिया

31 मार्च	बट्टा	350	31 मार्च	बैंक (वापसी)	2,000
	शेष नीचे लाया गया (B)	2,000		शेष नीचे ले जाया गया (Y,Q)	1,250
		14,750			14,750
1 अप्रैल	नीचे लाया गया शेष (Y, Q)	1,250	1 अप्रैल	नीचे लाया गया शेष (B)	2,000

कार्यशील टिप्पणी (Working Notes):

(1) क्रय—

1.3.2013	X	2,000
14.3.2013	A	4,000
27.3.2013	Y	2,500
30.3.2013	B	<u>2,000</u>
		<u>10,500</u>

(2) भुगतान—

2.3.2013	X	1,600
13.2.2013	R	1,000
13.2.2013	Y	3,000
26.3.2013	A ₹ 3,500 – 10%	<u>3,150</u>
		<u>8,750</u>

उदाहरण (Illustration) 7

मि. शुक्ला एण्ड कम्पनी की पुस्तकों में सामान्य खाताबही में निम्नलिखित सूचनाओं से कुल देनदार खाता तैयार कीजिये—

डेबिट शेष 1.7.12 को ₹ 87,200, देनदार खाते में क्रेडिट शेष 1.7.2012 को ₹ 600

31.12.2012 पर अन्त में 6 माह के दौरान व्यवहार—

नकद विक्रय के ₹ 4,000 कुल विक्रय ₹ 94,000 में शामिल थे। देनदारों से बैंक द्वारा ₹ 60,000 भुगतान प्राप्त किया देनदारों से रोकड़ द्वारा ₹ 48,000 भुगतान प्राप्त किया। प्राप्य विपत्र द्वारा ₹ 26,000 भुगतान प्राप्त किया।

देनदारों से प्राप्त प्राप्य विपत्र ₹ 6,000 के लिए अनादरित हुआ तथा निकराई व्यय के ₹ 60 चुकाये, ग्राहक द्वारा प्राप्त बैंक ₹ 800 के लिए अनादरित हुआ।

प्राप्य विपत्र से प्राप्ति तथा उपरोक्त में ₹ 26,000 में शामिल है, ₹ 5,000 का विपत्र पूर्तिकर्ता को बेचान किया।

अवधि के दौरान ₹ 1,000 के अशोध्द्य ऋण अपलिखित किये। शीघ्र भुगतान के लिए बट्टा दिया ₹ 700, 2011 में अशोध्द्य ऋण अपलिखित थे तथा अब ₹ 900 की राशि देनदारों से पुनः प्राप्त हुई।

भुगतान में देरी के लिए ब्याज डेबिट किये ₹ 1,250, 31.12.2012 पर, संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान बनाया ₹ 2,100। देनदार खाता बही में तथा लेनदार खाताबही में भी मि. ट्रयल एण्ड कं. के खाते दर्शाइये। लेनदार खाताबही के शेष ₹ 900 था तथा समान राशि की देनदार खाते में हस्तान्तरित कर दिया। ग्राहक द्वारा ₹ 2,760 का माल वापस कर दिया।

समाधान (Solution)

मैसर्स शुक्ल एण्ड कम्पनी के सामान्य खाताबही में

Dr.		कुल देनदार खाता			Cr.	
तिथि	विवरण	₹	तिथि	विवरण	₹	
1.7.202012	शेष सन्तुलित आँकड़े	87,200	1.7.2012	शेष सन्तुलित आँकड़े	600	
1.7.2012	विक्रय (₹ 94,000 – ₹ 4,000)	90,000	1.7.2012	बैंक	60,000	
to			to			
31.12.2012			31.12.2012			
”	रोकड़	600	”	रोकड़	48,000	
”	प्राप्य बिल (अनादरित)	6,000	”	प्राप्य बिल	26,000	
”	बैंक (कोई प्रभार नहीं)	60	”	डूबत ऋण	1,000	
”	बैंक (अनादरित बिल)	800	”	बट्टा अनुमति किया	700	
“	ब्याज	1,250	“	कुल लेनदार खाता हस्तान्तरण	900	
			“	विक्रय वापसी	2,760	
			“	शेष आगे ले जाया गया	45,950	
		<u>1,85,910</u>			<u>1,85,910</u>	

टिप्पणी (Notes)—

- (1) कुल देनदार खाते में प्रकट 2011 के अशोध्द्य ऋण 2012 में पुनः प्राप्त नहीं होंगे। यह लाभ-हानि खाते में क्रेडिट होना चाहिए।

- (2) कुल देनदार खाते के साथ पूर्तिकर्ता को ₹ 5,000 का प्राप्य विपत्र बेचान नहीं किया गया क्योंकि बेचान के समय पर पूर्तिकर्ता खाता डेबिट है तथा प्राप्य विपत्र खाता क्रेडिट है।

उदाहरण (Illustration) 8

31, मार्च 2013 वर्ष के अन्त के लिए Self. Ltd. की पुस्तकों से निम्नलिखित विवरण प्राप्त हुआ—

	₹		₹
नकद विक्रय	25,000	प्राप्य विपत्र अनादरित	25,00
उधार क्रय	2,80,000	विक्रय वापसी	8,500
देनदारों से प्राप्त	4,25,000	लेनदारों को चुकाया	1,62,000
प्राप्य विपत्र निकाला	20,000	बढ़ा दिया	3,000
बढ़ा प्राप्त	25,00	देनदार का चैक अनादरित	7,500
नकद क्रय	12,000		
देय विपत्र चुकाया	6,500	उधार विक्रय	4,90,000
डूबत ऋण पुनः प्राप्त	1,500	प्राप्य विपत्र संग्रहित	10,000
प्राप्त विपत्र बैंक के	5,000	क्रय वापसी	3,700
साथ भुनाया	8,000	लेनदार से प्राप्य बिल	7,900
ग्राहक खाते के अधि देय	1,200	आपूर्तिकर्ता से अधिदेय वापस	600
पर ब्याज लगाया।	5,500	डूबत ऋण	1,000
बेचान प्राप्य विपत्र का		प्रारम्भिक शेष	
अनादरण (लिखाई व्यय 75)			
देय विपत्र स्वीकृत	16,000	देनदार	78,000
		लेनदार	85,000

आपसे अपेक्षा है कि कुल देनदार खाता तथा कुल लेनदार खाता बनाइये।

समाधान (Solution)

Self लिमिटेड की पुस्तकों में

कुल देनदार खाता

	₹		₹
नीचे लाया गया शेष	78,000	रोकड़	4,25,000
बैंक (अनादरित बिल)	7,500	अनुमति बट्टा	3,000
प्राप्य बिल (अनादरित)	2,500	प्राप्य बिल	20,000

ब्याज	1,200	आन्तरिक वापसी	8,500
विक्रय	4,90,000	डूबत ऋण	1,000
विविध लेनदार (बेचान बिल सूचना प्रभार के साथ अनादरित किया गया)	5,575	शेष आगे लाया गया	1,27,275
	<u>5,84,775</u>		<u>5,84,775</u>

कुल लेनदार खाता

	₹		₹
रोकड़	1,62,000	नीचे लाया गया शेष	85,000
प्राप्य बिल (बेचान)	7,900	क्रय	2,80,000
प्राप्य बिल	2,500	विविध देनदार (बेचान बिल सूचना प्रभार के साथ अनादरित किया)	5,575
देय बिल	16,000	रोकड़ (वापसी किये गये भुगतान पर)	600
बाह्य वापसी	3,700		
शेष आगे ले जाया गया	<u>1,79,075</u>		
	<u>3,71,175</u>		<u>3,71,175</u>

टिप्पणी (Notes)—कुल देनदार तथा कुल लेनदार खाते में, नकद विक्रय या क्रय से सम्बन्धित सौदे, प्राप्य या देय विपत्र का भुगतान तथा विपत्र का बेचान या बढ़ा की प्रविष्टि नहीं होगी।

उदाहरण (Illustration) 9

निम्न विवरण जैड लि. की लेखा पुस्तकों में से वर्ष अन्त 31 मार्च 2012 के लिए गये हैं।

	₹		₹
नकद विक्रय	75,000	प्राप्य बिल अनादरित	2,500
उधार में क्रय	2,80,000	वापसी अन्दर	10,500
देनदारों से प्राप्ति	5,00,000	लेनदारों को भुगतान	2,62,000
प्राप्य के बिल बनाये	20,000	लेनदारों द्वारा दिया गया बट्टा	3,000
बढ़ा प्राप्त हुआ	5,000	देनदारों को अनादरित चैक वापस	7,000
नकद क्रय	72,000	उधार पर विक्रय	5,25,000
देय बिल भुगतान	6,500	प्राप्य बिल संग्रहित	10,000
खराब कर्ज वसूल किये	1,500	माल वापस किया	3,700
प्राप्य बिल बैंक पर बट्टे से	8,000	प्राप्य बिलों को लेनदारों को अनुमोदित	7,900

ग्राहकों के देय खातों पर ब्याज	1,200	आपूर्तिकर्ताओं द्वारा अधिक भुगतान की वापसी	600
अनुमोदित प्राप्य	5,500	खराब कर्ज	1,000
देय बिल स्वीकार किये	16,000	आरम्भिक बकाया	
		देनदार	78,000
		लेनदार	85,000

आपको सारे देनदारों का खाता तथा सारे लेनदारों का खाता बनाना है।

समाधान (Solution)

Z लि. की लेखा पुस्तकों में

सारे देनदारों का खाता

	₹		₹
बकाया बी/डी	78,000	नकद	5,00,000
विक्रय	5,25,000	बी/आर	20,000
बी/आर अनादरित	2,500	वापसी अन्दर की और	10,500
बैंक (चैक अनादरित)	7,000	खराब कर्ज	1,000
ब्याज	1,200	बकाया सी/डी	87,700
सारे लेनदार अनुमोदित बिल अनादरित	<u>5,500</u>		
	<u>6,19,200</u>		<u>6,19,200</u>

सारे लेनदारों का खाता

	₹		₹
बढ़ा प्राप्त (5,000 + 3,000)	8,000	बकाया बी/डी	85,000
नकद	2,62,000	क्रय	2,80,000
बिल देय	16,000	सारे लेनदारों का खाता अनुमोदित	
वापसी बाहर की	3,700	बी/आर अनादरित	5,500
बिल अनुमोदित	7,900	नकद (अधिक भुगतान की	
बकाया सी/डी	<u>73,500</u>	वापसी)	600
	<u>3,71,100</u>		<u>3,71,100</u>

टिप्पणी (Notes)—

1. वह व्यवहार जो कि नकद विक्रय या नकद क्रय, संग्रहण भुगतान उन बिलों का जो प्राप्य है। देय है तथा बिलों पर बढ़ा और खराब कर्जों की उगाही की सारे देनदारों या सारे लेनदारों के खाते में नहीं लिखा जायेगा।
2. यह माना गया है। अनुमोदित बिल प्राप्य जो अनादरित हुए है। ₹ 5,500 इससे पहले केवल लेनदारों को अनुमोदित किये गये थे।

सारांश

(SUMMARY)

- स्वकीय संतुलन खाताबही प्रणाली खाताबही रखने की एक ऐसी प्रणाली को प्रभावित करती है जिसमें खाताबही को उनके सौदों की प्रकृति के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।
- अशुद्धियों को दूढ़ने में लगने वाले समय तथा कठिनाइयों को घटा कर कम करने क्रम में, कभी-कभी खाताबही की स्वकीय संतुलन या विभागीय संतुलन की प्रणाली को विनियोजित किया जाता है।
- इस प्रणाली में सामान्यतः देनदार खाताबही, लेनदार खाताबही तथा मुख्य खाता बही (जो शेष खातों को सम्मिलित करती है) नाम की तीन खाताबही तैयार की जाती हैं।
- इस दशा में, प्रत्येक सहायक खाताबही में सामान्य खाताबही समायोजन खाता तैयार किया जाता है। सामान्य खाताबही में क्रय खाताबही समायोजन खाता (वास्तव में; कुल लेनदार खाता) तथा विक्रय खाता बही समायोजन खाता (वास्तव में, कुल देनदार खाता) होते हैं। ये खाते नियन्त्रण खातों के रूप में जाने जाते हैं।
- इस प्रणाली में यदि एक अशुद्धि का प्रभाव देनदारों तथा लेनदारों के खातों में उनके योग को प्रभावित किये बिना होता है, तो इस देनदारों या लेनदारों के खातों में स्वयं समायोजन द्वारा संशोधित किया जायेगा। इसलिए, यदि यह देनदारों या लेनदारों के योगों पर प्रभाव डालता है तो अतिरिक्त प्रविष्टि की जायेगी।